स्वाध्यायोऽध्येतव्यः   ॐ श्रीः ॐ   स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १६ | सोलन, आषाढ़ शु० १० शनिवार सं० २०१४ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

नराः सन्तो दुःखं सुखमथ लभन्ते खलजनाः
कृतघ्नाः सम्मानं सततमवमानं कृतकृतः ।
खलोल्लासो यस्यां भवति परिपुष्टः प्रतिपलं
तवैषाऽनिर्वाच्या परमशिव लीला विलसति ॥१॥
स्वरूपेऽशेषे त्वं परमशिखिचित्रे भगवति
प्रकाशं स्वाकाशे विमृशसि सदानन्दसदने ।
शिवे नित्ये सत्ये तव खलु मुहुः श्रीसति पदे
प्रणामाः शोभन्तां महति महतामीदृशि सदा ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

राष्ट्रिय चरित्र संकटमें

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी। वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः ॥ (अ० १।२१।१)

आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ् विशां पतिरेकराट् त्वं विराज।
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह ॥ (अ० ३।४।१)

त्वां विशां वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्चदेवीः।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि शुभस्व तन्नो न उग्रो विभजा वसूनि ॥ (अ० ३।४।२)

नेता और शासकमें क्या गुण होने चाहिएँ, इसका उपर्युक्त मंत्रोंमें विशदरूपसे वर्णन किया गया है। वे गुण, आवश्यक गुण, क्या हैं ?

१. नेता मंगलकारी, संयमी, निर्भय और शत्रुनाशक हो।

२. जनता उसका नेतृत्व प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करे।

३. जन प्रिय हो, और ऐसी जगह रहे, जहां जनता सरलताके साथ उसके पास पहुंच सके।

४. नेता ऐसा कोई काम न करे जिससे जनताको क्लेश और कष्ट पहुँचे, और—

५. राष्ट्रके शिरोभागमें बैठकर धनका सर्वत्र उत्तम विभाग करे, जिससे धनकी विषम स्थिति उत्पन्न न हो जिससे जनताको दुःख पहुँचे।

इस कसौटी पर यदि आजके शासकों और नेताओंको परखा जाय, तो हम किस परिणाम पर पहुँचते हैं ?

सरल जीवन और उच्च विचार, इस देशका आदर्श बताया जाता है। इसकी पिछले चालीस वर्षोंसे बहुत दुहाई दी जा रही है। किन्तु उसका कुछ परिणाम भी निकला, कुछ फल भी निकला ?

उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णनने बम्बईमें भाषण देते हुए कहा कि—'भारतराष्ट्र एक महान् संकटमेंसे गुजर रहा है।' वह महासंकट और महद् विपद् क्या है ? इसका उत्तर उपराष्ट्रपतिने दिया है—चरित्र-संकट। चरित्र-संकटको स्पष्ट करते हुए आपने कहा 'आज हमारी कथनी और करनीमें अन्तर है, इनमें एका नहीं है।' यह चरित्र-संकट यदि दूर न हुआ तो हमारे राष्ट्रका भविष्य कभी भी उज्ज्वल न होगा। विश्वासोंके प्रति श्रद्धा और निष्ठाका आज अभाव है। यही कारण है कि आदर्शोंकी दुहाई दी जाती है, किन्तु जीवनमें एवं कार्यमें वे कहीं भी दिखाई नहीं देते। दरिद्रनारायणके सेवक होनेका दावा करने वाले लक्षाधीश बने बैठे हैं।

इस देशके मंत्रियोंके विषयमें जनतामें चाहे कितना ही भयंकर प्रवाद क्यों न हो, किन्तु वे मंत्री पद पर बने रहेंगे, और यदि अयोग्यताके कारण हटाना आवश्यक हुआ तो वे राज्यपाल बना दिए जायेंगे; राज्योंके मुख्यमंत्री बना दिए जावेंगे। रंगे हाथ पकड़े जाने पर भी उन पर कभी न्यायालयोंमें अभियोग नहीं चलाया जाता। जब मंत्रियोंकी यह स्थिति है, तब उनके नीचेके अधिकारियोंका क्या कहना। उनके लिए तो स्थिति है—"सैयां भये कोतवाल" फिर ऐसे लोगोंका 'पद्मश्री' पद्मभूषण आदि उपाधियों द्वारा सम्मान भी किया जाता है। युद्ध-कालमें जिन लोगोंकी मिलोंको चोरबाजारीके कारण सरकारी नियंत्रणमें लिया गया था, जो सदा श्रमिकोंका शोषण करते रहे हैं, वे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किए जाते हैं। आर्थिक मंदीके दिनोंमें जिन्होंने देशका सोना गांव-गांव अपने एजेंट भेजकर संचय कर विदेश भेज दिया, आज वे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किए जा रहे हैं, जबकि देशमें समाजवादी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने का लक्ष्य उद्घोषित किया जा चुका है। ऐसे शिक्षकोंका राष्ट्रपति द्वारा सम्मान किया जाता है जो रेलवे द्वारा छात्रों को दी गई रियायतमें अपने लड़केकी बरात ले जाना अनुचित नहीं मानते। भाकड़ा नांगलका इंजीनियर तो डल्कोचमें बन्दी बनाया गया, किन्तु इससे पहले तो वह

भी राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जा चुका था । भारतके गृहमंत्रालयको इसका पहले पता न हो, क्या यह माना जा सकता है ?

बम्बईके बाजारोंमें यह बात प्रसिद्ध है कि 'चर्च गेट' (बम्बईमें इस नामसे एक नया स्टेशन बनाया गया है) का 'टेण्डर' तक नहीं मांगा गया और ७६ लाख रु० का ठेका केन्द्रीय मंत्रिमण्डलके एक मंत्रीके पुत्रको दे दिया गया । यह भी वहां प्रवाद फैला हुआ है कि केन्द्रीय मंत्रि-मण्डलके एक अन्य मंत्रीके पुत्रको १ करोड़ २० लाख रु० का माल आयात करनेका लाइसेंस दिया गया है, और इसमें वह ८० लाख रु० बना लेगा । जब यह स्थिति है— "अन्धा बांटे रेवड़ी बार-बार अपनेको ही दे" तो क्या शासन और नेता जन-प्रिय और लोक-प्रिय हो सकते हैं ?

उपराष्ट्रपतिने ठीक कहा है कि हम 'पंचशील' और अहिंसाका मंत्र तो जपते हैं, अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमें इनको लागू करने पर भी जोर देते हैं, किन्तु क्या इनको हमने अपने वैयक्तिक और सामाजिक जीवनमें भी स्थान दिया है ? जो लोग देशका शासन गोलियों और दण्डेके सहारे करें, वे यदि अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमें अहिंसा नीतिको अपनानेके लिए आग्रह करें, तो क्या उसका कोई प्रभाव पड़ेगा ?

रवीन्द्रके एक गीतको भारतका राष्ट्रगीत बनाया गया है । यह गीत वही है, जो कविने सम्राट् पंचम जार्जके कलकत्ता आगमन पर उनके स्वागतमें पढ़ा था । इस कवि के ही एक गीतके निम्न पद हैं--

"प्रथम प्रभात तव उदित गगने,
प्रथम साम रव तव तपोवने ।
प्रथम प्रचारित तव वन-भवने,
ज्ञान धर्म कत काव्य वाहिनी ।

कविकी जन्म शताब्दी धूम-धामसे मनानेकी तैयारी हो रही है । किन्तु इसके साथ ही देशके विभिन्न भागोंमें 'सौध, 'निलयम' भवन और प्रासाद खड़े किए जा रहे हैं । मंत्रियों के बंगलोंके साथ दो-दो एकड़ भूमि खाली पड़ी है । दूसरी ओर उसी नगरमें छोटी छोटी कोठरियोंमें पांच छः जनोंका परिवार रह रहा है । इन दोनोंके मध्य क्या कभी कोई मेल हो सकता है ? छोटी छोटी अन्धकूपके समानकी कोठरियोंमें रहने वाले क्या कभी बंगलों और कोठियोंमें रहने वालोंके पास पहुंचनेका साहस भी कर सकते हैं ? प्रधानमंत्रीके लिए एक छोटा भवन बनाया जा रहा है, इस छोटे भवन पर व्यय होगा एक लाख रुपया ! यह सरल जीवनका स्वांग बनाना नहीं है क्या ?

केन्द्रीय मंत्रिमंडलके मंत्रियोंने अपने वेतनमें १० प्रति-शत कमी करने की घोषणा की है । उनके देखा-देखी राज्योंके मंत्रियोंने भी इस प्रकारकी घोषणा की है । किन्तु मंत्रियों उपमंत्रियोंकी संख्या और उनके भत्तोंमें कोई कमी नहीं की गई है । केन्द्रीय मंत्रिमंडलमें इस समय ४० मंत्री हैं । चार पांच उपमंत्री कम कर दिए जांय, तब भी वर्षमें एक लाख रु० की बचत होगी और वेतनमें दस प्रतिशत कमी करनेसे भी इतनी ही बचत होगी । किन्तु पहिले वर्ष यह भी न होगी, क्योंकि प्रधानमंत्रीके लिए नया भवन बनाया जा रहा है । उस पर एक लाख रु० व्यय होगा । फिर मितव्ययिता कहां हुई ?

प्रश्न यह है, शासकों और मंत्रियोंका उच्चतम वेतन क्या हो ? इस देशमें प्रति व्यक्ति औसत मासिक आय २४ रु० भी नहीं है । इस अवस्थामें उच्चतम वेतन और निम्न वेतनकी मर्यादा क्या होनी चाहिए ? और इन दोनोंके बीचका अनुपात क्या होना चाहिए ? यह है एक सिद्धान्तका प्रश्न । किन्तु पिछले दस वर्षोंमें इस ओर ध्यान नहीं दिया गया । चीनमें निम्नतम वेतन ७५ रु० है, और उच्चतम वेतन है ७५० रु० । इस दृष्टिसे भारतमें वेतनका स्तर इससे अधिक ऊंचा न होना चाहिए । किन्तु जब कांग्रेस महा समितिकी बैठकमें अधिकतम वेतन १००० रु० रखने का प्रस्ताव किया गया तो इसका विरोध प्रधानमंत्री श्री नेहरूने ही किया, क्योंकि वे यह पसंद नहीं करते कि मंत्रियोंकी सन्तान साधारणजनोंकी सन्तानके साथ एक बेंच पर बैठकर पढ़े । इस पर भी कहा जाता है कि राज्य का लक्ष्य देशमें वर्ग-हीन समाजकी स्थापना करना है । क्या इसी रीतिसे शासकों और मंत्रियोंका एक नया अभि-जात वर्ग उत्पन्न करके ही वर्गहीन समाजकी स्थापना की जायगी ? जब शासकों और उच्च अधिकारियोंकी कथनी और करनीमें इतना अन्तर है तब यह कैसे आशा की जा सकती है कि देश चरित्र-संकटसे सफलतापूर्वक पार हो सकेगा ?

पंजाबी क्षेत्रमें हिन्दीका भविष्य

पुलिसकी लाठियों, गिरफ्तारियों, कांग्रेस नेताओं द्वारा निन्दा करने और पंजाबसरकार द्वारा दमननीति ग्रहण करने पर भी हिन्दी रक्षा-समितिका आन्दोलन प्रतिदिन समय बीतनेके साथ प्रबल और प्रभावशाली होता जा रहा है। मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरोंने भारतसे विदेश-यात्राको प्रस्थान करनेसे पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा स्वामी आत्मानन्दको लिखे पत्रको दस दिन बाद प्रकाशित करना उचित समझा है। किन्तु यदि इससे मुख्यमंत्रीको आशा है कि हिन्दीके पक्षमें उठाया आन्दोलन शान्त हो जायगा तो वे भारी भ्रममें हैं।

मुख्य प्रश्नकी उपेक्षा की गई है। यह ठीक है कि पंजाबी क्षेत्रकी बोली पंजाबी है। किन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि पंजाबी एक भाषा नहीं है। ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, बघेलखण्डी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली आदिको देशमें जो स्थान प्राप्त है, शिक्षा जगत्‌में इनको जो स्थान दिया गया है वही स्थान पंजाबीको मिलना चाहिए। किन्तु कांग्रेस नेताओंकी शक्तिके सामने झुक जानेकी वृत्तिने पंजाबीको इसका अपवाद बना दिया है, जिसकी गुरुनानक आदि सिक्ख गुरुओंने भी कल्पना नहीं की थी। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि सिक्खोंकी धार्मिक भाषा पंजाबी नहीं है, हिन्दी है। आदि ग्रंथमें भारतीय संतोंके हिन्दी पदोंका ही संग्रह है। 'जपजी'का सिक्ख प्रतिदिन पाठ करते हैं, वह हिन्दी में है। अतः यह कहना कि पंजाबी सिक्खोंकी धर्म-भाषा है, ऐतिहासिक दृष्टिसे सत्य नहीं है।

परन्तु कहा जा सकता है कि सर्वत्र जीवनका व्यवहार तर्क, युक्तिके अनुसार नहीं चलता। मनोभावोंके द्वारा और भावनावश अधिकांश व्यवहार किए जाते हैं। अल्पसे अल्प समुदाय व वर्गकी भावनाका कोई राज्य अनादर करनेका साहस नहीं कर सकता। यदि इसी कारण सिक्खोंकी बात मानी गई है, तो इसी आधार पर उस वर्गकी भावनाका भी आदर करना चाहिए जो पंजाबीको एक भाषा नहीं मानते, अपितु एक बोली मानते हैं। यदि सिक्खोंकी भावनाका आदर करनेमें यह औचित्य है कि वे एक अल्प-संख्यक वर्ग हैं, तो यह विस्मरण न करना चाहिए कि पंजाबी क्षेत्रमें हिन्दू अल्पसंख्यक हैं और अल्पसंख्यक वर्गकी भावनाका आदर होना चाहिए। किन्तु क्षेत्रीय सूत्रमें इसको स्वीकार नहीं किया गया। सिक्खोंने शक्तिका प्रदर्शन किया, पटियालामें प्रधानमंत्री श्री नेहरूका अपमान तक करनेका साहस किया, अमृतसरमें कांग्रेसके अधिवेशनको फीका कर दिया, अतः कांग्रेसने उनके आगे घुटने टेक दिए और उस समय कांग्रेस नेताओंने एक क्षणके लिए भी यह नहीं सोचा कि वे स्वतः साम्प्रदायिकताके आगे आत्मसमर्पण कर रहे हैं। आज जब पंजाबी क्षेत्रका एक वर्ग शेष हिन्दीभाषी क्षेत्रके समान अपनी बोलीको छोड़कर हिंदी द्वारा शिक्षा देनेकी मांग करता है, तो उसके आंदोलनको साम्प्रदायिक कहा जाता है, उसको देशकी एकताको छिन्न-भिन्न करनेवाला कहा जाता है। क्या यह सत्यकी विडम्बना नहीं है?

बहुजन समाज द्वारा स्वीकृत भाषाको लिखने-पढ़नेकी भाषा स्वीकार करना राष्ट्रियता है, या अल्पसंख्यकोंको प्रसन्न करनेके लिए उनके दुराग्रहको मानना राष्ट्रियता है? क्षेत्रीय-सूत्रका आधार भाषा है। किन्तु हिन्दी और पंजाबीको एक-समान स्थान देना—पंजाबमें भी—उचित नहीं कहा जा सकता। यदि सिक्ख गुरुमुखीमें लिखी पंजाबीसे ही चिपटे रहना चाहते हैं तो यह उनको मुबारक हो। उनको इसकी पूरी सुविधा दी जाय। किंतु उनकी इच्छाको उन पर क्यों लादा जाय जो उसको अपनी साहित्यिक और काम-काजकी भाषा नहीं बनाना चाहते। यह राष्ट्रियताकी हत्या कर साम्प्रदायिकताको परिपुष्ट करना नहीं तो और क्या है?

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रीने कहा है कि क्षेत्रीय सूत्र या फार्मूलेमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। किन्तु जब आधार ही ठीक नहीं है, तब यह कैसे आशा की जाय कि जो अपनेको न्याय-पक्षमें मानते हैं, वे शान्त हो जायेंगे? मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि हिन्दीका पठन-पाठन किस कक्षासे प्रारम्भ किया जाय? अपितु यह है कि सिक्खोंके समान क्या हिन्दुओंको, जो पंजाबीको एक बोली मानते हैं, पहली कक्षासे हिन्दी पढ़नेकी अनुमति दी जायगी या नहीं? इस मूल प्रश्नकी उपेक्षा करके छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देना वास्तविक समस्यासे अपनेको अंधेरेमें रखना है। प्रधानमंत्री और उनके अनुयायियोंने पहले यह मान लिया

है कि पंजाबी एक भाषा है और इसको तामिल, गुजराती, मराठी आदिके समान पंजाबी क्षेत्रमें स्थान देना चाहिए। किन्तु इस बातको विस्मरण कर दिया गया कि मराठी और कौंकणीमें जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध हिन्दी और पंजाबीमें है। यदि कौंकणीको मराठीके समान एक भाषा नहीं माना गया और कौंकणी क्षेत्र बनानेकी आवश्यकता अनुभव नहीं की गई तो पंजाबी क्षेत्र मानने और बनानेकी आवश्यकता नहीं थी। किंतु कांग्रेस नेताओंने साम्प्रदायिकताके आगे घुटने टेक दिए और सिक्खोंका दुराग्रह मान लिया।

प्रश्न यह है कि यदि एक वर्ग अपनी बोलीके विकासमें उसको भाषाकी स्थिति पर पहुँचानेमें योग देना पसन्द नहीं करता, तो क्या उस वर्गको उस भाषाके विकासमें योग देने के लिए बाध्य करना लोकतंत्र कहा जायगा ? यह ठीक है कि स्विट्जरलैण्डमें तीन भाषायें बाधित रूपसे सबको पढ़ाई जाती हैं, क्योंकि उस देशका निर्माण और उद्भव धर्मान्धतासे सताये लोगों द्वारा हुआ और उन्होंने अपना हित इसमें समझा कि राज-काज तीनों भाषाओंमें किया जाय। फलतः उन्होंने अपने बच्चोंको भी तीनों भाषाओंकी बाधित शिक्षा देना उचित समझा। किन्तु वे तीनों विकसित भाषायें थीं, अन्यत्र बोली जातीं थीं और वे आदृत थीं। क्या पंजाबीके विषयमें भी यह बात कही जा सकती है ? किसी भाषाके पढ़नेका कारण उपयोगिता है। यदि कोई विशिष्ट वर्ग पंजाबीका पढ़ना उपयोगी नहीं मानता, तो क्या उसको इसके लिए बाध्य करना उचित कहा जा सकता है ?

जो लोग पंजाबीको छोड़कर हिन्दी पढ़नेका आग्रह कर रहे हैं वे राष्ट्रियताके पथ पर अग्रसर हो रहे हैं और अपनी मातृ बोलीका त्याग कर राष्ट्रियताके लिए बलिदान कर रहे हैं। देशका हित यह अपेक्षा करता है कि अधिकसे अधिक लोग हिन्दीके माध्यमसे सोचें समझें और कार्य करें। एक राष्ट्रियताके लिए यह आवश्यक है। देशमें आत्मिक एकात्मता स्थापित करनेकी दृष्टिसे यह उचित है। इस कारण हिन्दी रक्षा-समितिके आन्दोलनको अराष्ट्रिय और साम्प्रदायिक कहना सत्यका अपलाप करना है।

पंजाबी क्षेत्रमें जिलेके स्तर तक हिन्दीको कोई स्थान प्राप्त नहीं है। वहांसे वह पूर्णतः बहिष्कृत है। राजकाज और न्यायालयोंका सारा कार्य पंजाबीमें होगा। इस अवस्था में यह कहना कि हिन्दीका जीवन पंजाबी क्षेत्रमें संकट और भयमें नहीं है, क्या ठीक कहा जा सकता है ?

नेतृत्वमें नवीन रक्तको प्रोत्साहन

आज स्वतन्त्र भारतकी सरकारका संचालन और विदेशोंमें इस राष्ट्रकी ख्याति एवं प्रतिष्ठा जिस एक नर-नाहरके बल बूते पर है उस वीर-जवाहरको कौन नहीं जानता। सच पूछा जाय तो प्रबुद्ध भारत और नेहरूजी को एक साथ आंका जाय तो दोनों परस्पर पर्यायवाची प्रतीत होंगे। नेहरूजी और उनकी इस प्रौढ़मण्डलीको यद्यपि सभी कल्पान्त जीविनी देखना चाहते हैं, तथापि काल धर्मानुसार इस मण्डलीको भी अपनी उत्तराधिकारिणी नवीन मण्डलीका निर्माण करने तक 'नेतृत्व ऋणग्रस्त' रहना ही पड़ेगा, इस दृष्टिसे यह शङ्का और विचार विज्ञ जनोंमें होना स्वाभाविक है कि इस मण्डलीका उत्तराधिकार किन्हें प्राप्त होगा। यद्यपि इस विषयमें विभिन्न लोगोंकी विभिन्न धारणाएँ या अटकलें चल ही रही हैं, तथापि इस नेतृत्वके प्रवाहमें नवीन रक्तको प्रोत्साहन मिलनेकी अपेक्षा और आवश्यकता तो निर्विवाद है ही।

पिछले दिनों स्वयं श्रीनेहरूजी अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं और उनसे पता लगा है कि वे भी इस समस्या को सुलझानेकी ग्रंथि अभी नहीं सुलझा सके हैं। फिर भी यह विषय उच्चस्तरीय विचारका तो है ही। इस प्रसङ्गमें एक बात और भी ध्यान योग्य है कि नेहरूजीके नेतृत्वका बल सरकार और कांग्रेस दोनोंके लिये समान उपयोगी है। जबसे नेहरूजीने कांग्रेससे थोड़ा हाथ खींचा है उसमें अनुशासन हीनता, गुटबाजी और हीन मनोवृत्तियोंका विशेष प्रसार हुआ है—ऐसी स्थितिमें नेहरूजी सरकारी पक्ष अथवा कांग्रेस किस ओर अधिक ध्यान दें यह भी विचारास्पद है। जहां तक सरकारका प्रश्न है, रीति नीति और मार्ग निर्देशनके अतिरिक्त उसके संचालनका एक विशेष तंत्र होता है जो पूर्व निर्धारित प्रणालीमें थोड़े हेरफेरके साथ चलता ही रहता है, किन्तु किसी संस्थाके संचालनमें विशेष प्रकारके सिद्धान्त और वृत्तिका पालन भी करना पड़ता है अतः विचार दृष्टिसे दोनोंमें साम्य होते हुए भी संस्थाका कार्य विशिष्ट महत्वका सिद्ध होता है।

कुछ दिनों पूर्व जैसा कि उत्तरप्रदेशके किसी कांग्रेसीने

सुझाव दिया था—यद्यपि वह अस्वीकृत हो चुका है, किन्तु विचार योग्य तो अवश्य है ही कि इस समय संस्थामें व्याप्त दलबन्दी, अनुशासन हीनता और उच्छृंखलताको रोकनेके लिये किसी प्रभावशाली व्यक्तित्वके हाथों उसका संचालन होना आवश्यक है और वह क्षमता अकेले श्री नेहरूजी में ही है। ऐसी स्थितिमें यदि कांग्रेसका नेतृत्व नेहरूजी ही पुनः संभालें तो यह संस्थाके हितकी दृष्टिसे उपयोगी और समुचित रहेगा। इस दृष्टिसे जहां संस्थामें दलबन्दी समाप्त होगी वहां शासनमें नवीन रक्तका प्रवेश कांग्रेसाध्यक्षके निर्देशनमें विशेष उपयोगी सिद्ध होगा। इससे प्रशासनिक प्रशिक्षण भी नवीन जनोंको प्राप्त होगा और इस प्रकार एक ऐसी उत्तराधिकारी मण्डलीका भी निर्माण होगा जो शासन और व्यवस्थाको निर्धारित नियमानुसार चला सकेगी। यद्यपि इस सुझावके अस्वीकार होनेमें पर्याप्त कारण सम्भवतः रहे ही होंगे फिर भी यह कहा जा सकता है कि इस प्रस्तावमें कुछ तथ्योंका सन्निवेश अवश्य है। आजकी परिस्थितियोंमें शासनके दोषपूर्ण होनेके अन्यान्य कारणोंमें जिस संस्थाकी प्रतिनिधि सरकार है उसकी ढिल-मुल नीति अथवा उसके अध्यक्ष द्वारा सरकारको प्रभावित न कर सकने की क्षमता भी एक विशिष्ट कारण कहा जा सकता है। जहां कांग्रेसाध्यक्ष और सरकारके संचालक एक हों वहां 'अधिनायकवाद' की शंका बनी रहती है और जहां संस्थाध्यक्ष सरकारके संचालकसे अल्प प्रभावी हो वहां संस्थाके विशृंखल होनेका भय बना रहता है—इसलिये यदि संस्थाध्यक्ष शासकको नियन्त्रित कर सकनेकी क्षमता रख सकता हो तो सरकार और संस्था दोनोंके हितकी दृष्टिसे वह अच्छा माना जा सकता है।

वर्तमानमें कांग्रेसमें केवल नेहरूजीको छोड़कर ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं है जो इतर लोगोंकी वृत्तियोंका नियन्त्रण कर सके—ऐसी स्थितिमें यदि कांग्रेस शुद्धिका कार्य यही महाप्राण महामानव संभालें तो राष्ट्र, सरकार और संस्थाका भला होगा ऐसा सुनिश्चित कहा जा सकता है। हम इस प्रस्ताव पर पुनः विज्ञ विवेकी नेतृवर्गका ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं जिससे हमारे नवोदित राष्ट्रकी उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि हो, आगे तो—

'यद्भाव्यं तद्भविष्यति' ॥

संस्कृतशिक्षा और संस्कृतायोग

केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त संस्कृत कमीशन द्वारा (पाठकोंकी सेवामें यह अंक प्रस्तुत होते समय तक) भारतवर्ष का पूरा भ्रमण सम्पन्न हो चुका होगा और सम्भवतः आयोग की रिपोर्ट भी कुछ अंशमें तैयार हो चुकेगी। किन्तु जैसा कि समाचार-पत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि अन्तिम रूपमें आयोगका प्रतिवेदन प्रस्तुत होनेमें एक दो मासका विलम्ब लग सकता है। हम इस अवसर पर आयोगसे अनुरोध करना चाहेंगे कि संस्कृत शिक्षाकी वर्तमान जो स्थिति है उसका उन्होंने प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त कर ही लिया है; अतः इसकी उन्नतिके उपाय आयोगने जो सोचे होंगे वे निश्चय ही सार्वजनिक दृष्टिसे उपयुक्त ही होंगे; फिर भी आयोगको जो अवसर मिला है वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। यदि इस समय आयोगके सदस्योंने थोड़ा भी अपने विचारोंमें शैथिल्य रखा तो इसका व्यापक प्रभाव आगे भी पड़ सकता है। इस समय संस्कृत भाषाके संरक्षणकी जितनी आवश्यकता है वह सर्वविदित है। संस्कृतज्ञोंकी जीविका, संस्कृत पाठशालाओंमें सुधार, तथा संस्कृत छात्रोंकी संख्या वृद्धि आदि ऐसे प्रश्न हैं जिन पर आयोगको निर्भयतापूर्वक बिना किसी व्यक्ति-विशेषसे प्रभावित हुए अपनी सुस्पष्ट राय देनी चाहिए। साथ ही उस रायमें ऐसे व्यावहारिक और तात्कालिक उपयोगी सुझावोंका भी निर्देश होना चाहिए जिससे तदनुकूल व्यवस्था भी हो सके और यह रिपोर्ट केवल अन्य कमीशनोंकी 'कागजी रिपोर्ट' की भांति न रह सके।

इसी प्रसंगमें हम एक और भी महत्वपूर्ण एवं आवश्यक उपयोगी विषयकी ओर आयोगका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जिसके बिना हम समझते हैं संस्कृतभाषा और राष्ट्रकी श्रीवृद्धिमें न्यूनता रह सकती है—वह विषय है संस्कृत शिक्षाके सर्वविध शिक्षण संरक्षणके साथ आयुर्वेद और ज्यौतिषका भी संरक्षण। यद्यपि आयुर्वेदका संरक्षण तो कुछ प्रान्तोंमें वहांकी सरकारें पृथक् आयुर्वेद विभाग स्थापन द्वारा कुछ अंशोंमें कर भी रही हैं। परन्तु यह सब बहुत स्वल्प है और जब तक केन्द्रीय सरकार द्वारा पृथक् आयुर्वेद मंत्रालय स्थापित नहीं हो जाता, तब तक आयुर्वेद की प्राचीन पद्धतिका संरक्षण भी अपूर्ण ही है; तथापि ज्यौतिषके संरक्षणके लिये न तो कहीं विभाग ही स्थापित है

और न कहीं राज्याश्रय ही मिल रहा है। प्रत्युत जिन प्राचीन राज्योंमें 'राज ज्यौतिषियों' के पद और उनकी जागीरें थीं वे भी भूमि-अधिग्रहणके कारण अब आश्रयहीन हो गये हैं। ऐसी स्थितिमें ज्यौतिषका संरक्षण इस युगमें सर्वथा उपेक्षित हो गया है और राष्ट्रिय सरकार द्वारा इस दिशामें कुछ प्रयत्न न किया जाना खेद और परितापजनक है।

इस विषयमें यह भी ध्यान योग्य है कि ज्यौतिषोपयोगी प्राचीन अनेक वेधशालाएं हैं, जिनका रूप काल-क्रमसे संरक्षणके अभावमें अब उद्ध्वस्त होता जा रहा है यदि इस समय इनकी ओर ध्यान नहीं दिया गया तो यह महत्त्वपूर्ण वस्तु असुरक्षित रूपमें विनष्ट हो सकती है। स्वर्गस्थ श्री पण्डित केदारनाथजी महाराजके तत्त्वावधानमें दिल्लीकी वेधशालाका संशोधन कार्य कुछ हुआ था, किन्तु सरकारकी शिथिलतासे वह अपूर्ण रह गया। इस विषयमें हम पहले भी कह चुके हैं। इसी प्रकार भारत सरकारके वायुवृष्टि विज्ञान विभाग (मैट्रोलाजीकल डिपार्टमेंट) द्वारा जहां लाखों रुपयेके व्यय पर केवल दैनिक ऋतु सूचनाएं प्राप्त होती हैं वहां ज्योतिरशास्त्रानुसंधान द्वारा थोड़े परिश्रम और व्ययसे छः मास पूर्व तकका वृष्टिवायु-परिज्ञान ठीक रूपमें हो सकता है। इस प्रकार इस सर्वोपयोगी विज्ञानका संरक्षण कितना आवश्यक है यह कथन पिष्टपेषण मात्र होगा। आयोगको अपनी रिपोर्टमें इस विज्ञानके प्रचार प्रसार और संरक्षणके लिये भी अपनी राय दृढ़ शब्दोंमें अवश्य देनी चाहिए। यदि उचित प्रतीत हो तो आयोग इस विषयमें हमसे योजना भी प्राप्त कर सकता है। आशा है, आयोग सही शब्दोंमें सफलता प्राप्त कर सकेगा, हम तो यही कह सकते हैं—

"त्वमस्मिन् कार्यनियोगे प्रमाणं हरियूथप !!"

आवश्यक निवेदन

'श्रीस्वाध्याय' के १६ वें वर्षका यह अन्तिम (चौथा ग्रीष्माङ्क) पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत है। पहले भी कई बार निवेदन किया जा चुका है कि पत्रकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं बनी कि कार्यालयमें स्थायी रूपसे उचित वेतन पर एक सहायक कार्य-कर्ता रखा जा सके। इन १६ वर्षोंमें यह पत्र निरन्तर प्रकाशित होता रहा इसका अधिकांश श्रेय पत्रके प्रमुख संरक्षक धर्ममार्तण्ड श्री १०८ मान् बघाटनरेशको ही है, आपकी सहायता नियमित रूपेण प्राप्त होती रही है। दूसरे संरक्षक और ६ सहायकोंकी सहायता अभी तक अप्राप्य है। श्रीस्वाध्यायसदन संस्था के वार्षिक अधिवेशनोंमें भी इस समस्या पर विचार होता रहा पर समाधान कुछ नहीं निकला। दो वर्ष पूर्व सं० २०१२ श्रावण शुक्ला १५ को जब दिल्लीमें अधिवेशन हुआ था उस समय भी सदस्योंके सम्मुख मैंने पत्रकी स्थिति रक्खी थी, तब संस्थाने मुझे यह आज्ञा दी थी कि—'एक वर्ष तक पत्रको इसी प्रकार और चलाओ बादमें उचित व्यवस्था की जावेगी।" एक वर्ष बाद गत वर्ष अधिवेशन नहीं हुआ और दूसरा वर्ष भी समाप्त हो गया है। गत वसन्ताङ्क मुद्रणके दूसरे दिन ही मुझे संस्थाके अध्यक्षजी (श्री पं० गोविन्द जी मिश्र) दिल्लीमें मिले थे, उनको मैंने एक पत्रमें सब स्थिति लिख दी थी कि—"अब कार्यकर्त्ताके अभाव में मैं 'श्रीस्वाध्याय' को पूर्ववत् चलानेमें असमर्थ हूं।" इस पर उन्होंने कहा कि "शीघ्र ही अधिवेशन बुलाकर इसका निर्णय करेंगे।" परन्तु अभी तक उनकी ओरसे अधिवेशन के स्थान और तिथिका कोई निर्णय नहीं हुआ। एक कार्ड दिनाङ्क १६-६-५७ का लिखा मिला जिसमें अध्यक्षजीने लिखा है कि—"आगामी स्वाध्यायके ग्रीष्माङ्कमें मुझे अपना एक आवश्यक लेख देना है अतः वह बिना मेरे उस लेखके प्रकाशित किये अङ्क प्रकाशित न किया जाय।" मैंने तत्काल श्री अध्यक्षजीको लिख दिया था कि आप लेख शीघ्र भेज दीजिए अवश्य प्रकाशित होगा, परन्तु आज ३० जून तक उनका लेख नहीं मिला। इस अङ्कके लिए एक फार्म पृष्ठ ९ से १६ तक छपा हुआ भी उन्होंने रुकवा दिया है। अब छपाईमें अधिक विलम्ब होनेसे ग्राहक असन्तुष्ट होंगे अतः यह फार्म छाप रहा हूं। अध्यक्षजीका लेख आने पर वह अन्तिम फार्ममें प्रकाशित किया जावेगा। उनके लेखसे ही 'श्रीस्वाध्याय' की भावी गतिविधिका पता चलेगा।

निवेदकः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादक—'श्रीस्वाध्याय'

सोलन (हिमाचल प्रदेश)

वेधशालाओंके विकासकी आवश्यकता

[श्री पं० सूर्यनारायण व्यास ज्यौतिषाचार्य]

(गतांकसे आगे)

इस देशकी वेधशालाएँ हमारे गुलाम मनोवृत्ति वाले लोगोंकी तरह ही केवल विदेशी विषयोंकी एजेंसी मात्र हो गई हैं। उनसे हमारे शास्त्रोंको इस प्रकार बचाया जाता है, जिस प्रकार दक्षिणके ब्राह्मण किसी समय अछूतोंसे बचा करते थे! इस मनोवृत्तिके फलस्वरूप हमारे महत्त्वपूर्ण शास्त्र और उनकी उपयोगिता उपेक्षित होती जा रही है। उनके अध्ययन, अनुसंधानका कोई अवसर उपलब्ध नहीं हो पाया। नवीनताकी श्रेष्ठ उपलब्धियोंको पुरातन-जनोंसे विलग किया जा रहा है। और वे शास्त्र निरुपयोगी किये जा रहे हैं जिन्होंने इस विज्ञानको जन्म एवं प्रेरणा प्रदान की है। इस प्रवृत्तिसे जहां एक-सूत्रता लानेकी आवश्यकता थी, प्रगति-साध्य करनेकी सुविधा प्राप्त करनी थी—वहां वे 'हेय' समझे जाते हैं। जबकि ग्रहों-तारोंकी जिन गति-विधियों, गणना-क्रमोंको जिस क्रम प्रकारसे निर्धारण किया गया, सिद्धान्त-स्वरूपमें रखा, आजका विज्ञान उनमें कोई अन्तर न ला सका है। जिस युगमें बांसकी नलियोंसे कीमचियों (खपचियों) से आकाशके अन्तरको नाप डाला गया था। और सूक्ष्मता सुलभ की गई थी, उस विधानके वेत्ताओंको यदि आजके साधन सुलभ किये जाते, और सुविधा देकर उनका सहयोग साध्य किया जाता तो दो प्रवृत्तियोंमें ही एक सूत्रता न होती, अपितु अभिनवताके साथ उन शास्त्रोंके जानकारोंको और उनकी मौलिकताको बहुत महत्वपूर्ण प्रगति करनेका सुअवसर उपलब्ध होता। वेधशालाएँ श्रम, व्यय-साध्य रहीं हैं। केवल बांसकी सलाइयोंसे खगोल भूगोलको इस कलासे बांधकर सरलता के साथ आकाशको इतनी आसानीसे समझ लिया जाता था कि जैसे हथेलीमें रखे हुए एक आंवलेको परख लिया जाता है। वेधशालाके निर्माण कार्य भी प्रत्येक यंत्रोंके निर्माणसे लेकर उनके उचित उपयोगके साथ स-विधान, सु-विस्तार बतलाया गया है। पर नई वेधशालाएँ इस ज्ञानसे अस्पृश्य बनी हुई हैं। घरकी पूंजीको भुलाकर दूसरेकी उधारी पर अपनी साहूकारीकी शान प्रदर्शित कर रही है। चाहिए तो यह कि आजकी ये बनी हुई पुरानी जयपुर, दिल्ली, उज्जैनकी वेधशालाएँ नवीन और पुरातन साधनोंसे समन्वित कर दोनोंके सहयोगसे संचालित हों, और उनमें एकसूत्रता लाई जावे। वे केवल इतिहासके 'मानूमेण्ट' न बनकर रहें, इनमें शास्त्र और नवीन उपकरणोंका समावेश हो, दोनों दृष्टिके विज्ञोंके परामर्शसे इनका संचालन हो, इससे जहां पुराने शास्त्रोंका महत्व और ज्ञान विकसित होगा, वहां शतियोंसे आने वाले परिवर्तनों का भी निराकरण हो सकेगा, भ्रांतियां दूर होंगी, नए पुराने के बीचमें खड़ी भ्रांतिकी दीवार भी दूर होगी। और दोनों के सहयोगसे महत्वपूर्ण कार्य संपादित होगा। यदि केवल नवीन ज्ञान, और नवीन साधनों पर ही यहां काम होगा तो वह एकांगी बना रहेगा। और हम अपनी महत्वपूर्ण धरोहरको अपने ही हाथों उपेक्षित कर शास्त्र ज्ञानसे भी वंचित होते रहेंगे। हम नए ज्ञान और साधनोंकी भी उपेक्षा नहीं करना चाहते, उनकी प्रगति और साधनोंका बल हमारे शास्त्र और प्रगतिमें सहायक ही होगा। द्रुत-गतिसे हम नए रहस्योंके अनुसंधानमें सन्नद्ध हो सकेंगे। भारतका यह ज्ञान भी बहुत पुराना होकर शुद्ध वैज्ञानिक सिद्धान्तके रूपमें हमें प्राप्त है। इसकी साक्षी ये जयपुरनरेश द्वारा निर्मित वेधशालाएँ हमारे समक्ष हैं। मानों हमने उन्हें प्रदर्शन, या उध्वस्त स्मारक बना रखा है। दिल्लीकी वेधशाला तो मनोरंजनका विषय बन—'जंतर-मंतर' हो गई है। अवश्य ही उज्जैनकी वेधशाला सजग है। वहां काम हो रहा है, उसकी उपयोगिता भी है। पर इन सभी देश की वेधशालाओंको सक्रिय बनाकर इनका उपयोग लेना आवश्यक है। किंतु इनका निर्माण जिस शास्त्र और पद्धति के आधार पर है, उनके सहयोगके बिना यह कैसे संभव हो? शास्त्रपद्धति, और नवीनताके समन्वयके सिवाय इसका सुधार या समन्वय एवं प्रगति असंभव है। इन

वेधशालाओंको कार्यक्षम बनाया जाए और जो कि देशमें थोड़ेसे इस विधि-विधानके मर्मज्ञ हैं उन्हें खोजकर इसके साथ सम्बन्धित किया जावे। उनके मार्गदर्शनमें यह संस्था 'स्मृति-मंदिर' से पुन: सप्राण और सकर्मक बन सकेगी। और उन लोगोंको नए उपकरणोंसे सम्पन्न और परिचित करवाया जाए तो आज भी ये वेधशालाएँ ग्रीन्विचसे कम महत्त्वकी उपयोगी सिद्ध नहीं होंगी। यदि शासन इस ओर ध्यान दे, जानकारोंको अवसर दे, तथा साधन सुविधा उपलब्धकर योग्य जनोंको अन्वेषण प्रयोग-प्रयासका अवसर प्रदान करें तो ये पुरातन-वेधशालाएँ भी नवीन चमत्कारोंको प्रकाशमें लानेमें समर्थ सक्षम हो सकती हैं। क्योंकि ये इस देशके पुरातन ज्ञानके आधार पर अधिष्ठित हैं। उस ज्ञानके दक्षके सिवाय इनका उपयोग नवीनोंसे ही सम्भव नहीं, भारतीय-शासनके वैज्ञानिक संशोधन-विभाग का ध्यान इस तथ्यकी ओर जाना आवश्यक है। एक विज्ञ-समिति द्वारा इन वेधशालाओंकी स्थिति, उनके आधुनिकी-करण, उपयोग आदिका निरीक्षण-परीक्षण करना चाहिए। इसी प्रकार इस विषयका ज्ञान किसी विद्यालय, या विद्यापीठमें नहीं दिया जाता है। इसलिए आधुनिक विश्व-विद्यालयोंमें ऐसी योजनाएँ की जानी चाहिए और पूर्व-प्रतिष्ठित वेधशालाओंमें, शासकीय शालाओंमें काम करने वाले गणितके पंडितोंको इनमें प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करनेके लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। ग्रहोंकी गति-युति आदिके अवलोकनके लिए अनुराग रखने वाले जनोंको वेधशालाओं के प्रति आकर्षित करना चाहिए।

वेधशालाओंके प्रयास, उपलब्धियोंको सर्वसाधारणमें प्रसारित कर इस ओर उनका ध्यान खींचना चाहिए, ताकि इनके कार्योंका, खगोलकी गतिविधियोंका ज्ञान जनसाधारण में भी फैलता रहे और इनकी उपयोगिताका महत्व समझ सकें।

अवश्य ही उत्तरप्रदेश-शासनने काशी-संस्कृत-विश्व-विद्यालयमें इस तरहकी वेधशालाकी योजना की है। उज्जैन की वेधशालामें भी उसके आधुनिकीकरणका प्रयास जारी है। दिल्ली-जयपुरकी वेधशालाओंको भी इसी सूत्रमें आबद्ध कर उनको उपयोगी बनाना आवश्यक है। वे 'स्मारक' की अपेक्षा सजग, सक्रिय बन सकती हैं। उज्जैनकी वेधशाला का महत्व अधिक है, क्योंकि वह भूमध्यरेखा पर अवस्थित है। इसलिए उसे केन्द्रीय महत्व देकर शेष वेधशालाओंको उसके साथ सुसम्बद्ध कर दिया जाना उपयोगी होगा। गणित और वेध (अब्जर्वेशन) की दृष्टिसे उसका जो महत्व है, वह वैज्ञानिकोंसे अज्ञात नहीं है। परन्तु उसकी उपयो-गिता तभी हो सकती है जब ये वेधशालाएं जिस विज्ञानके आधार पर निर्मित हैं उसको प्रमुखता देकर उसके साथ नवीन उपकरणोंकी योजना की जाय। केवल आधुनिकी-करण ही इन्हें उन्नत नहीं बना सकेगा, उसे शास्त्रीय ज्ञान से सम्बन्धित कर उसके विकास, संशोधन और प्रयोगको प्रमुखता देनी होगी। भारतीय ज्योतिर्विज्ञानकी उपेक्षाने इन वेधशालाओंकी प्रगतिको अवरुद्ध बना दिया। यह स्थिति ऐसी हो गई है कि प्राचीन संस्कारोंसे सम्पन्न नारीको उसी पुराने रूपमें पाउडर लिपस्टिक लगाकर नवीन समझ लिया जाए। हम केन्द्रीय शासनसे यह अनुरोध करते हैं कि वह इन पंक्तियों पर विचार गम्भीरतासे करे और इस देशकी पुरातन-महत्वपूर्ण वेधशालाओंको एक सूत्रमें ग्रथित कर उन्हें सक्रिय बना दे। पुरातन एवं नवीनका समन्वय साध कर प्रगति एवं अन्वेषणका अवसर दे, ताकि इनकी उचित उपयोगिता हो। श्रीस्वाध्याय-सम्पादक श्री हरदेव शर्मा और हिमालयके श्री चक्रधर शर्माने जो योजनाएँ वेधशालाओंके विकास एवं सक्रिय बना देनेके लिए प्रस्तुत कीं, उन पर शासनको गम्भीरतासे विचार करना चाहिए। न केवल नवीन ही, प्राचीन विज्ञानके प्रवीणोंको भी परामर्शके लिए प्रसंग देकर इनके सहयोगसे ही वेधशालाओंके विकासका प्रयास किया जाय, ताकि ये महत्वपूर्ण वेधशालाएं केवल 'स्मारक' न रहकर राष्ट्रके वैज्ञानिक जीवनमें महत्वपूर्ण योग प्रदान कर सकें तथा इस देशके पुरातन ज्ञानके संशोधन एवं प्रगतिका अवसर उपलब्ध हो सके। —

आवश्यकता—'श्री विश्वविजयपंचांङ्ग' कार्य में सहयोग देने और जन्मपत्र वर्षफलादि कार्य सम्पन्न करनेके लिए एक अनुभवी विद्वान् सहयोगीकी आवश्यकता है। नवीन गणित फलितमें विशेष अनुभव रखने वालेको प्राथमिकता दी जावेगी। अपना पूर्ण परिचय और कार्य तथा योग्यताका प्रमाण निम्नांकित पते पर भेजें।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी सोलन (हिमाचलप्रदेश)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

अनिष्ट ग्रह योगोंका प्रभाव : आषाढ़ी पूर्णिमाकी वायु-परीक्षा

स्वतन्त्र भारतके ग्यारहवें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

भाद्रपद कृष्ण ८ मंगलवार दिनाङ्क २० अगस्त १९५७ को शनि-मंगलका केन्द्रयोग और दो दिन बाद भाद्रपद कृष्णा ११ गुरुवार दि० २२ अगस्तको कन्याराशिमें गुरु शुक्रका युद्ध है। इसका उल्लेख हमने अपने 'श्रीविश्वविजय पंचांग' और श्रीस्वाध्यायके गतांकमें भी संक्षेपमें किया है। गत वसन्ताङ्कके इसी स्तम्भमें पृष्ठ ५०-५१ पर लिखा था—"अणु उद्‌जन बम विस्फोट परीक्षणसे वायुमंडल दूषित होकर प्रकृतिमें प्रतिकूलता आवेगी। सांसर्गिक रोग विषूचिकादिका प्रकोप होगा।······ वृश्चिकके शनिका फल यह है—'अलिस्थिते रोगभयं जनानाम्' संसारमें अनियमित असामयिक खण्डवृष्टि होगी।" इत्यादि। यह सब प्रत्यक्ष घटित होता जा रहा है। प्रकृतिमें प्रतिकूलता (ज्येष्ठ मास तक गर्मीका अभाव और असामयिक वृष्टि) जैसी इस वर्ष देखनेमें आई वैसी गत ५०-६० वर्षोंमें भी कभी देखनेमें नहीं आई ऐसा वयोवृद्ध जनोंका कथन है। सांसर्गिक रोग श्लेष्मज्वर (इन्फ्लूएंजा) से प्रायः समस्त भारत गत माससे आक्रान्त हो चुका है और अभी तक इस व्याधिका समूलोन्मूलन नहीं हुआ। यान-दुर्घटनाएँ आंधी बवण्डरादिसे भी यत्रतत्र पर्याप्त हानि हुई और हो रही है। गत वर्षके 'ग्रीष्माङ्क' में स्वतन्त्र भारतके दसवें वर्षका भविष्य विवेचन करते हुए लिखा था—"······यह सब प्रकारके अरिष्ट योगों और संघर्षों पर विजय प्राप्त करके भारतको उन्नतिकी ओर अग्रसर करेगा। केन्द्रीय शासन सुदृढ़ होगा।······सूर्य चन्द्रमाकी विकृतावस्थाके कारण शासक एवं शास्यवर्गमें दृष्टिदोष उत्पन्न होगा, अर्थात् एक दूसरेके दृष्टिकोणको शान्त स्वान्तेन भली प्रकार ठीक नहीं समझा जायेगा अतः परस्पर बन्धुवर्ग वा राष्ट्रियस्वजनोंमें ही विद्वेषकी भावना जागृत होगी, इससे द्रव्य और शक्तिका ह्रास होगा तथा अनेक अवांछनीय घटनाएं घटेंगी।······ इत्यादि।

नवीन करोंकी भरमार, सर्वत्र, भ्रष्टाचार संकुचित प्रान्तीयताको प्रश्रय और भाषा-विवाद (पंजाबमें हिन्दी आन्दोलन) पारस्परिक दृष्टि दोषके कारण ही उग्र रूप धारण करते जा रहे हैं। अब इस आषाढ़ श्रावण भाद्रपदमें भी ग्रहयोग सुख शान्तिकारक नहीं हैं। सर्वसाधारण जनतामें तो अभी भी सन् ५७ के लिए महान् भय व्याप्त है, यद्यपि हमने इस भयका निराकरण गतवर्ष सं० २०१३ के पंचांग और 'श्रीस्वाध्याय'के गतांकों एवं सं० २०१४ के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'में भी स्पष्ट रूपेण कर दिया है, तथापि अब सन् ५७ के ६ मास व्यतीत हो जाने पर भी कुछ सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले दैवज्ञ-पुंगवोंने धूमकेतु दर्शन (पुच्छल तारे) को लेकर जनतामें यह भय फैलाया है कि—"इस वर्षकी दिवाली कोई माईका लाल ही देखेगा। ऐसी भयानक महामारी फैलेगी जिसमें असंख्य प्राणी कालकवलित होंगे और जो बचेंगे वे अंधे वा बधिर हो जायेंगे।" इत्यादि।

हम पाठकोंको पुनः विश्वास दिलाते हैं कि वे ऐसी अनर्गल बातोंसे भयभीत न होवें। जैसे आधा सन ५७ निकल गया है वैसे ही शेष भी निकल जावेगा। हां, प्रकृति प्रकोप, कहीं अति वृष्टि, कहीं अनावृष्टि, रोग दुर्भिक्ष तो कहीं राजनैतिक सांस्कृतिक धार्मिक संघर्ष सत्याग्रह, तो कहीं हड़तालादि उत्पात अवश्य होंगे। इसी दृष्टिसे हमने ५७ को घटनापूर्ण वर्ष लिखा है। आषाढ शुक्ला २ और दशमी

को शनिवार और श्रावण शुक्ला २ का क्षय प्रजामें अशान्ति संघर्ष एवं क्लेश कारक है, आगे कार्तिक मास तक दुर्भिक्ष भूकम्पादि उत्पातका द्योतक है, यथा—

आषाढ़ शुक्लपक्षे च द्वितीया दशमी दिने।
शनिवारे प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं रौरवं तदा॥
श्रावणे शुक्लपक्षे च तिथिः क्वापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिकेमासे छत्रभंगः प्रजायते॥

आषाढ़ी पूर्णिमाकी वायुपरीक्षा

अनिष्ट ग्रहयोग होने पर भी यदि आषाढ़ी पूर्णिमाको वायुका शकुन उत्तम हो जावे तो संसारमें अनिष्ट फलकी निवृत्ति होकर सुख शांतिकी वृद्धि होती है। आषाढी पूर्णिमाकी वायु कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ जगन्नियन्ता की ओरसे शुभाशुभफलपरिपाकका पूर्वसंकेत है। इस कारण भारतीय दैवज्ञ प्रत्येक नगर में वायु परीक्षा करके भावी शुभाशुभफलकी सूचना देते हैं। आषाढ़ शु० १५ गुरुवार ता० ११ जुलाईको सायंकाल नगरसे बाहर लम्बे बांस पर सूतके धागेसे रुईकी पूणी बांध कर अभिमंत्रित करके बांसको सीधा गाड़ दें और ठीक सूर्यास्त समय वायुकी परीक्षा करें। जहां पूर्व उत्तर पश्चिम और ईशानकोणका वायु चलेगा वहां सुभिक्ष एवं सुखशान्ति रहेगी और जहां दक्षिण, अग्नि, नैऋत्य तथा वायव्यकोण का पवन चलेगा वहां दुर्भिक्ष उत्पात एवं अशान्तिका अकाण्डताण्डव होगा।

यदि सूर्यास्त समय चारों ओरका वायु चले तो खण्ड-वृष्टि अग्निभय तथा दुर्भिक्ष पड़े। यदि वायु अपसव्य (पूर्वसे दक्षिण दक्षिणसे पश्चिम इस क्रम से) हो तो स्वल्पवृष्टि धान्यनाश और रोगभय रहे। यदि सव्यक्रमसे (पूर्वसे उत्तर, उत्तरसे पश्चिम) ठण्डी वायु चले तो सुभिक्ष और संसारमें सुखशांतिकी वृद्धि होवे। पहले अशुभ दिशाकी वायु चले पर बादमें शुभ हो जावे तो श्रेष्ठ फल जाने और यदि पहले शुभदिशाकी चलकर बादमें अशुभ-दिशाकी चल पड़े तो नेष्टफलकारी जानना। यथा—

आषाढ़मासस्य च पूर्णिमायां
सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः।
पूर्वस्तदा सस्ययुता धरित्री
नन्दन्ति लोकाः सजला घनाः स्युः॥

कृशानुवाते मरणं प्रजाना-
मन्नस्यनाशः खलु वृष्टिनाशः।
याम्ये मही सस्य विवर्जिता स्यात्
परस्परं यान्तिनृपा विनाशनम्॥
पापवाते तु वातानां श्रेष्ठः सर्वत्र वाऽऽदिशेत्।
श्रेष्ठान्यपि यदा हन्युः पापः पापं तदादिशेत्॥

गुरु शुक्र युति

भाद्रपद कृष्ण ११ गुरुवार ता० २२ अगस्त १९५७ ई० को कन्या राशिमें गुरु शुक्रकी युति होगी। इस युतिकी युद्ध संज्ञा है। गुरु शुक्र जब एक राशिमें एकत्र होकर युद्ध करते हैं तब संसारके मनुष्योंमें भी अशान्ति संघर्ष युद्ध जैसा वातावरण वा असामयिक वृष्टि भूकम्प आदिसे उत्पात होते हैं, यथा—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥

कन्या राशिका शुक्र सब प्रकारके अन्न और विशेषकर चावलमें महर्घताकारक माना गया है। यथा—

कन्या राशिगतेशुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति।
तत्र धान्यमहर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः॥

ता० १४ अगस्त से ८ सितम्बर तक कन्याराशिमें गुरु शुक्र एकत्र रहेंगे और २० अगस्तको शनि मंगलका केन्द्र योग (परस्पर दृष्टि सम्बन्ध वृश्चिक सिंह राशिमें) होनेसे अंगारक योग बन गया है। गुरु-शुक्र, मंगल-राहुकी क्रूरकर्तरीमें है। यह संसारमें कहीं भयानक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करेगा। कहीं राज्यक्रांति सैनिक संघर्ष उत्पात और संक्रामक रोगसे भी हानि होगी। इस युद्धमें गुरु विजयी हो रहा है अतः अध्यात्म प्रधान भारत एवं न्याय-प्रिय आर्यजनोंकी विजय होगी। अनार्य आततायियोंकी विशेष हानि होगी। पश्चिमी देश और अनार्य यवनादिकोंके लिए यह समय भयप्रद है। भारतमें शासक एवं प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा, आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात प्रकृति प्रकोप और राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं श्रमिक वर्गकी समस्याएं उग्ररूप धारण करेंगी। परंतु स्वतन्त्र भारतके प्रवेश होने वाले ११ वें वर्षकी कुण्डलीमें ग्रह स्थिति बलवान् है अतः समस्याका समाधान हो जावेगा और भारतका गौरव बढ़ेगा।

स्वतन्त्र भारतका ग्यारहवां वर्ष

सं० २०१४ भाद्रपद कृष्ण ४ बुधवार ता० १४ अगस्त १९५७ ई० को इष्ट घट्यादि ५०।४० पर वृश्चिक लग्नमें भारतको स्वतंत्र हुए दश वर्ष पूर्ण होकर ग्यारहवां वर्ष प्रवेश हो रहा है। यद्यपि यहां स्वतन्त्रता समारोहका उत्सव ता० १५ अगस्त गुरुवारको ही मनाया जायेगा, तथापि सौरगणनानुसार वर्षप्रवेश १४ अगस्त बुधवारको ही हो जावेगा। दश वर्ष पूर्व १९४७ में १५ अगस्तको श्रावण कृष्णा चतुर्दशी और अश्लेषा नक्षत्र होनेसे शुभ दिन नहीं था। उस भारतीय राज्याधिकारियोंको ज्योतिर्विज्ञानवेत्ताओंकी ओरसे यह बात सुझाई गई तो हमारी बात मान ली गई और ता० १५ अगस्त शुक्रवार की अपेक्षा ता० १४ अगस्त (१९४७) गुरुवारको अर्धरात्रिमें १२।१ पर गुरुपुष्यामृत योग और स्थिर लग्नमें स्वातन्त्र्य सत्ता ग्रहण करनेका सुमुहूर्त साधा गया था और १५ अगस्त शुक्रवारको प्रातःकाल ८ बजे कन्यालग्नमें ध्वजोत्तोलनादिसे उत्सव प्रारम्भ किया गया। इस कारण सौर गणनानुसार वर्षप्रवेश लग्नका समय प्रायः १४ अगस्तको ही आता है और स्वातन्त्र्योत्सव सदाकी भांति १५ अगस्तको मनाया जाता है।

स्वतन्त्र भारतका जन्म लग्न यह है—

सं० २००४ अधिक श्रवण कृ० १३ गुरुवार ता० १४ अगस्त १९४७ इष्ट घट्यादि ४५।२५ सू. ३।२८ ल. १।१८

'स्वतन्त्र भारतका भविष्य' शीर्षकसे इस कुण्डलीका विस्तृत भविष्य-विवेचन ता० १५ अगस्त १९४७ के 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत' 'वीर अर्जुन' आदि प्रमुख पत्रोंके स्वतन्त्रता विशेषांकोंमें हमने प्रकाशित करवाया था। तदनन्तर भारतके अनेकों साप्ताहिक मासिक पत्रोंने भी उस भविष्यको अपने-अपने पत्रोंमें उद्धृत किया था।

'श्रीस्वाध्याय' के ७ वें वर्षके 'नववर्षाङ्क'में भी 'हमारे भविष्यकी एक झलक' शीर्षकसे यह सब विस्तृत रूपमें प्रकाशित हुआ था। उस १५ अगस्त १९४७ के विस्तृत भविष्यमेंसे कुछ पंक्तियां ये हैं—

"......अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतन्त्रता दीर्घजीवी (चिरस्थायी) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारतका गौरव संसारमें बहुत बढ़ेगा।......निकट भविष्य में अभी किसी विदेशी आक्रमणका भारतको भय नहीं है। भारत पूर्णरूपेण सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन् १९५८ ई० के बाद ही हो सकेगा। इन आरम्भिक वर्षोंमें पाकिस्तानका सम्बन्ध आन्तरिक रूपमें मैत्रीपूर्ण नहीं होगा।......भारत भविष्यमें अपने उद्योगसे आर्थिक स्थितिको सुधार लेगा।......भारतीय वैज्ञानिक परमाणु शक्तिका अनुसंधान करेंगे और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी।......राष्ट्रभाषा हिन्दीका गौरव बढ़ेगा।......भारतकी राष्ट्रीय सरकार विदेशोंमें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।......शनि दृष्टिके कारण पाकिस्तानसे आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोषजनक न होंगे। शनि अनार्य जनताके अन्तःकरणको अभी शुद्ध नहीं होने देगा।" इत्यादि

ग्यारहवां वर्ष लग्न

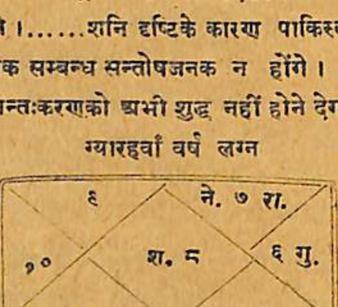

लग्नेश वर्षेश मंगल केन्द्रस्थ है और मुंथा पंचममें मुंथेश गुरुसे दृष्ट तथा जन्म लग्नेश शुक्र भी केन्द्रस्थ होनेसे भारतका भविष्य उज्वल है। जहां वृश्चिकलग्नमें शनि उत्पात अशान्ति रोग वृद्धिकारक एवं शत्रूत्पादक और नीचनवांशस्थ मंगल शासनको झकझोरने वाला है, वहां चन्द्र शुक्र गुरु बुध मुंथा सभी सम्प्राप्त समस्याओं पर काबू

(शेष पृष्ठ ४५ पर)

श्रीराजमाताका देवलोक-प्रयाण

इस नश्वर संसारका यद्यपि यह शाश्वत नियम है कि जो प्राणी जन्म लेता है, वह अपने कर्म-फलानुसार प्राप्य भोगोंको भोगकर एक-न-एक दिन अवश्य ही देवालयातिथ्य प्राप्त कर ही लेता है। कैसी भी परिस्थिति हो, कितने ही प्रिय-परिजनोंका सुयोग हो, सारा ज्ञान, ध्यान, मानापमान-वितानको छोड़कर जाना ही पड़ता है। फिर भी कुछ ऐसी पुण्यात्माएँ होती हैं जिनके थोड़ेसे ही सम्पर्कसे मनुष्य मोहाविष्ट हो उनके सद्गुणोंसे इतना अत्यधिक अभिभूत हो उठता है कि जब उनका वियोग होता है तो हृदयसे तच्छोकजन्य अवसाद-कालिमा कितना ही प्रयत्न किया जाय सहसा धुल गल नहीं पाती और एक विशेष अभाव-सा सतत अनुभवित रहता है, ऐसे ही पुण्य-पुरुषों की पावन गाथाएँ इतिहासमें अपनी कुछ स्वर्ण रेखाएँ बना देती हैं जो उत्तर कालिक लोगोंको गौरव एवं पथ प्रदर्शन कराती रहती हैं।

सोलनकी स्वर्गीया बड़ी राजमाता श्री १०५ सती मांगलवालीजी भी ऐसी पुण्यात्माओंमेंसे एक थीं। ८२ वर्षकी दीर्घायुष्य प्राप्त कर गत ज्येष्ठ कृष्णा १२ रविवारको रात्रिके ३ बजे उन्होंने शरीर त्याग किया। जिन लोगोंने श्रीराजमाताजीको देखा, परिचय प्राप्त किया अथवा किसी प्रकार उनके सम्पर्क में आये वे जानते हैं कि उन जैसी भारतीय आदर्श-स्वरूपा वरिष्ठा नारीका अन्यत्र दर्शन दुर्लभ ही है। श्री राजमाता आस्तिकताकी प्रतिमूर्ति और सदाचारकी साक्षात् प्रतीक थीं। अपने लम्बे वैधव्यजीवनकालमें सोलन जैसे शीतप्रधान स्थानमें रहते हुए भी सदैव उन्होंने एक ही धोती पहनी और भारतीय प्राचीन तपस्विनियोंकी भांति शम, दम, यम, नियमपूर्वक जीवन पर्यन्त कठिन व्रतोंका पालन किया। सोलन-नरेश धर्ममार्तण्ड श्री १०५ राजर्षि श्रीदुर्गासिंहजी जैसे अनन्य मातृ-भक्त हैं, राजमाताका भी वात्सल्य राजा साहबके प्रति वैसा ही था। आजकलके युगमें जैसा प्रायः सापत्न्य-सन्तति-वैमनस्य देखा जाता है उसके प्रतिकूल राम और सुमित्राकी भांति आदर्श श्रीराजमाताका प्रेम था। केवल राजा साहबके प्रति ही नहीं, प्रत्युत राज्यके प्रत्येक प्रजाजनके प्रति उनका वैसा ही स्नेह-भाव था जैसा कि आदर्श माताका होना चाहिए। यद्यपि अब राजा प्रजाका पारस्परिक सौहार्द, स्नेह-सम्बन्ध बदल गया है, तथापि राजमाताके निधनका समाचार सुनते ही पूर्ववत् सारी प्रजाने शोक मनाया, समस्त कारोबार बन्द होकर नगरमें दिन भर हड़ताल रही। सोलन नगरके सहस्रों आबालवृद्ध श्मसान भूमि तक पहुंचे। समीपस्थ ग्रामीण जनताने जब यह समाचार सुना तो चारों ओरसे ग्रामीण जनताने भी राजकीय श्मसान भूमिमें आकर राजमाताको अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जली समर्पित की। इससे अधिक प्रजा-प्रेमका आदर्श उदाहरण क्या हो सकता है।

जो लोग यह समझते हैं कि—'कांग्रेसी सरकारकी कृपासे सर्वत्र अब प्राचीन राज्योंका विलय हो गया है और राजा प्रजाके पारस्परिक मधुर सम्बन्ध पहलेकी भांति नहीं रहे हैं' वे देखें कि राज्य न रहते हुए भी हमारे आदर्श राजर्षि (श्रीबघाटनरेश) का प्रजाजनके प्रति अब भी वैसा ही अनुराग है, और प्रजाकी भी वैसी ही निष्ठा और भक्ति है जैसी कि प्रायः पुस्तकोंमें पढ़नेको मिलती है, इसका मूल कारण महामहिम स्व० श्री दिलीप—सिंह—नरेशके सुपुत्र राजर्षि श्री दुर्गासिंहजीके सद्गुण और विवेकशीलता ही है। इस प्रसंगको देख कर हमें महाकवि कालिदासकी राजर्षि दिलीपकी गोचारणके समयकी अवस्थाका वर्णन सहसा स्मरण हो आता है कि राज्य रहित होने पर भी वे—

"अदेयमासीत्त्रिदिवस्य भूपतेः
शशिप्रभं छत्रमुभे च चामरे"

वर्णनानुसार अपने सद्गुणोंके कारण छत्र चामर युक्त राजर्षि प्रतीत होते थे, वैसे ही ये राजर्षि भी हैं।

हम पराम्बा श्रीजगदम्बासे प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गीया श्रीराजमाताजीको शाश्वतिक शान्ति प्राप्त हो और उनके आदर्शपुत्र श्री राजर्षि दीर्घायुष्य प्राप्त कर सदैव सर्वविध समुन्नति प्राप्त करें। शिवम्।

—सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'

दो पवित्र-आत्माओंका सम्मिलन

[आचार्य श्रीकान्त शास्त्री, प्राध्यापक राजकीय तारिणी संस्कृतमहाविद्यालय सोलन]

एक ओर भारत गौरव सूर्यप्रभव प्रसिद्ध सिसोदिया वंशके राजकुल-गुरु अनन्तज्ञान-राशिके स्वामी हिजहोली-नेस श्री १०८ गोस्वामी श्री सवाई प्रेमानन्दजी महाराज श्रीएकलिंगजी (कैलाशपुरी) और दूसरी ओर अपार प्रभुसत्ताके अधिपति अपरिमित ऐश्वर्यके होते हुये भी अनासक्त महामहिम हिजहाईनेस श्री बघाटनरेश, ज्ञान और कर्मके अपूर्व सम्मेलनके समान ब्रह्मशक्ति और क्षात्र-तेजके इस अपूर्व सम्मिलनको देखकर नयन-लाभ सफल हो गया। कई शताब्दियोंसे क्षत्रिय तेजको देशस्वातन्त्र्य, वर्णाश्रम-धर्म संरक्षण एवं वैदिक संस्कृतिके प्रचार तथा प्रसारके लिये प्रेरित करने वाले सूर्यवंशके राजकुल-गुरु, अपने जन्म जात प्रजापरिपालनरूप कर्तव्य निभाते हुए भी विदेह राजा जनक की विरविश्रुत ललित अनासक्त कर्मयोगकी परम्पराके एक-मात्र प्रतिनिधि राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंहजी महाराजसे मिलने की इच्छा प्रकट करते हैं। घरमें ही विष्णुपादोदक भगवती भागीरथीके प्रवाहको अवतीर्ण होते देख आत्मविभोर श्री बघाटनरेश अपने भव्य प्रासादसे निकल पड़ते हैं। बघाट-नरेशके यहां मातृमरणाशौच होनेके कारण प्रासाद निवास छोड़कर ज्योतिर्विज्ञानके पारावारदर्शी ज्योतिषाचार्य श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदीजीके घर राजकुल-गुरु ठहरे और वहीं दोनों महापुरुषोंकी भेंटकी व्यवस्था की गई।

राजभवनसे श्रीराजर्षिका असामयिक प्रस्थान और श्रीगोस्वामीजीके मनमें उत्कण्ठाका प्राबल्य लगभग एक ही समय प्रकट होने लगे। श्री राजर्षि (बघाटनरेश) पधारे तो श्री राजगुरुजीके अनन्य भक्त, यात्रामें सर्वतोभावेन सहायक निज सचिवरूप वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० नन्दलालजी सनाढ्य तथा श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदीजीने उनका स्वागत किया। अनन्तर प्रकोष्ठमें प्रविष्ट होकर क्षात्रतेज ब्रह्मशक्तिके आगे नतमस्तक हुआ और ब्रह्मशक्तिने स्कन्धोंका स्पर्श कर उठाते हुये जैसे क्षात्रतेजका आलिंगन किया हो, सुन्दर आशीर्वचनोंसे उसे परिष्कृत कर दिया। दो पुनीत-आत्मावोंका यह मिलन दो विभिन्न स्रोत जैसे एकाकार हो बहने लगे हों, यह दो निःस्वार्थ आत्मावोंकी पवित्र भेंट थी।

राजर्षिके लिये विशेष रूपसे रक्खा गया पीठ निरर्थक ही रह गया, उन्होंने उस पर बैठना अस्वीकार कर दिया और वे महामहिम सर्वसाधारणके लिये बिछी दरी पर ही बैठ गये। अन्य विशिष्ट व्यक्तियोंका अनुरोध अकिञ्चित्कर प्रमाणित हुआ। इस स्थितिको देखकर अचानक ही—

"निर्मानमोहा जितसंग दोषाः
अध्यात्म नित्या विनिवृत्त कामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैः" ॥

यह भगवद् वाक्य उच्चरित हो उठा। राजर्षिके बैठते ही श्रीगोस्वामीजीके सुप्रसन्न मुख-कमलसे भ्रमरोंके गुञ्जरित शब्द निकले—"राजर्षे! आपके आत्मिक अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त हो।"

अभिषिक्त मस्तकको झुकाकर कृतज्ञता प्रकट करते श्रीनरेश ने पूछा—"गुरुदेव! आपके हाथमें यह चोट कैसे लगी?"

"शरीरके भोग हैं, देहलीमें मोटर-एक्सीडेण्ट हो गया था।"

'एक्सीडेण्ट' सुनते ही उन्होंने अपने निजी सचिव (प्राइवेट सेक्रेटरी) को आदेश दिया—'अभी फोन करके शिमलासे डा० के० एन० उडुप्पा सीविलसर्जनको बुलाओ।'

अपने व्यस्त कार्यक्रमको छोड़कर विश्वके प्रसिद्ध शल्य-चिकित्सक जिनकी उपस्थिति हिमाचलप्रदेशके लिये दैवी-वरदानसे भी महत्वपूर्ण है—पहुँच गये ३० मीलसे भी अधिक यात्रा करके। डा० श्री उडुप्पाने महामहिम श्री बघाटनरेशसे परामर्श कर श्रीराजगुरुजीको शिमला ले गये। वहां श्री गोस्वामीजीकी सेवा और सत्संगसे पूर्ण लाभ उन्होंने उठाया। अब कुछ स्वस्थ होकर श्री राजकुलगुरु पुनः सोलन लौट आये। ऐसे महापुरुष कभी-कभी सौभाग्यवश पधारते हैं और पथान्वेषी समाजको प्रकाश एवं पवित्रताका उपदेश देकर कृतार्थ कर जाते हैं। —

च्यवन और अश्विनीकुमार

[श्री पं० रघुवीरशरण शर्मा वैद्य आयुर्वेदबृहस्पति]

गत १५ जुलाई १९५६ के साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में डा० श्री वासुदेवशरण अग्रवालजीका 'च्यवन और अश्विनीकुमार'' शीर्षक लेख छपा है। इसमें उन्होंने अथर्ववेदके दो मंत्र शतपथब्राह्मण तथा प्रश्नोपनिषद्‌के कुछ उद्धरण देकर शारीरिक क्षीण दशाका नाम च्यवन, प्राण और अपान वायु को अश्विनीकुमार, वीर्य या शारीरिक रसको सोम सिद्ध करनेका विफल प्रयत्न किया है।

इस प्रकार श्रीअग्रवालजीने एक सत्य महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाको रूपक सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है। इनके अतिरिक्त भारद्वाज, वाजपेय और आयुर्वेदीय त्रिविध-दैवी, मानुषी, और आसुरी चिकित्साका भी काल्पनिक अर्थ किया है। इस प्रकार समस्त लेख कल्पनापूर्ण एवं अप्रासंगिक है। इतिहास पर कुठारघात है।

वास्तविकता यह है कि अश्विनीकुमार और ऋषि च्यवन दोनों ही इतिहासके प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, सुशिक्षित परिवारके हैं, इनका वेद, ब्राह्मणग्रंथ, पुराण, इतिहास और आयुर्वेदके आर्ष ग्रंथोंमें उल्लेख मिलता है। साथ ही ये दोनों ही आयुर्वेदके ज्ञाता तथा वैदिक मंत्रोंके द्रष्टा भी थे। इसी प्रकार सोम नामकी प्रसिद्ध औषधि है, जिसका उल्लेख चारों वेद, शतपथब्राह्मण, ऐतरेयब्राह्मण, महाभारत, आयुर्वेदके आर्षग्रन्थ चरक, सुश्रुत, अष्टांग संग्रह और धर्मशास्त्रकी मनुस्मृतिमें भी है।

श्री वासुदेवशरणजीने जिन मन्त्रोंसे अश्विनीकुमारका प्राण और अपान अर्थ किया है, वे निम्नलिखित हैं—

प्रत्यौहतमश्विना मृत्युमस्मद्
देवानामग्ने भिषजा शचीभिः।
(अथर्व ७।५३।१ यजुर्वेद २७।९)

इसका अर्थ स्पष्ट है कि शल्यचिकित्सक और काय-चिकित्सक दोनों प्रकारके वैद्य अपनी शक्तियोंसे हमसे मृत्युको अर्थात् रोगको दूर करें। मृत्युका अर्थ रोग भी होता है।

संक्रामतं माजहीतं शरीरं
प्राणापानौ ते सयुजा विहस्ताम्।
शतं जीव शरदो वर्धमानो-
ग्निष्ठे गोपा अश्विना वशिष्ठः।
(अथर्व ७।५३।२)

इसका सीधासादा अर्थ है कि यदि प्राण और अपान-वायु शरीरमें रहकर निरन्तर चलते रहें, शरीरका त्याग न करें, और अग्नि शरीरकी रक्षा करता रहे, अपना कार्य यथावत् करता रहे, तो मनुष्य सौ वर्ष तक अथवा बहुत वर्षों तक जीवित रहता है। 'शत' का अर्थ बहुत भी होता है—"शतं सहस्र इति बहु नामानि" (निरुक्त ३।१)

उपरोक्त मंत्रोंसे श्री अग्रवालजीने अश्विनीकुमारों का अर्थ प्राण और अपान किया है, जो कि सर्वथा असंगत है। क्योंकि प्राण और अपान तो शरीरमें रहने वाले ५ प्रकारके वायुओंके अन्तर्गत दो प्रकारके वायु हैं। इसी प्रकार शरीरमें ५ प्रकारके पित्त और ५ प्रकारके कफ भी रहते हैं। आयुर्वेदानुसार ये वात, पित्त, और कफ समस्त रोगोंको उत्पन्न करके शरीरको दूषित करते हैं, अतः इनका नाम दोष है। भला ये चिकित्सक कैसे हो सकते हैं? फिर अश्विनीकुमार तो देवोंके चिकित्सक हैं, वे देव कौनसे हैं जिनके प्राण और अपान वायु चिकित्सक हैं? मैं स्वीकार करता हूँ कि भाष्यकारोंने 'अश्विना' शब्दका जहां तहां प्रसङ्गवश प्राण और अपान भी अर्थ किया है, किन्तु यहां पर दोनों प्रकार शल्य-चिकित्सक और काय-चिकित्सक वैद्योंका ही ग्रहण होगा। क्योंकि इस सूक्तका ऋषि ब्रह्मा है और देवता आयुवर्धक, बृहस्पति और अश्विनी है।

ब्रह्मायुष्यमुतबार्हस्पत्यमाश्विनम्।
(अथर्ववेदीया बृहत् सर्वानुक्रमणिका)

ऋषिका अर्थ मंत्रद्रष्टा है। जिसका वर्णन हो, उसका नाम देवता है। इसी आधार पर वैद्य, औषधि, वनस्पति, पति, पत्नी, दम्पती, सभा और आयु आदि वेदोंमें देवता हैं। यह भी स्मरण रहे वेदोंमें अश्विनीकुमार शब्द ही नहीं है। अश्विनौ

और अश्विनी हैं। वैदिक व्याकरणके अनुसार 'अश्विना' शब्द भी दोवचन है। चारों वेदोंमें अश्विनौके ६८६ (छः सौ नवासी) मन्त्र हैं। इनके प्रसंगवश एक ही नहीं अनेक अर्थ होते हैं। जैसे—द्यौपृथिवी, सूर्य-चंद्रमा, रात-दिन, स्त्री-पुरुष, माता-पिता, सभापति सेनापति, राजा-प्रजा, अग्नि-वायु, शल्य चिकित्सक, काय चिकित्सक, वैद्य, प्राण, अपान, वायु और ऐतिहासिक प्रसिद्ध अश्विनीकुमार।

शब्दार्थ और व्यक्ति

शब्दार्थ और बात है और व्यक्ति और। शब्दोंके अर्थों पर व्यक्तियोंके निर्णय नहीं होते। श्री अग्रवालजीने शब्दार्थ पर ही अश्विनीकुमारोंके निर्णयका प्रयत्न किया है, यह भी भूल है। अश्विनौ ऐतिहासिक व्यक्ति थे, किन्तु अश्विनौ शब्दके अर्थ अनेक हैं। यही बात इन्द्र, वरुण, अग्नि, रुद्र और भारद्वाज आदि नामोंके भी साथ है। इन्द्र एक ऐतिहासिक व्यक्ति था, देवोंका राजा अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता एवं आयुर्वेदाचार्य था। किन्तु इन्द्र शब्दके अर्थ वैदिक साहित्यमें लगभग ४० हैं। जैसे कि–मन, जीवात्मा, परमात्मा, मेघ स्थानीय विद्युत्, वीर्य, राजा आदि।

वरुण—वरुण भी इतिहास प्रसिद्ध देवता था, आयुर्वेदाचार्य था। किन्तु वरुण शब्दसे वरुण (वरना) वृक्ष, जल, सूर्य और ब्रह्म आदिका ग्रहण होता है।

रुद्र—रुद्र नामके महापुरुष थे अनेक शास्त्रों एवं उपशास्त्रोंके ज्ञाता एवं आयुर्वेदाचार्य थे। कुवेरने अगदतंत्र की शिक्षा इन्हींसे प्राप्त की थी। (चरक. चि० अ० २३). किंतु रुद्र शब्दके रुलाने वाला, शब्द करने वाला, ईश्वर और वैद्य आदि अर्थ होते हैं।

अग्नि—अग्नि नामके देव जातिके महापुरुष थे। अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता एवं अनेक मंत्रोंके ऋषि थे। किन्तु अग्नि शब्दसे भौतिक अग्नि, जठराग्नि शरीरस्थ ५ प्रकारके पित्त, रुद्र "अग्निरायै रुद्र उच्यते" (निरुक्त) विद्युत् वैद्य, अग्रणी नेता और वैद्य आदि अर्थ होते हैं।

भारद्वाज—इतिहासमें भरद्वाज नामके अनेक ऋषि हुए हैं, आयुर्वेदाचार्य भी हुए हैं और शास्त्रोंके ज्ञाता भी, तथा सैंकड़ों मंत्रोंके द्रष्टा भी, किन्तु भारद्वाज शब्दके बलवान् अर्थ भी होते हैं। किन्तु स्मरण रहे अर्थ वही है, जिससे संगति बैठे, अन्यथा तो वह अनर्थ है। यही अग्रवालजीने किया है।

अश्विनीकुमारका संक्षिप्त परिचय

अश्विनीकुमारका जन्म एक सुशिक्षित परिवारमें हुआ था। इनके पिताका नाम सूर्य और माताका नाम सुरेणु अथवा संज्ञा था। संज्ञा दैत्य गुरु शुक्राचार्यके पुत्र ऋषि त्वष्टा की पुत्री थी। अश्विनीकुमारके यम और मनु नामके दो भाई और भी थे।

मनुने जल-प्लावनकी घटनाके बाद स्वर्ग, जिसका दूसरा नाम त्रिविष्टप है और आज जिसको तिब्बत कहते हैं, वहांसे भारतमें आकर उत्तर प्रदेशमें अयोध्या नाम की पुरी बसाकर राज्य करने लगे। दूसरे भाई यम स्वर्गमें ही रहे और देवोंके न्यायाधीश बने। अश्विनीकुमार भी स्वर्गमें ही रहे वे देवोंके वैद्य बने, इसी कारण इनका एक नाम स्ववैंद्य भी था। "स्ववैंद्यावाश्विनीसुतौ" (अमरकोश) महर्षि पुनर्वसु आत्रेयने भी इनको देवोंका वैद्य स्वीकार किया है "अश्विनौ देवभिषजौ" च० चि० १। (ऋग्वेदमें लिखा है कि–'युवंहस्थो भिषजा भेषजेभिः।' ऋ० १।१२३।६) अर्थात् आपके पास औषधियां हैं, इस कारण आप वैद्य हैं।

योग्यता

सूर्य, वेद, वेदाङ्ग, आयुर्वेद, अध्यात्म शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता तथा वैदिक मंत्रोंके ऋषि भी थे। सूर्य यजुर्वेद अ० मंत्र ३६,३७। अ० २६ मं० १ मं० ११। अ० १३ मं० २६। अथर्व कांड २ सू० २६। कां० १६ सू० ३१। ऋ० मंडल १० सू० १३ का ऋषि है।

मनु—यजुर्वेद अ० ३३ मं० ६१। मं० ६४ ऋ० मंडल ८ सूक्त २७,२८,२९,३०,३१ का ऋषि है।

यम—वेद, वेदाङ्ग आयुर्वेद, धनुर्वेद, राजशास्त्र, (राजनीति) धर्मशास्त्रका आचार्य था और सैंकड़ों मंत्रोंके ऋषि भी थे। यम—अथर्व कां० १ सू० ३। कां० ६ सू० ४५। कां० ७ सू० २३। कां० ७ सू० ६४ का० ७ सू० १००। कां० ७ सू० १०१। कां० १२ सू० ५६।५७। कां० १६ सू० ५,६,७ का ऋषि है।

अश्विनीकुमार—यजुर्वेद अ० २० मन्त्र ३।अ० २८ मं० १२ से २३ तकका ऋषि है। सामवेद ऐन्द्र कांड मंत्र ३०५ का अश्विनौ वैवस्वतौ ऋषि है। वैवस्वतौ शब्द बता रहा है कि अश्विनीकुमार सूर्यके पुत्र हैं।

अश्विनीकुमार ने अध्यात्मशास्त्रका अध्ययन अथर्व-कुलोत्पन्न ऋषि दधीचिसे किया था।

दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्रदीप-मुवा च। (ऋ० १।११६।१२)

इस मंत्रमें बताया है कि ऋषि दधीचिके शिर पर अश्वका सिर लगाकर अश्विनीकुमारोंने दधीचिसे मधुविद्याका अध्ययन किया था।

इसीको अधिक स्पष्ट अन्यत्र किया है, जिसका उल्लेख यह है:—

आथर्वणायाश्विना दधीचेश्वव्यंशिरः प्रत्यैरयतम्। स वां मधुप्रोवा च हतायन् त्वाष्ट्रं यद्दस्रा वऽपिकक्ष्यं वाम्। (ऋ० १।११,११२)

अर्थात् अश्विनी कुमारोंने दधीचिके शिरको काट कर सुरक्षित रख दिया, उसके स्थान पर अश्वका शिर लगा दिया। तब अथर्व कुलोत्पन्न दधीचिने उनको मधु विद्याका उपदेश दिया और साथ ही ऋषि दधीचेने ऋषित्वष्टासे जो छिन्न-भिन्न अंगोंको जोड़नेकी विद्या सीखी थी, वह भी बता दी। इसके बाद इन्द्रने क्रुद्ध होकर दधीचिका शिर काट दिया तब फिर अश्विनी कुमारोंने उनका वास्तविक शिर लगादिया था।

इसका उल्लेख वृहदारण्यकोपनिषद्में भीहै —

इदं वै तन्मधुदध्यङ्ङाथर्वणो अश्विभ्यामुवा च। (बृ० आ० २।५।१६-१६)

अर्थात् ऋषि दधीचिने अश्विनी कुमारोंको मधु विद्या का उपदेश दिया था।

इसीको मधुविद्याके ज्ञाताओंकी सूचीमें इस प्रकार लिखा है—

"अश्विनौ दधीच आथर्वणात् विश्वरूपस्त्वाष्ट्रो अश्विभ्याम्। (बृ० आ० उ० २।६।३)

अर्थात् अश्विनीकुमारोंने ऋषि दधीचिसे और-त्वष्टाके पुत्र विश्वरूपने अश्विनी कुमारोंसे अध्यात्म शास्त्रका अध्ययन किया था।

आयुर्वेदकी शिक्षा

अश्विनीकुमारोंने आयुर्वेदकी शिक्षा अपने पिता सूर्यदेवसे ली थी।

भास्करश्च स्वशिष्येभ्य आयुर्वेदं स्वसंहिताम्।
प्रददौ पाठयामास ते चक्रुः संहितास्ततः॥
धन्वन्तरिर्दिवोदासः काशिराजोश्विनीसुतौ।
(ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्मखंड अ० १६)

अश्विनी कुमारोंने आयुर्वेदका अध्ययन पितामह ब्रह्मा से भी किया था—

सुखोपविष्टं ब्रह्माणमश्विनौवाक्यमूचतुः।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा ब्रह्मा वचनमब्रवीत्॥ (गद निग्रह)

अश्विनीकुमारोंने आयुर्वेदका अध्ययन प्रजापति दक्ष से भी किया था—

"ब्रह्मा प्रोवाच ततः प्रजापतिरधिजगे तस्मादश्विनौ" (सु० सू० १।१८)

यही बात ऋग्वेदसे भी पुष्ट होती है—

उभाहिदस्रा भिषजा मयोभुवोभाददक्षस्य वचसोवभूवथुः। (ऋ० ८।८६।१)

अर्थात् दोनों ही अश्विनी दर्शनीय हैं। दोनों ही दक्षके उपदेशसे कल्याणकारी वैद्य बने हैं। अर्थात् दक्षसे आयुर्वेद पढ़कर वैद्य बने हैं।

देवराज इन्द्रने अश्विनीकुमारोंसे आयुर्वेदका अध्ययन किया था। "अश्विभ्यामिन्द्रः" सु० सू० १।१८। फिर इन्द्रने ऋषि भारद्वाज, कश्यप, वशिष्ठ, अत्रि, भृगु, और धन्वन्तरि आदि अनेक भारतीयोंको आयुर्वेद पढ़ाया था, जिनका उल्लेख काश्यपसंहिता और चरकसंहितामें मिलता है। (क्रमशः)

"ओंकार ज्योतिषीका चांस"

२॥) रु० गुड़ मटर चना लाहामें, तेलमें ५) रु० से ७) रु० तक का चांस एक तर्फा लाइनमें खत्म होने वाला आ रहा है, अगर आप लक्षपति भी हैं तो इस चांसको मंगाकर व्यापार लाइनसे मिलाकर पूरा लाभ उठा सकते हैं। इसी चांसके मध्य ३ दिनके चांस २४ व ४८ घंटेमें खत्म होने वाले जिन चांसोंमें आप गली तेजी मंदी लगाकर लाभ उठा सकते हैं और साथमें एक वर्ष तकका भविष्य जिससे आप १ वर्षका शारांश तैयारी व वायदेका जान सकते हैं शीघ्र मंगायें, फीस ५५) रु० मनीआर्डरसे भेजें। अगर वी० पी० से मंगाना चाहें तो आर्डरके साथ १) रु० नकद या १) रु० के टिकिट भेजें तभी आर्डर पर ध्यान दिया जायेगा, वर्ना आर्डर कैंसिल किया जायेगा ये ध्यान अवश्य रखें।

पता—श्री ओंकारनाथ ज्योतिषी पो० हापुड़ जि० मेरठ
फून नं०—२३८

❋ सरिता और सरोवर ❋

[श्री पं० सम्पूर्णदत्त मिश्र शास्त्री M. A.]

[गताङ्क से आगे]

'गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचनां या विहस्येव फेनैः
शम्भोः केशग्रहणमकरोदिन्दुलग्नोर्मिहस्ता ॥'

पहाड़से उतरती हुई गंगा ऐसी दिखाई देती है मानो सगरके लड़कोंको स्वर्ग ले जाने वाली सीढ़ियां यही हैं। माथेके चंद्रको छूने वाले अपने लहर रूपी हाथोंसे इसने भगवान् शंकरके केशोंको पकड़ लिया है। इस पर यदि पार्वतीने भ्रुकुटि चढ़ाई है तो उसे इसने मुसकाकर टाल दिया है। यह जो सफेद फेन है, वह इसकी मुसकान ही तो है। यह गंगावर्णन है।

पुष्पक विमानमें से राम सीताको सरयू दिखाते हैं :—

'यां सैकतोत्संगसुखोचितानां
प्राज्यैः पयोभिः परिवर्धितानाम् ।
सा मान्यधात्रीमिव मानसं मे
संभावयत्युत्तरकौसलानाम् ॥'

मेरा मन यूं कहता है कि यह सरयू नदी उत्तरकोसल के राजाओंकी धाय है, क्योंकि वे इसीका पयः पान करके बड़े हुए हैं और इसकी तटरूपी गोदसे परिचित हैं।

'सेयं मदीया जननीव तेन मान्येन राज्ञा सरयूर्वियुक्ता।
दूरे वसन्तं शिशिरानिलैर्मां तरंगहस्तैरुपगूहतीव ॥'

इस सरयू नदीको मेरे पूज्य पिताजी ऐसे छोड़ गये हैं जैसे मेरी मां को। मैं इससे दूर रहकर लौटा हूं, इसलिये यह अपने तरंगरूपी हाथोंसे ठण्डी-ठण्डी हवा करके स्नेह दिखा रही है।

नैषधीयचरितमें से तड़ागका वर्णन सुनिये। वहां पर तड़ागकी तुलना समुद्रसे की जा रही है।

'रङ्गिणीरंकजुषः स्ववल्लभा-
स्तरंगरेखा बिभरांबभूव यः ।
दरोद्गतैः कोकनदौघकोरकै-
र्धृतप्रवालांकुरसंचयश्च यः ॥'

इस तालाबमें उठती हुई तरंगोंका वही स्थान है जो समुद्रकी गोदकी अधिकारिणी उसकी प्रिय नदियोंका। थोड़ी निकली हुई लाल कमलकी कलियां मूंगेके अंकुरोंके समान हैं।

'महीयसः पंकजमण्डलस्य य-
श्छलेनगौरस्य च मेचकस्य च ।
नलेन मेने सलिले निलिनयो-
स्त्विषं विमुञ्चन्विधुकालकूटयोः ॥'

नलने सोचा कि यह तालाब वस्तुतः सफेद और नीले कमलोंके बहाने अपनेमें चंद्रमा और कालकूटकी सत्ताका परिचय दे रहा है।

रघुवंशमें राम सीतासे कहते हैं—

'उपान्तवानीरवनोपगूढा-
न्यालक्ष्यपारिप्लवसारसानि ।
दूरावतीर्णा पिवतीव खेदा-
दमूनि पम्पासलिलानि दृष्टिः ॥'

यह पम्पा नामका सरोवर (झील) आसपास बेतके जंगलोंसे घिरा हुआ है और इसमें कहीं-कहीं सारस दिखाई दे रहे हैं। चूंकि हम इसके पास नहीं जा सकते, इसलिये मेरी थकी दृष्टि इसे मानो यहींसे पी जाना चाहती है अर्थात इसको छोड़ना नहीं चाहती।

'अत्रावियुक्तानि रथांगनाम्ना-
मन्योन्यदत्तोत्पलकेसराणि ।
द्वन्द्वानि दूरान्तरवर्तिना ते-
मया प्रिये ! सस्पृहमीक्षितानि ॥'

प्रिये। जब तुम मुझसे बिछुड़ गई थीं तो इसी पम्पा सरोवर पर चकवा और चकवी एक दूसरेके मुंहमें कमल केसर रखते थे। तब उन्हें देखकर मुझे तुम्हारी याद आई।

'पयोधरैः पुण्यजनांगनानां-
निर्विष्टहेमांबुजरेणु यस्याः ।
ब्राह्मं सरः कारणमाप्त वाचो-
बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति ॥'

जिस मानससरोवरके स्वर्णकमलोंका पराग यक्षोंकी स्त्रियां अपने स्तनों पर लगाती हैं वह सरयू नदीका ठीक उसी प्रकार उद्‌गम स्थल है, जैसे बुद्धिका अव्यक्त तत्त्व ।

इनके अतिरिक्त मध्यभारतके जंगलकी पोखरकी दुपहरी का दृश्य भवभूतिकी कलाका परिचायक है । कादम्बरीका अच्छोद सरोवर वर्णन पढ़नेका विषय है । वहांका सारा का सारा वातावरण एक रहस्यमयी मोहकताका संचार करता है ।

अब तक हमने भिन्न काव्योंसे जो उद्धरण नदी और तड़ागके विषयमें दिये हैं वे यह नहीं दिखाते कि उनमें केवल उनका स्वाभाविक चित्रण कविका उद्देश्य है । कविका उद्देश्य वह भी है, परन्तु उसके अतिरिक्त कुछ और भी है । आपने हमसे ऐसे उदाहरण सुने, जिनमें पहाड़ और जंगलों में बहती हुई नदी एवं सुखोपासक मानवके इष्ट दिशामें किये गये सफल प्रयासोंके प्रतीक मनोरम सरोवरोंका अस्तित्व उद्यानोंमें दिखाया गया है या जंगलकी झीलोंके प्राकृत सौंदर्यका दिग्दर्शन कराया गया है, परन्तु इसके साथ जो बात महत्वकी है वह यह है कि संस्कृत कवियोंने इनका सम्बंध मानवके जीवनसे स्थापित करनेकी चेष्टा की है । ऐसी चेष्टा जहां एक ओर कविकल्पनाका प्रसन्न रूप प्रस्तुत करती है, वहां दूसरी ओर वह आचार्य मम्मटके अभिप्रेत काव्यके प्रयोजनोंमेंसे उन तीनकी पुष्टि करती है जो उन्होंने 'व्यवहारविदे', 'सद्यःपरनिर्वृतये' और कान्ता-सम्मिततयोपदेशयुजे' के रूपमें घोषित किये हैं ।

जीवनकी थकानसे ऊबकर जब मनुष्य सरिता और सरोवरोंको देख रहा होता है, तो ऐसा नहीं हो सकता कि वह अपने जीवनके और पहलुओंको सर्वथा भूल जाय । सच यह है कि वह उनको भूल जानेके लिये स्मरण करता है और चेष्टा यह होती है कि उन सबका सामंजस्य क्या भगवान्‌की इस सृष्टिके अन्य रूप नदी आदि से भी कुछ हो सकता है या नहीं । यह भूलनेका एक विशेष ढंग है । यह दुःखमें होकर सुखकी खोज है । जो कुछ भगवान् में देखा या सुना है, वह इस जड़जगत्‌के नदी और तड़ागोंसे कहां तक मेल खाता है इस खोजके प्रयासमें मानवका मनोरंजन निहित है और मेल खाय या न खाय उसे आरोप करनेमें आनन्द आता है । तभी तो कालिदासने नदीमें नायिकाकी कल्पना की । विन्ध्याटवीमें बहती हुई भवभूति की नदी जीवनकी घोरतासे डरे हुए पुरुषके लिये अपने निरन्तर प्रवाहसे यदि प्रवृत्तिमार्गका उपदेश देती है तो उत्तररामचरितमें उनका नदियोंके मार्ग छोड़ जानेकी बात करना अवश्य ही वैराग्यका उद्दीपन करता है । यदि श्रीहर्ष के तड़ागवर्णनमें संसारके सम्पत्तिभारसे लदे हुए होनेकी सूचना है तो उधर कालिदासके सरयूवर्णनमें विविध प्रकार से जीते हुए जीवलोककी टीस सुन पड़ती है । सरयूमें चाहे वात्सल्य हो या न हो, पर रामने अपने वात्सल्यकी सूचना सीताको इस बहाने दी । कालिदासके हृदयका वात्सल्य नदीमें वात्सल्य देखनेको विवश करता है । संस्कृत काव्योंमें किये गये नदी और तड़ागोंके वर्णन जहां एक ओर कमल, चिड़िया, हवा तथा चांद और सूरजके प्रकाशमें झिलमिल करते हुए जलके रंगीन चित्रोंकी चर्चासे भरे पड़े हैं, वहां वे अपने पड़ौसी प्रदेशको भी अपनी सत्तासे मनोरम बना देने वाले इन जलाशयोंकी क्षमताकी नित्य ध्वनि करते हैं । सरिता और सरोवरोंके बहाने संस्कृत कवियों द्वारा अपने काव्योंमें की गई इन ध्वनियोंको लोग अधिकसे अधिक समझेंगे यह आशा करते हुए हम विश्राम करते हैं ।

समाज के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाकर
उसमें प्राण फूंकने वाला और जीवन में
शान्ति एवं सामंजस्य का पथ-प्रशस्त
करने वाला ऋषिकेश की पावन-
भूमि से प्रकाशित

*** चरित्र-निर्माण ***

सचित्र मासिक—अवश्य पढ़िये

उत्तरप्रदेश, मध्यभारत, बम्बई, मध्यप्रदेश, पैप्सू, नैपाल, आदि राज्य सरकारों द्वारा स्कूलों, कालेजों, पुस्तकालयों एवं वाचनालयों और उत्तरप्रदेश की समस्त ग्राम-पंचायतों के लिए स्वीकृत ।

वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति ।।-)

निर्माण-कार्यालय, ऋषिकेश [देहरादून] उ० प्र०

उपाकर्म

[साहित्याचार्य श्री पं० रामेश्वर शास्त्री विद्यालंकार]

उत्सवोंके द्वारा मनुष्य जातिकी प्राचीनतम सभ्यताके इतिहासका पूर्ण परिचय मिलता है । उत्सवोंकी सृष्टि विच्छिन्न जातिको समष्टिके सुनहरे धागेमें पिरोनेके लिए ही प्रकल्पित की गई थी । यही कारण था कि आर्योंने जाति विभागके अनुसार खास-खास पर्व एक-एक जातिके लिये प्रधानतः अलग-अलग नियत कर दिये थे । जैसे ब्राह्मणोंके लिए "उपाकर्म", क्षत्रियोंके लिए "दशहरा", वैश्योंके लिए "दीपावली" और शूद्रोंके लिए "होलिका" ।

इन उत्सवोंमें एक जाति प्रधानतया भाग लेती थी, अन्य जातियां भी उसमें सहयोग देकर अपने भ्रातृत्व एवं सौहार्दका परिचय प्रदान करती थी । कहनेका तात्पर्य यह है, कि ब्राह्मणोंके त्योहारमें "ब्राह्मण", क्षत्रिय, वैश्य, एवं क्षत्रियोंके उत्सवमें चारों वर्ण एवं वैश्योंके पर्वमें यथाशक्ति सम्पूर्ण जातियां एवं शूद्रोंके उत्सवमें सभी जातियाँ अपने भेदभावको भुलाकर बड़े प्रेमसे योग देती थीं । आज हम अन्य त्योहारों पर विचार न करके विशेषतः उपाकर्म पर ही अपने विचार व्यक्त करते हैं ।

सूत्रकारोंने "उपाकर्म" शब्द का निर्वचन करते हुए "अध्यायोपमाकर्म" लिखा है । मन्वादि धर्मशास्त्रकार भी छन्दसामुपाकरणम् अध्यायोकर्म "श्रावण पौर्णमास्या मध्यायमुपाकृत्य" आदि शब्दोंसे इसका व्यवहार करते हैं । इसलिए इसका नाम "वेदोपाकरण" अथवा अध्यायोपाकर्म समझना चाहिए । पहिले समयमें इसका यही नाम था, किन्तु फिर लोग जैसे कि देवदत्तको देव या दत्त कहने लगते हैं, वैसे ही इसे "उपाकर्म" ही कहने लग गये । इस शब्दका अर्थ वेदोंका प्रारम्भ होता है । क्योंकि प्राचीन भारतीय द्विजाति बालक यज्ञोपवीत धारण करनेके बाद स्नानादिसे बाह्य शुद्धि करके अपनी आन्तरिक शुद्धि करने के लिए आजके दिनसे ही "वेदारम्भ" किया करते थे । इस-लिए इसका नाम "वेदोपाकर्म" या उपाकर्म रखा गया । गोभिल गृह्यसूत्रभाष्यकारने इसकी व्युत्पत्ति इस तरह लिखी है ।

उपाक्रियते प्रारभ्यते वेदस्याध्ययनं येन कर्मणा तदुपाकरणं नाम कर्म्म विशेषो विद्यासंस्कारकः ।

अतः यह मानना पड़ेगा कि "उपाकर्म" नामक कृत्य जो आजकल श्रावणीसे प्रसिद्ध है, वह द्विजाति बालकोंके "वेदारम्भ" करानेके अवसर पर होने वाला महोत्सव था, अब केवल गणस्नान ऋषि पूजनके रूपमें परिणत हो गया है ।

यद्यपि, पारस्कर गृह्यसूत्र देखनेसे यही पता लगता है कि इस दिन प्रतिवेद चार आहुतियां और सात अन्य आहुतियां, आचार्य द्वारा अक्षताधान होम, उसके बाद समिद्धोम तथा वेदकी समस्त अध्यायोंका आचार्य द्वारा मन्त्र पाठ, फिर उत्तर तन्त्र आदि कार्य ही अनुष्ठित होते थे । किन्तु सूत्रकारोंके मतका एवं स्मृतियोंके सिद्धान्तोंका पर्यालोचन करनेसे इस दिन 'गणस्नान' ऋषि-पूजन आदि उपाकर्मके अंगभूत कार्योंके करनेका भी विधान उपलब्ध होता है, जैसे कात्यायनस्मृतिमें लिखा है—

वेदाश्छन्दांसि सर्वाणि ब्रह्माद्याश्च दिवौकसः ।
जलार्थिनोऽपि पितरो मरीच्याद्या महर्षयः ॥
पिपासू ननु गच्छन्ति संहृष्टा ह्यशरीरिणः ।
समवायश्च यत्रैषां तत्रान्ये बह्वोमतः ।
नूनं सर्वे क्षयं यान्ति किमुतैकं मदोरजः ॥

अर्थात् श्रावणीके दिन वेद, छन्द ब्रह्म आदि देवता लोग तथा पितृगण अर्थात् मरीच्यादि महर्षि स्नान करनेके लिए आते हैं । इसलिये प्रत्येक द्विजातिको अपने पाप-प्रक्षालन करनेके लिए अवश्य शास्त्रीय विधिसे स्नान करना चाहिए । इसके "गणस्नान" नाम पड़नेका कारण यही है कि आजके दिन आचार्य वर्ग अपने शिष्योंके साथ स्नान किया करते थे और तदनन्तर ऋषियोंका पूजन करते थे ।

अब विचारणीय विषय यह है कि यह कृत्य द्विजातियों को कब करना चाहिए । इस विषयमें यद्यपि शाखाभेदसे कालभेद है, किन्तु माध्यन्दिनी वाजसनेयी शाखावालोंके लिए पारस्कर गृह्यसूत्रकारने "श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्यां

पञ्चमी हस्तेन वा'' इस सूत्रके द्वारा श्रवण नक्षत्र युक्ता श्रावण मासकी पूर्णिमा एवं हस्त नक्षत्र सहिता इसी मास की पञ्चमीको ही मुख्य काल माना है। इसी बातको पारिजातमें शौनकने इस तरह लिखा है—

श्रावण्यां श्रावणेमासे पञ्चम्यां हस्त संयुते।
दिवसे बिदधीतैतदुपाकर्म यथोदितम् ॥

अर्थात् श्रावणी कर्मके लिए श्रवण नक्षत्र युक्ता पूर्णिमा एवं हस्त नक्षत्र सहिता पंचमी ही उपयुक्त काल है। अतः समस्त द्विजातियोंको इन्हीं दिनोंमें उपाकर्म करना चाहिये।

श्रावणी कर्मके बारेमें सामान्यतया तिथियोंका निर्णय होने पर भी इन तिथियोंमेंसे कौनसी तिथियोंको होना चाहिए? इसके उत्तरमें धर्मशास्त्रके प्रसिद्ध निबन्ध मदनरत्न में लिखा है—'यदिस्याच्छ्रावणं पर्व ग्रहसंक्रान्ति दूषितम्। स्यादुपाकरणं शुक्ल पंचम्यां श्रावणस्य तु।

अर्थात् श्रावणी पूर्णिमा यदि ग्रहण वा संक्रांति दूषित हो तो, उपाकर्म श्रावण शुक्ला ५ मीको करना चाहिए। स्मृति महार्णवमें भी लिखा है—

संक्रान्तिग्रहणं वापि यदि पर्व विजायते।
तन्मासे हस्त युक्तायां पंचम्यां वा तदिष्यते॥

निष्कर्ष यह है, ग्रहण एवं संक्रांति दूषिता श्रावण पूर्णिमा होने पर हस्त नक्षत्र युक्ता पंचमीको श्रावणीकर्म करना चाहिए।

उपसंहार

ऊपरके अवतरणोंसे यह सिद्ध हो गया है कि श्रावणी कर्म पूर्णिमाको ही करना चाहिए, किन्तु उसमें ग्रहण एवं संक्रांति होने पर ५ मी को यह कृत्य करना चाहिए। खेद है बहुतसे लोग शास्त्रीय ज्ञान विमूढ़ों द्वारा बहकाये हुए इस कृत्यको भा० शु० ५ को करते हैं, किन्तु किसी भी धर्मशास्त्रकारने 'ऋषि पंचमी'को श्रावणीका उपयुक्त कारण नहीं माना है। निर्णयसिन्धुकारने इस दिन व्रत रखने, सप्त-कुंभों पर ऋषिप्रतिमाओंका पूजन, १०८ तिलोंकी आहुतियां सप्तब्राह्मण भोजन आदि कर्त्तव्य ही निर्देश किये हैं, किन्तु श्रावणीका कहीं उल्लेख नहीं है। यदि कहीं किया जाता है तो वह अन्ध परम्परा एवं शास्त्रविधि विपरीत होनेके कारण सर्वथा त्याज्य है। श्रीकृष्णने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है—

यः शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥

शास्त्रीय विधिको छोड़कर मनमाने ढंगसे काम करने वाला सिद्धि, सुख और परमगतिको प्राप्त नहीं होता है, इसलिए सबको शास्त्रविधिके अनुसार ही कर्तव्य करना चाहिए, अपने सुभीते एवं अवकाशके मुताबिक नहीं।

सं० २०१४ विक्रमी सन् १९५७-५८ ई० का
"श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग"
[सम्पादक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

इस पचाङ्गमें सदाकी भांति अन्याय अनेक विशेषताएँ तो हैं हीं, साथ ही देशमें कांग्रेस, साम्यवादी, समाजवादी और संघ सभा आदिकी प्रगति कैसी रहेगी? व्यापारकी स्थिति कैसे रहेगी? तीसरा विश्वयुद्ध कब होगा? इत्यादि प्रश्नों का शास्त्रीय आधार पर विवेचनात्मक उत्तर लिखा गया है। सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और व्यापारिक हलचलों के सम्बन्धमें इतना शुद्ध प्रामाणिक भविष्य आपको अन्य किसी पंचाङ्गमें नहीं मिलेगा। इस बार पंचाङ्गमें हर्शल-नेपच्यून नामक नवीन ग्रहोंका फल-विचार, अनुभव सिद्ध मंत्र प्रयोग, सन्तान प्राप्तिका सिद्ध औषधि प्रयोग भी दिया गया है। १२० पृष्ठके इस विशाल पंचाङ्गका मूल्य ॥।=) वा ८७ नये पैसे। डाक रजिस्टरी खर्च॥) अलग। वी० पी० से एक पंचांङ्ग १॥=) में पड़ेगा। अतः जितने अधिक मंगावेंगे उतना ही लाभ रहेगा। थोक व्यापारियों और बुकसेलरोंको भरपूर कमीशन मिलेगा। 'श्रीस्वाध्याय'के साथ ही सं० २०१४ का यह पंचाङ्ग भी मंगाना हो तो रजिस्टरी खर्च सहित कुल ५॥) पांच रु० ७५ नये पैसे मनीआर्डर द्वारा मैनेजर श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश) इस पते पर भेजें।

प्रकाशक— **गोयल ब्रादर्स थोक पुस्तकालय, दरीबां कलां, दिल्ली।**

संजीवनी विद्या के अधिष्ठाता आचार्य शुक्र

[श्री चन्दूलाल जेठालाल व्यास 'मयूख']

संजीवनी विद्याके अधिष्ठाता आचार्य शुक्र दैत्य-दानवोंके गुरु-पद पर प्रतिष्ठित थे और यह उनका असाधारण सौभाग्य कहा जा सकता है। शुक्र हैं विलक्षण बुद्धिके स्वामी। वे दैत्योंको वही सलाह देते रहते थे, जो उनके लिये हितकर हो। आचार्य शुक्रकी छत्रछायाके बिना दैत्यगण देवोंका सामना कर ही कैसे सकते थे। आचार्य शुक्रकी नीति और उनके मार्ग-दर्शनका सम्पूर्ण अनुसरण कर दैत्योंका अभ्युदय तो अवश्य हुआ, किन्तु उनका जीवन स्वभावतः सघन तमोगुणसे घिरा रहा। ऐसे लोगोंके पतनमें देर ही क्या लगती है? यदि दैत्य तमोगुण प्रधान न होते, तो शुक्राचार्यका मार्गदर्शन पाकर वे तीनों लोकोंमें अजेय बन जाते। आचार्य शुक्रका जीवन जितना विचित्र है, उतना ही ज्योतिर्मय भी।

रजोगुणके रथी

शुक्रका स्थान पूर्वमें पंचकोण-मण्डलमें षड् अंगुल पर है। भार्गव-गोत्र है और जन्म स्थान भोजकट देश है। शुक्रका वर्ण श्वेत है और वे वृषभ और तुला-राशिके स्वामी हैं। अग्निकोण और चित्रवर्णके भी अधिपति हैं। वर्ण-दृष्टि से वे ब्राह्मण हैं और लिंग भेदसे स्त्री-संज्ञक। शुक्र जलतत्वके स्वामी हैं और रजोगुणके अधिष्ठाता। उनका अंग सौष्ठव कान्तियुक्त है और सुन्दर आकर्षक उनके नेत्र हैं। वे अधिक कफ-वातयुक्त और काले घुंघराले बालोंसे विभूषित हैं। बीजके विचारसे शुक्र धातुसार रूप है। उनका शयन-स्थानमें निवास है। वे सुदृढ़ परिधेयके धारक हैं। मोती-हीरा उनका ग्रह-द्रव्य है। आचार्य शुक्र वसन्त ऋतुके स्वामी और षट्रसके भी अधिष्ठाता हैं। मंगल, बुध, गुरु और शनि आचार्य के मित्र-ग्रह हैं और सूर्य-चन्द्र शत्रु। राहु-केतु तो उनके शिष्य-जैसे ही हैं और उनके संकेत पर चलते हैं।

महाकालके सचिव-पदपर

भगवान् महाकालका आत्मा सूर्य है; मन चन्द्रमा है; सत्व मंगल है, बुध है उनकी वाणी, ज्ञान और सुख बृहस्पति हैं। शुक्र उनका काम है और शनि दुःख है। शुक्रको 'काल सचिव' की ही उपमा दी जाती है। इनके ज्योतिषशास्त्रमें शुक्र, भृगु, भृगुसुत, सित और आस्फुजित्—ये नाम दिये गये हैं। भृगु-संहिता ग्रन्थके लेखक शुक्रजी ही माने जाते हैं। भृगु-संहिता ज्योतिषका चमत्कारपूर्ण ग्रन्थ है। शुक्रजीके और भी कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं; जिनमें शुक्र नीतिका महत्वपूर्ण स्थान है। शुक्रजी जिन राशियोंके स्वामी हैं, उनमें वृष और तुला-राशियोंमें क्रमशः इ, उ, ए, ओ, बा, बी, बु, बे, बो, रा, री, रु, रे, रो, ता ती, तू और ते अक्षर होते हैं। जिन लोगोंके नामका प्रथमाक्षर उपर्युक्त अक्षरोंमें से कोई हो, तो उसके राशीश आचार्य शुक्र हैं। शुक्रवार उनके लिये शुभ दिन है।

शुक्रास्तकालीन शुभ कार्य अवैध हैं

विवाह, यज्ञोपवीत तथा अन्य सांस्कृतिक कार्य शुक्रोदय-कालमें ही सुसम्पन्न हो सकते हैं। शुक्रके अस्त होते ही 'साहा' बन्द हो जाता है। साहा-रहित विवाहमें शुक्र (बीज) सम्मेलन यथार्थ रूपमें सम्भव नहीं होता। जो विवाह शुक्रास्त कालमें होते हैं, वे या तो कामज होंगे या गान्धर्व अथवा अवैध। महारानी शकुन्तलाका गान्धर्व-विवाह शुक्रास्त-कालमें ही हुआ था; तभी तो भरी सभामें उन्हें महाराज दुष्यन्तके द्वारा अपमानित और तिरष्कृत होना पड़ा था। शुक्रास्त-कालमें विवाह-कार्य वर्जित हैं। साथ ही कूप, तालाब, यज्ञ, तीर्थ-यात्रा आदि कार्य नहीं हो सकते। इसके अतिरिक्त दीर्घकालीन क्षौर, भवन-मन्दिरादिकी प्रतिष्ठा व्रत, विद्यारम्भ, कर्णवेधन, महादान, गुरु-सेवन, तीर्थस्नान, द्विरागमन, हवन, मन्त्रोपदेश, देशाटन (जीवी-काके लिए)—यह कार्य भी शुक्रास्त कालमें अवैध माने गये हैं। बृहस्पति और शुक्र—दोनों आचार्य हैं। अतः इन दोनोंके अभावमें कोई भी शुभ काम वर्जित माना गया है। चित्रित श्वेत वस्त्र, छींट वस्त्र, श्वेत अश्व, श्वेत गाय, हीरा, रजत, अक्षत, सुगन्धित द्रव्य, श्वेत चन्दन, श्वेत कमल, घी, दही, शक्कर, गेहूं, मिश्री, वंशलोचन, वसन्त-

मालिनी, चन्द्रोदय आदि वस्तुओंके साथ आचार्य शुक्रका सीधा या किरणमय सम्बन्ध है। शुक्रवारके दिन इन वस्तुओंको दान स्वरूप देनेसे आचार्यजी परम प्रसन्न होते हैं। शुक्रकी महादशा २० वर्ष तक चलती है। पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा और भरणी नक्षत्रके भुक्तभोग्य कालसे महादशा जानी जा सकती है। कुण्डलीमें स्थान-भेदसे शुक्रजी शुभाशुभ-दोनों ही फल देते हैं।

इन्द्रपुत्रीके सान्निध्यमें

आचार्य शुक्रने महान् कष्ट उठाकर भी अमृत-संजीवनी विद्या प्राप्त की थी। हाथके सहारे अधोमुख रह कर उन्होंने देह-यष्टिको तानकर उग्र तपस्या की थी और इस प्रकारकी तपः साधना करते-करते दीर्घकाल-पर्यन्त वे मात्र धूम्र भक्षण करके ही जीवित रहे। इन्द्रपुत्री जयन्तीकी सेवा-सुश्रूषासे प्रसन्न होकर आचार्य शुक्र कुछ समय तक इन्द्र-दुहिताके सान्निध्यमें ही रहे। इस कालान्तरमें देवगुरु बृहस्पतिने शुक्रजी का स्वरूप धारण कर दैत्य-दानवोंको आचार्य शुक्रके प्रति अभद्र व्यवहार करनेकी प्रेरणा दी। तदुपरान्त शुक्रजीके वापस आने पर अपने प्रति दैत्योंका अभद्र व्यवहार देखकर शुक्रने दैत्योंको शाप दिया कि दैत्य अमृत-संजीवनी विद्याके सम्पूर्ण फलसे वंचित हो जायें। तब तो दैत्यगण बहुत ही घबराये और उन्होंने आचार्य शुक्रका आदर-सत्कार पुनः प्रारम्भ कर दिया।

देवयानी और कच

कालान्तरमें देवताओंके आग्रहसे बृहस्पति-पुत्र कचने संजीवनी विद्याकी प्राप्तिके लिये आचार्य शुक्रके आश्रममें शिष्य-पद स्वीकृत कर निवास किया। वहां शुक्र-कन्या देवयानीका स्नेह कचको अधिकाधिक स्वकीय बनाने लगा। देवगण दैत्योंके जन्मजात शत्रु थे, एतदर्थ वे सुरगुरु-पुत्रको विनष्ट कर देनेकी योजनायें गढ़ने लगे। परन्तु देवी देवयानी के स्नेह-प्रभावसे परिपुष्ट आचार्य शुक्र दैत्योंकी इन नृशंस योजनाओंको विफल कर देते। अन्ततः दैत्योंने भीषण षड्यन्त्रका विधान किया। उन्होंने कचके प्राण ले लिये और उसके शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर उसे जलाकर राख कर दिया। तदुपरान्त उस राखको मदिरामें मिलाकर उन्होंने शुक्राचार्य को पिला दिया। कचके सहवासकी भूखी देवयानीकी दीनता, विकलता और आतुरताको देखकर आचार्य शुक्र अतीव विह्वल हो उठे और समाधिस्थ होकर उन्होंने कचकी स्थिति जान ली। तत्पश्चात् उन्होंने मृत-संजीवनी विद्यासे उदरगत कचको जीवित कर दिया और उसे संजीवनी विद्या की दीक्षा दी। इस प्रकार देवगुरु-पुत्र कच आचार्य शुक्रके उदरके अन्दर ही संजीवनी विद्यासे सुदक्ष होकर आचार्य शुक्रका उदर चीरकर जीवित हुआ और तदनन्तर संजीवन मन्त्रके बलसे उसने शुक्राचार्यको भी सजीव बनाया। देवयानी कचका पत्नीत्व मनसे स्वीकार कर चुकी थी, किन्तु भारतीय संस्कृतिके प्रतीक रूप सुर-गुरु-पुत्र कचने देवयानी को सहोदराके सम्बोधनसे सम्मानित किया। देवयानी हताशा के हुताशनसे प्रज्वलित हो उठी। उसने कचको शाप दिया—"कच ! तुमने मुझको अस्वीकार किया है, अतः मेरा शाप है कि संजीवनी विद्या तुम्हें सिद्धिका फल न देगी।" "देवयानी ! मैं तुम्हारे पिताके उदरमें रह चुका हूं; अतः तुम तो मेरी भगिनी—सहोदरा—हो। पत्नीके रूपमें तुम्हें कैसे स्वीकार कर सकता हूँ ? ऐसा अधर्म मैं क्यों करूं ? गुरुकी दुहिता अर्थात् बहनका पाणिग्रहण कर संस्कृतिका द्रोह करनेकी अपेक्षा तो मैं तुम्हारे शापसे अभिशप्त रहना अधिक पसन्द करता हूं। यह न समझना कि तुम हमारे लिये अग्राह्य हो, इसलिये मैं तुम्हें अस्वीकार कर रहा हूं।"

"तब ?" देवयानीने पूछा।

"तुममें निहित कामबुद्धि ही तुम्हें इस अनर्थकी ओर प्रवृत्त कर रही है; अतः कामनाके वशमें हो जानेवाली हे नारी ! तुम्हारी कामना कालान्तरमें पूरी न होगी—कोई भी ब्राह्मण तुम्हारा पाणि-ग्रहण न करेगा।"

देवयानीके व्यवहारसे दुःखित होकर इस प्रकार बृहस्पति-पुत्र कचने आचार्य शुक्रके आश्रमसे बिदा ली। देवयानीका हृदय भग्न हो गया और कच तथा देवयानीके परस्पर अभिशप्त होने पर शुक्रके हार्दिक क्षोभकी सीमा न रही। विकट मानसिक यातनायें उन्हें दुःखित करने लगीं।

सुरा-पानसे सर्वनाश

आचार्य शुक्रका उदर चीरकर संजीवनी विद्याके प्रतापसे पुनर्जीवन प्राप्त किया और स्वयं आचार्यको भी संजीवनी मन्त्रसे देवगुरु पुत्रने जीवित किया। शुक्रजी सुरापान न करते होते तो दैत्यगण कचकी देहको भस्म कर उसकी

राख शराबमें मिलाकर आचार्यजीको कदापि पिला न सकते। इस दुःखद प्रसंगने शुक्रजीके हृदयमें सुरापानके प्रति घोर घृणाकी भावना भर दी। तभीसे आचार्य शुक्रने द्विजमात्रके लिए सुरा-पानका निषेध किया। उन्होंने स्पष्ट घोषित किया कि सुरा-पान या सुराका स्पर्शमात्र ब्राह्मणके ब्राह्मणत्व और उसकी ब्रह्म-शक्तिका सर्वथा अपहरण कर लेगा। आचार्यने ब्राह्मणोंको शराबका स्पर्श भी न करनेकी शपथ दिलायी—ब्राह्मण-योनिमें जन्म लेकर जो व्यक्ति सुरा-पान करता या कराता है; सुराका विक्रय करता है, सुरा बनाता है अथवा शराबका स्पर्श भी करता है, उस व्यक्तिको मरणान्तक प्रायश्चितका शिकार बनना पड़ता है और कई कल्पतक उसके लिए नरकपातका विधान है। वस्तुस्थिति तो यह है कि सुराकी ओर आकर्षित होने मात्रसे ही ब्राह्मणका ब्राह्मणत्व नष्ट हो जाता है।

संसारका स्वर्ग—मद्य-निषेध

सुरा समाज-जीवनका घातक तत्व है। सुरा-सेवी मानव मानवतासे हाथ धो बैठता है। कलहके अग्नि-कुण्डमें अनेकशः कुटुम्बोंकी सुख-समृद्धि सुरा-पानसे भस्मावशेष हो चुकी है। संवादिताके स्वर्गके स्थान पर संघर्षकी घोर नरक-यातना शराबीके ललाट पर अंकित कर दी जाती है। आचार्य शुक्रका यह आदेश दृष्टिके समक्ष रखकर ही महात्मा गांधीने भारतीय स्वातन्त्र्य-संघर्षमें मद्य-निषेधको प्रथम स्थान दिया था। वे चाहते थे कि भारतीय जन अपने सर्वाङ्गीण कल्याणके लिए मद्य-पानको सर्वथा बहिष्कृत कर दें। स्वतन्त्र भारतके शासन-सूत्रधार भारतको यदि श्री-धी-सम्पन्न और सुख-समृद्धिसे भरपूर राष्ट्र बनाना चाहते हैं; तो उन्हें अविलम्ब अखिल भारतमें मद्य-निषेध विधान लागू कर देना चाहिए। सुराके सम्पूर्ण परित्यागमें ही राष्ट्र और राष्ट्रवासियोंका उत्थान और कल्याण निहित है।

अकल्याणकामीका अकल्याण

आचार्य शुक्रके जीवनसे एक और पाठ भी मिलता है। असुरराज बलि भगवान् वामनजीको साढ़े तीन पग पृथ्वीका दान कर रहे थे। बलि, दानके संकल्पका जल जब अंजलिमें लेने लगे, तब शुक्रजी कमण्डलुसे जलद्वारमें जा बैठे, अपने शिष्यके सर्वनाशको रोकनेके लिए; किन्तु भगवान् वामन कहां प्रतारित हो सकते थे? उन्होंने तुरन्त ही एक दर्भशलाका हाथमें ली और कमण्डलुके जल-द्वारका अवरोध दूर किया। फलतः शुक्रजी एकाक्षी हो गये। उनकी एक आंख फूट गयी। बलिके यज्ञमें भगवान् वामनका आगमन तो देवोंका दुःख दूर करनेके लिए ही हुआ था। असुरराजको पाताल भेजकर वामनजीने अपने इस अवतारका कार्य सम्पन्न किया, बलिके दानमूलक सत्कार्यमें बाधक बननेपर आचार्य शुक्रको अपनी एक आंखसे हाथ धोना पड़ा। तभीसे उन्होंने यह पाठ सीखा कि सदनुष्ठानमें बाधा उत्पन्न करनेवालेका सर्वदा अमंगल ही होता है। आचार्य शुक्रने संसारको यह सिद्धांत-सूत्र दिखला दिया।

ग्रह-मण्डलमें शुक्रका स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे अमृत-संजीवनीके अधिष्ठाता हैं और दैत्योंके आचार्य। आचार्य शुक्रका पृष्ठबल पाये बिना दैत्य-दानवोंको इस जगत्में दीन-हीन और निरीह बनकर ही रहना पड़ता। ऐसे दुस्सह प्रताप और दुर्धर्ष प्रतिभाके अधिपति आचार्य शुक्रकी वन्दना करनी ही चाहिए।

अचूक और अनमोल चान्स

वायदा बाजारमें हमारे स्पैशल चान्स सैण्ट पर सैण्ट ठीक चलते हैं और ऐसे चान्स हम साल भरमें केवल तीन या चार ही बनाते हैं। हमारे पास ऐसे अनेक प्रशंसा पत्र आये हैं कि हमारे स्पैशल चान्स अक्षरशः सत्य निकले। इन चांसों पर काम करनेके लिये अधिक रिस्क या हानिका भय नहीं और ना ही ब्याना अधिक देना पड़ता है, इसमें एसे दिन भी दिये जाते हैं कि नज़राने (तेजी मन्दी) लगाकर ही लम्बी लाइन पकड़ ली जाती है, दैनिक कितना मंदा कितनी तेजी आदि सब स्पष्ट दिया जाता है।

यह चांस चांदी, गुड़, गवारा, मटरा, तेल मूंगफली और अरहरका बनाया गया है जो १४ अगस्त १९५७ से लेकर ४ अक्तूबर १९५७ तकका है। ५१ दिनका चान्स है जिसकी फीस २१।।।) रु० प्रति वस्तु है, जो लाभका दसवां भाग देंगे वह केवल ८।।।) भेजकर मंगवा सकते हैं। हाजिर माल १६।।।) रु०

पता—हंसराज शर्मा ज्योतिषी, सीविल लाइन, लुधियाना

अनी अखाड़े कबसे स्थापित हुए ?

[श्री पं० चन्द्रकान्त शर्मा राजज्योतिषी]

अनी अखाड़े वाले कहते हैं कि हमारे वीर वैष्णव समुदायके अनी अखाड़ोंका इतिहास मिल नहीं रहा है। अखाड़ोंकी रकम रेख, टेक, रखने वाले—छोरा बन्दगीदार, हुरदंगा, नागा आदि ये रकमी महाशय हैं, इत्यादि।

अतः इन अनी अखाड़ोंकी उत्पत्ति इन्हींके कथनानुसार सुन लीजिये—

दक्षिण भारत (केरल) में श्री आद्यशंकराचार्य हुए, इनके पहले कोई मठ अखाड़े नहीं थे। उन्होंने चार मठ स्थापित किये (१) शृंगेरीमठ–रामेश्वर (२) शारदामठ–द्वारकापुरी (३) ज्योतिर्मठ–बद्रीकाश्रम (४) गोवर्धनमठ–जगदीशपुरी। उनके शिष्य दशनामी कहलाये—१. तीर्थ, २. आश्रम, ३. सरस्वती, ४. भारती, ५. गिरि, ६. पुरी, ७. वन, ८. पर्वत, ९. अरण्य, १०. सागर। इनमें से प्रथम चार दण्डी, सन्यासी, मंडलेश्वर, विद्वान् ब्राह्मण ही होते हैं; अन्योंने ६ अखाड़े स्थापित किये, इनका स्थापन क्रम इस प्रकार है—

संज्ञा —	आवाहन	अटल	महानिर्वाण	आनन्द	निरंजनी	जूना	शम्भूदल
वि० संवत्—	६०३	७०३	८०५	९१२	९६०	१२०२	स्मार्त्त
आदर्श इष्ट —	दत्तात्रेय	गणेश	कपिल	अग्नि	कार्तिक	दत्तात्रेय	
प्रतिष्ठान —	काशी	गोंडवाना	वैद्यनाथ	काशी	प्रयाग	कर्णप्रयाग	पंचदेवोपासक

ये लोग अपने आपको स्मार्त्त (पंचदेवोपासक) बतलाते हैं, किन्तु "नमोनारायणाय" (विष्णुपंचायतन) कहते हैं, इन शम्भुवेशधारी (प्रच्छन्न वैष्णव) दल में शैथिल्य आ जाने पर दक्षिण भारतमें ही अनन्य वीरवैष्णव सम्प्रदाय संस्थापक उत्पन्न हुए, इनका स्थापन क्रम इस प्रकार है—

संज्ञा —	रामानुज	माध्व	निम्बार्क	वल्लभ	विष्णुदल
वि० संवत् —	१०७४	१२९५	१३५६	१४३५	भागवत
इष्टोपासना —	नारायण	श्याम सुन्दर	गोपाल	बालकृष्ण	
प्रतिष्ठान —	श्रीरंग	दक्षिण	दक्षिण	चम्पारण्य	वीर वैष्णव

इनके अनुयायी रामानन्द १३५६, विष्णुस्वामी १३ वीं शताब्दी, हरिवंश १५३०, गौडीय चैतन्य १५४२ आदि अनेक हैं, ये अपने आपको भागवत, वीरवैष्णव, विरक्त, निर्मोही आदि कहलानेमें गौरव समझते हैं, इन वीरवैष्णवोंका प्राबल्य मुख्यतया गुप्तकालसे हुआ। इसीकालके बाद अनेक चिरजीवी अभिनव व्यासों द्वारा किंवदन्ती पुराण पुस्तकरूप में संग्रथित हुए, उन सबका सारांश श्रीमद्भागवतमें संगृहीत है।

भारत पर मिधार्मियों एवं विदेशियोंका अधिकार शतियों तक रहा, उन्होंने आर्य संस्कृतिके उन्मूलनार्थ सम्प्रदाय वादको बढ़ावा दिया और मूलभूत त्यागशील आचार्योंके अनुयायियोंको चतुः सम्पत्ति (प्रौढ़सम्पत्ति, धनसम्पत्ति, प्रभुत्व-सम्पत्ति, अज्ञ सम्पत्ति) युक्त बना दिये, इन विरक्त निर्मोही आदि संज्ञावाले संगठित अखिल भारतीय षड्दर्शन वेष भगवान् रूप वैष्णव दलके अनी अखाड़ोंका प्रभुत्व कुम्भस्नान पर शाही स्नानके नामसे प्रकट होता है। ये तीन अनी १८ अखाड़े वाले स्वयं मानते हैं कि हमारे यहां संप्रदाय सम्बन्धी ज्ञान उपासना विषय गौण है, और अखाड़ोंकी रकम रेख, टेक, हठ, रूढ़ीवाद आदि (अज्ञान) विषय प्रधान है। अब ये लोग 'चौरजारशिरोमणि' पुरुष उपासनाकी अपेक्षा, यावत् रम्याउज्वला भगवती श्रीराधिका रूप प्रकृतिके उपासक बन चुके हैं जिसका महात्म्य ब्रह्माण्ड उपपुराणमें (भागवतमें तो कहीं नाम तक नहीं) वर्णित है और अब प्रकट रूपमें श्रीराधावल्लभीय (राधाके प्रेमी) कहलानेमें ही अपना गौरव मानते हैं। भगवतीके अनुग्रहसे पूर्ण चतुः सम्पत्तियुक्त बन चुके हैं: अतः—

✻ नेपचूनका सप्तमभाव पर प्रभाव ✻

[ज्योतिषकलानिधि श्री पं० गोपेशकुमार ओझा M. A, LL. B.]

'श्रीस्वाध्याय' के पिछले अंकमें हर्शलका सप्तम भाव पर क्या प्रभाव होता है, यह बताया जा चुका है। इस लेख में नेपचूनके प्रभावके विषयमें कुछ मोटी-मोटी बातें बतायी जाती हैं।

यदि सप्तम भावमें नेपचून हो तो वैवाहिक सुखके लिये अशुभ योग कारक है। एक अंगरेज लेखक सेफेरियलका मत है कि सप्तम भावमें नेपचून होनेसे पति-पत्नीमें परस्पर धोखा देनेकी प्रवृत्ति होती है—बहुत बार तो ऐसे व्यक्तिसे विवाह हो जाता है—जिसके पति या पत्नी वर्तमान होती है—किन्तु वह अपनेको 'कुमार' या 'कुमारी' बताकर—दूसरेको विवाह संबंधके लिये सन्नद्ध कर लेते हैं। बादमें जब यह धोखेकी बात प्रकट होती है तो सम्बन्ध विच्छेद होनेकी नौबत आती है। इंग्लैण्ड आदि पाश्चात्य देशोंमें एक पत्नी या पति रहते हुए—बिना विवाह विच्छेद किये यदि अन्यसे विवाह कर लिया जावे तो वह गैर कानूनी समझा जाता है। सप्तममें नेपचून इसी प्रकारकी स्थिति उत्पन्न करता है। सेफेरियलके मतसे यदि सप्तम भावमें नेपचून अन्य ग्रहोंसे सप्तम, चतुर्थ वा दशमदृष्टिसे वीक्षित हो या नेपचूनकी क्रूर ग्रहसे युति हो तो यह अनिष्ट प्रभाव अवश्य होता है। पाश्चात्य ज्यौतिषमें अंशात्मक दृष्टि होती है, राशि गणनासे नहीं, यह स्मरण रखना चाहिये।

यदि पंचम स्थानमें सूर्य, चन्द्र, बुध या शुक्र हों और नेपचूनसे युत हों या नेपचून द्वारा चतुर्थ, सप्तम, दशम दृष्टिसे वीक्षित हों तो ऐसे मनुष्यको अपने घरके वातावरण में शांति या सुख उपलब्ध नहीं होता। यदि किसीसे प्रेम-सम्बन्ध (कोर्ट शिप) हुआ तो विवाह की नौबत नहीं आती, बीचमें कोई विघ्न-बाधा उपस्थित हो जाती है और विवाह नहीं हो पाता।

"पेटी चीवर पट्टवस्त्रपटल श्वेतातपत्रच्छटा शाटि हारक घोटक स्फुटघटाटोपाय तुभ्यं नमः।
येनाऽनक्षर कुक्षयोपि जगतः कुर्वन्ति सर्वज्ञता भ्रान्तिं येन विना तु हास्य पदवीं सन्तोऽपि कष्टंगताः" ॥१॥

शंकर वेषधारियों (शम्भुदल) ने प्रति तृतीय वर्ष (संवत्सर) में अमाके दिन कुम्भ पर्वोंको अपनाया तो इन विरक्त नामधारियों (विष्णुदल) ने प्रति द्वादश संवत्सरमें पूर्णिमाके दिन पुष्कर तीर्थोंको अपनाया, किन्तु इस समय इन पक्षान्त-स्नान (कुम्भ पुष्कर) भेदोंको न समझ एक ही कुम्भके नामसे मानने लग गये हैं। प्रयाग एवं हरद्वार स्थान पर विद्वान् संन्यासियोंके प्राधान्यके कारण अब भी कुंभपर्व काल किसी-न-किसी रूपमें प्रचलित हैं। किन्तु उज्जैन एवं नासिक क्षेत्रों पर कुम्भके स्थानमें पुष्कर स्नानकी प्रतिष्ठा कर लेनेमें ये लोग सफल प्रयत्न हो चुके हैं, और इसी बल पर रूढ़ीवाद परम्परा सरकारी कागजात इनके प्रधान शास्त्र प्रमाण बन गये हैं। इनकी अज्ञसम्पित्तिकी इयत्ता देखिये कि ये अपने ही पोषक संरक्षक संन्यासाश्रमके विद्वान् धर्मरक्षक श्रीकरपात्रीजी जैसेके विषयमें अनेक अनर्गल शब्दोंका प्रयोग करनेमें नहीं हिचकते। इतना ही नहीं अपने इष्टदेव श्रीकृष्णके विद्यागुरु उज्जैन निवासी महर्षि श्रीसान्दीपनके वंशज ज्यौतिषाचार्य व्यासबन्धुओं के प्रति भी अपने मुंहसे अपशब्द निर्यात करनेमें संकोच नहीं करते। समाज सुधारक स्वामी श्रीदयानन्दजीने अपने सत्यार्थ-प्रकाशमें इनका चरित्र चित्रण कर दिया है वह पूराका पूरा चरितार्थ है। किन्तु अब इनको सावधान हो जाना चाहिए कारण कि "अखिल भारत साधु समाज" की स्थापना हो चुकी है, प्रत्युत अब तक हरद्वार, बिहार, बम्बई, अयोध्या, वृन्दावन, ऋषीकेश, राजस्थान, पंजाब, महागुजरात, नासिक एवं मध्यप्रदेशमें तो शाखा सभायें भी स्थापित हो चुकी हैं और यह प्रयास इन्हींके हितमें है, किन्तु अरुचिकर होने पर भी इस समाजका स्वास्थ्य ठीक करना ही होगा—"कड़वी भेषज बिन पिये मिटे न तनकी ताप।" फिर भी यह आधिभौतिक व्याधि नहीं है, यह तो आध्यात्मिक आधि है और "सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्" अतः मनोविज्ञानके चिकित्सकों को इस पर विचार करना है।

———

यदि चन्द्रमा तथा पचूनमें अशुभ दृष्टि हो तो भी मनमें चंचलता तथा अस्थिरताके कारण स्थायी प्रेम नहीं हो पाता। यद्यपि नेपचूनका बहुतसे भारतीय विद्वान् 'वरुण' नामसे उल्लेख करने लगे हैं–किन्तु वास्तवमें यह वरुण नहीं है। हां 'जलमय' होनेके कारण चंचलता या तरलता इसका विशेष गुण है और चन्द्रमा मनका अधिष्ठाता है। इस कारण चन्द्रमा तथा नेपचूनका किसी कुंडलीमें अशुभ सम्बन्ध हो तो चित्तमें चंचलता होनेके कारण वैवाहिक सुखमें बाधा उपस्थित होती है। नीचे एक स्त्रीकी कुंडली दी जाती है:–

अंगरेजी ज्यौतिषमें राहु, केतुका फलितमें विचार नहीं किया जाता। इस कारण उपर्युक्त कुंडलीमें राहु केतु नहीं दिये गये हैं, लग्नके १२ अंश, सूर्यके २२, चन्द्रमाके १४, मंगलके ६, बुधके २८, बृहस्पतिके २८, शुक्रके १२, शनिके २६, हर्शलके २६ तथा नेपचूनके २१ अंश हैं।

सप्तमेश सप्तममें हैं। बृहस्पति भी वहां हैं। इस स्त्रीके तीन विवाह हुए। सेफेरियलने लिखा है कि यह स्त्री १७ वें वर्ष किसी व्यक्तिके साथ भाग गई। फिर किसी अन्य मनुष्यसे विवाह किया। जिसके साथ विवाह किया था उससे सम्बन्ध–विच्छेद कर लिया और जिसके साथ भागी थी उससे विवाह किया। तृतीय वार विवाह ४६ वें वर्षकी उम्रमें किया। वह अंगरेज ज्यौतिषी इन वैवाहिक विच्छेदका कारण निम्नलिखित योगों को बताते हैं:—

(क) चन्द्र–नेपचूनयुति

(ख) बृहस्पति तथा शुक्र (सप्तम स्थान स्थित) ग्रहोंका नेपचूनसे अशुभ (चतुर्थ-दशम) सम्बन्ध।

(ग) हर्शल तथा शनिका अशुभ (चतुर्थ-दशम) सम्बन्ध।

(देखिये सेफेरियलकी "ज्यौतिष तथा विवाह" नामक पुस्तक पृष्ठ ४१),

प्रसिद्ध अंगरेज ज्यौतिषी एलेन लिओने लिखा है कि पंचम भावमें नेपचून होनेसे जातककी विवाह किये बिना अन्यथा सम्बन्ध करनेकी प्रवृत्ति विशेष पाई जाती है। ऐसे मनुष्यमें पाशविक प्रवृत्ति विशेष होती है और उसके स्नेहमें सौजन्य तथा सद्भावना कम होती है––इन्द्रिय लिप्सा विशेष।

आगे चलकर उसने लिखा है कि सप्तम भावमें तो नेपचून इतनी अधिक गड़बड़ करता है कि यदि अशुभ ग्रहों से पीड़ित हो तो विवाह न करना ही अच्छा है।

(देखिये How to Judge a Nativity पृ० १८६)

अब नेपचूनका, भिन्न-भिन्न भावोंमें होनेसे क्या-क्या प्रभाव वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, यह बताया जाता है:—

(१) प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ भावमें सप्तमेशके साथ यदि नेपचून हो तो अशुभ परिणाम, यदि स्त्रियोंकी जन्म कुंडलीमें सूर्यके साथ नेपचून हो या उपर्युक्त स्थानोंमें स्थित होकर सूर्यसे अशुभ सम्बन्ध करें तो वैवाहिक सुखके लिये विशेष अनिष्ट। पुरुषकी कुंडलियोंमें चन्द्रमासे अशुभ सम्बन्ध विशेष अनिष्ट होता है।

(२) सूर्य तथा नेपचून दोनों पंचममें हो तो प्रेम सम्बन्ध में अनेक कष्ट–विघ्न बाधा उपस्थित होते हैं। विवाह हो भी जावे तो भी बहुत करके विवाह-विच्छेदकी नौबत आवेगी। ऐसा ही सप्तम भावका फल समझना।

सूर्य जन्म कुंडलीमें कहीं हो––यदि नेपचूनसे त्रिकोण सम्बन्ध (नवम-पंचमदृष्टि) करता हो तो ऐसा व्यक्ति विलासी तथा सांसारिक सुख-साधनोंका विशेष इच्छुक रहता है। किन्तु सूर्य तथा नेपचूनकी अशुभ दृष्टि या युति हो तो जातक अत्यधिक भोगी या व्यभिचारी होता है।

(३) चन्द्रमा तथा नेपचून पंचममें एक साथ हों तो प्रेम-सम्बन्धमें परिणामतः निराशा होती है।

(४) यदि मंगल तथा नेपचून पंचममें हो तो भी प्रेम-सम्बन्धमें परिणाममें निराशा होती है।

(५) यदि मंगल नेपचून योग स्त्रीकी कुंडलीमें कहीं भी हो तो बृहज्जातकके २२ वें अध्यायके ७ वें श्लोकमें जो

फल कहा गया है, प्रायः उसी प्रकारका फल स्त्रियोंमें होता है : "स्त्रिभिः स्त्रीमदन विषानलं प्रदीप्तं संशन्ति नयति......" यदि पुरुषोंकी कुंडलीमें यह योग हो तो उनमें भी किसी प्रकारकी अप्राकृतिक प्रवृत्तिकारक होगा।

(६) शुक्र तथा नेपचूनका शुभ सम्बन्ध हो तो मनुष्य अपने प्रिय पात्रके सम्बन्धमें सुखद कल्पना किया करता है– जिसका, कल्पनाके अनुरूप सफल परिणाम होना न होना अन्य ग्रह स्थिति पर निर्भर है। यदि शुक्र-नेपचूनमें सप्तम या चतुर्थ-दशम दृष्टि हो, तो अनेक जगह गुप्त प्रेमके कारण अनिष्ट घटना घटित होती है—परिणाम अशुभ तथा निराशा उत्पन्न करने वाला होता है।

(७) एकादश स्थानमें नेपचून यदि अशुभ ग्रहोंसे युत या वीक्षित हो तो ऐसे मनुष्योंको मित्रोंसे धोखा होता है। यदि सप्तमेश क्रूरग्रह हो और एकादश भावस्थित नेपचूनसे अशुभ सम्बन्ध करे तो संभव है स्त्री-पक्ष या स्त्री-पक्षके लोगोंसे धोखा हो। स्त्रीग्रह हो तो किसी स्त्रीसे धोखा, यदि पुरुषग्रह हो तो पुरुषसे धोखा, इस सामान्य नियमको भी स्मरण रखना चाहिये।

नेपचूनका या किसी भी ग्रहके प्रभावका क्या फल होगा, यह विचार करते समय देश, काल, पात्रका विचार अवश्य रखना चाहिये। इंग्लैण्ड आदि देशोंमें ज्यौतिषी पाश्चात्य देशोंमें सामाजिक प्रथाके अनुसार विवाह-विच्छेद आदि फल बताते हैं, किन्तु भारतवर्षमें सामाजिक मर्यादा भिन्न होनेके कारण उस रूपमें फल घटित नहीं होते, इस कारण नेपचूनका प्रभाव क्या होगा–यह फलादेश करते समय देश, काल, पात्रका विचार अवश्य कर लेना चाहिये।

नीचे सुप्रसिद्ध नर्तकी श्रीमती नलिनी जयवन्तकी चन्द्र-कुण्डली दी जाती है। जन्म तारीख १८ फरवरी १९२६।

शुक्र तथा चन्द्रमाकी नेपचूनसे सप्तम दृष्टि है। इनका विवाह १८ मई १९४४ को हुआ। सितम्बर १९५३ में विवाह-विच्छेदका प्रार्थना-पत्र दिया गया और १२-२-१९५४ को विवाह-विच्छेद हो गया।

एक अन्य स्त्रीकी चन्द्र-कुण्डली नीचे दी जाती है; जन्म तारीख २२-३-१९२९ ई०।

नेपचून-चन्द्रका अशुभ योग है। सूर्य तथा हर्शलकी भी अशुभ युति है। ४-१-१९५४ को विवाह हुआ। १४-५-१९५४ को विवाह-विच्छेदका प्रार्थना-पत्र दिया गया और ३०-५-१९५४ को विवाह-विच्छेद स्वीकृत हुआ। यह भी एक प्रसिद्ध नर्तकीकी कुंडली है।

यद्यपि थोड़ी-सी नर्तकियोंकी कुंडलियोंसे ज्यौतिष-शास्त्र सम्बन्धी नियम नहीं निकाले जा सकते, तथापि इन कुंडलियोंको इस लेखमें देनेका प्रयोजन केवल यही है कि नेपचूनका अनिष्ट प्रभाव—पाश्चात्य दैवज्ञोंने—वैवाहिक जीवन पर माना है। हमारे भारतीय ज्यौतिषियोंको उचित है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियोंकी कुंडलियोंमें सप्तम भाव, सप्तमेश या शुक्र पीड़ित या अशुभ ग्रहाक्रान्त या निर्बल नहीं है—उन कुंडलियोंमें यदि वैवाहिक कष्ट, सुखका अभाव अथवा पति-पत्नीमें मनोमालिन्य दृष्टिगत हो तो कृपया अनुसन्धान करें कि हर्शल तथा नेपचूनका कोई अशुभ सम्बन्ध तो नहीं है।

———

अब 'श्रीस्वाध्याय'
वी० पी० से नहीं भेजा जायेगा
मूल्य मनीआर्डरसे भेजिये

अनुभूत-योग-माला

(लेखक—राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्त राजज्यौतिषी)

(हेमन्ताङ्कसे आगे)

१. जन्म-समयमें चन्द्रमासे केन्द्रमें बृहस्पति होनेसे गजकेसरी योग होता है। गजकेसरी योगमें उत्पन्न तेजस्वी धनवान् बुद्धिमान् गुण-संपन्न और राज-प्रिय होता है।

केन्द्रस्थिते देवगुरौ मृगाङ्का-
द्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ॥
गजकेसरि संजातस्तेजस्वी धनवान् भवेत्।
मेधावी गुणसंपन्नो राजप्रियकरस्तथा ॥
(बृहत्पाराशर होरा)

उपपत्तिः—चन्द्रमा बृहस्पतिकी उच्च राशिका स्वामी है। इसलिए वह बृहस्पतिकी शक्ति बढ़ानेवाला है। बृहस्पति की उच्चराशि चन्द्रमाका स्वगृह है। इसलिए वह चन्द्रमाकी शक्ति बढ़ानेवाला है।

ये दोनों ग्रह सत्त्व गुणात्मक शुभ ग्रह हैं।

चन्द्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्की
यथाक्रमं सत्त्व रजस्तमांसि ॥

इसलिए इनका सम्बन्ध विशेष शुभ फल देनेवाला प्रतीत होता है। चन्द्रमा बृहस्पतिका विशिष्ट सम्बन्ध करने वाली कर्कराशि सृष्टिलग्न-मेषसे चतुर्थ है। प्रथम स्थानसे चतुर्थ चतुर्थ स्थान, चतुर्थ स्थानसे चतुर्थ सप्तम स्थान, सप्तम स्थानसे चतुर्थ दशम स्थान, दशम स्थानसे चतुर्थ प्रथम स्थान, इस प्रकार केन्द्र स्थान उत्तरोत्तर चतुर्थ हैं। इसलिए यहां चन्द्रमा और बृहस्पतिका केन्द्र-सम्बन्ध अपेक्षित है।

चन्द्रमा आधान-लग्न होता है।

आधानेन्दुः समं जनिलग्नम्। (संकेतनिधि)

इसलिए वह शरीरका अधिष्ठाता है। इसलिए उसका विशिष्ट शुभग्रह बृहस्पतिके साथ केन्द्र-सम्बन्ध शरीरका तेज बढ़ानेवाला है। अतएव गजकेसरी योगमें उत्पन्न तेजस्वी होता है।

बृहस्पति द्वितीय स्थानका कारक है।

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यौ।
(जातकपारिजात)

द्वितीयस्थान धनस्थान है। इसलिए बृहस्पति धन-कारक है।

चन्द्रमा मनका भी अधिष्ठाता है।

मनस्तु हिमगुः (बृहज्जातक)

शरीर और मनके अधिष्ठाता चन्द्रमाके साथ धन-कारक बृहस्पतिका सम्बन्ध धन देनेवाला सिद्ध होता है। इसलिये गजकेसरी योगमें उत्पन्न धनवान् होता है।

बृहस्पति ज्ञानका अधिष्ठाता है।

जीवो ज्ञानसुखे (बृहज्जातक)

इसलिए मनके अधिष्ठाता चन्द्रमाके साथ उसका सम्बन्ध बुद्धिमत्ता करनेवाला होता है। अतएव गजकेसरी योगमें उत्पन्न बुद्धिमान् होता है।

बृहस्पति देवगुरु होनेसे गुण-सम्पन्न है। इसलिए शरीर और मनके अधिष्ठाता चन्द्रमाके साथ उसका सम्बन्ध गुण-सम्पत्ति देनेवाला है। अतएव गजकेसरी योगमें उत्पन्न गुण-सम्पन्न होता है।

बृहस्पति देवराज इन्द्रका मंत्री होनेसे राज-प्रिय है। इसलिए शरीर और मनके अधिष्ठाता चन्द्रमाके साथ उसका सम्बन्ध राजाकी प्रीति करनेवाला होता है। अतएव गज-केसरी योगमें उत्पन्न राज-प्रिय होता है।

हाथी धनवानोंके घरमें निवास करनेवाला गुण-सम्पन्न और बुद्धिमान् होता है। सिंह तेजस्वी होता है। इसलिए इस योगका नाम गजकेसरी है।

एक महापुरुषकी कुण्डलीमें मीन राशिमें चन्द्रमा और धनुर्धर राशिमें बृहस्पति होनेसे गजकेसरी योग है। एक राज-मंत्रीकी कुण्डलीमें वृष राशिमें चन्द्रमा और सिंह राशि में बृहस्पति होनेसे गजकेसरी योग है। एक उन्नति प्राप्त व्यक्तिकी कुण्डलीमें तुला राशिमें चन्द्रमा और मेष राशिमें बृहस्पति होनेसे गजकेसरी योग है।

इस लेखका साररूप बृहत्पाराशरहोराके श्लोकार्द्धसे सहित स्वनिर्मित श्लोकार्द्ध :—

स्वक्षेत्रमिन्दोर्गुरु तुङ्गराशि-
स्तुर्यं यतः सृष्टिविलग्नगेहात्।
केन्द्रस्थिते देवगुरौ मृगाङ्का-
द्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ॥

———

स्वास्थ्यप्रद अमूल्य औषधि—

हरीतकी (हरड़) रसायन

आयुर्विज्ञानशास्त्रमें लिखा है कि—'सर्वेषामेवरोगाणां निदानं कुपिता मलाः'' अर्थात् सब रोगोंके मूल कारण बिगड़े हुए मल ही हैं। जिसमें विशेष उल्लेखनीय उदर-मल है। आजकल अधिकांश व्यक्ति प्रायः यही कहते सुने जाते हैं कि 'उन्हें मलावरोध (कब्ज) रहता है, पाचनक्रिया ठीक नहीं, भूख नहीं लगती, शिर वा पेटमें पीड़ा रहती है' आदि २। इन सब व्याधियोंको शान्त करनेके लिए हरीतकी (हरड़) सर्वसुलभ सर्वोत्तम महौषधि है। हरड़का भिन्न-भिन्न ऋतुओंमें अनुपान भेदसे सेवनक्रम हमारे परमस्नेही आयुर्वेदजगत्के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं० मनोहरलाल जी वैद्यराज महोदय (दिल्ली) ने 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लाभार्थ दिया वह हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। हरड़की उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है कि—देवताओं के अमृतपान करते हुए कुछ बूंदे पृथ्वी पर गिरीं, उसीसे हरीतकीकी उत्पत्ति हुई, अतः अमृतोपमगुण इसमें विद्यमान है, इसीलिए कहा गया है—''कदाचित् कुप्यति माता नोदरस्था हरीतकी।''

यह सब मानते हैं कि यदि हरड़ समयके अनुसार विधिपूर्वक ली जाये तो मनुष्य कभी रोगी नहीं हो सकता। प्रत्येक ऋतुमें हरीतकी (हरड़) के सेवनका प्रयोग निम्नांकित है—

१—वर्षा ऋतुमें

छोटी हरड़का चूर्ण कपड़-छन करके चतुर्थांश सेंधा नमक मिलाकर ४ माशेकी मात्रा रात्रिमें गरम पानीसे लिया जाय तो कब्ज; बलगमी खांसी, बवासीर, पेट का दर्द, भूख न लगना, आदि रोग नष्ट होते हैं। १० से २० दिन तक ले सकते हैं।

२—शरद् ऋतुमें—

छोटी हरड़का चूर्ण कपड़छन करके समानांश मिश्री मिलाकर ४ माशेकी मात्रामें गरम पानीसे लें तो—पित्त विकार, जलन, मूत्रकृच्छ, पित्ताशयका विकृत होना, पित्त जनित उदर विकार शान्त होते हैं।

३—हेमन्त ऋतुमें

छोटी हरड़के चूर्णमें सौंठका चूर्ण आधा भाग मिला कर गरम पानीसे लें तो शीत व्याधि, गठिया, जोड़ोंका दर्द, अजीर्ण, उदरशूल, पेचिस, पेटका अफरना, आदि समस्त उदर विकार शांत होते हैं।

४—शिशिर ऋतुमें

हरड़के चूर्णमें छोटी पीपलका चूर्ण $\frac{1}{4}$ चतुर्थांश मिला कर गर्म पानीसे लें तो शीत व्याधि, शीत ज्वर सर्दीकी खांसी, नजला, सीनेका दर्द, अजीर्ण मन्दाग्नि विशेष कर ठंडसे चढ़ने वाला ज्वर व बलगमी खांसीमें लाभदायक है।

५—वसन्त ऋतुमें

हरड़का चूर्ण दो माशेमें दुगुना शहद मिलाकर चाटें तो बलगम, श्वास, खांसी बलगमी, बुखार, जुकाम, शिरदर्दको शान्त करती हैं एवं जुकाममें बन्द नाकके बलगम को साफ करती है।

६—ग्रीष्म ऋतुमें

हरड़का चूर्ण कपड़ छन करके दुगुना (१ साल पुराना) गुड़ मिलाकर १ माशेकी गोली बना लें; प्रातः सायं और रात्रिमें उबाले हुए कवोष्ण पानीसे १ गोली लें, १० दिन तक तो समस्त वात रोग, पेटका फूलना वायुसे मलका सूख कर कब्ज होना, सूखी खांसी, लू लग जाना, हैजा, मौसमी बुखार भूख न लगना आदि समस्त विकारोंको शान्त करता है।

इस प्रकार छ ओं ऋतुओंमें हरड़ सेवन करनेसे शरीर पूर्ण स्वस्थ रहता है कोई रोग फटकने नहीं पाता।

——

❋ कारक सूत्र विवेचन ❋

[श्री पं० नारायण शास्त्री चुलेट]

(गताङ्कसे आगे)

उपयोगी कोष्ठक

खंड	द्वा.भाव	द्वादश राशियां	द्वा. ग्रह	प्रकृति	तत्व	कर्म	संज्ञा
१	प्रथम	मेष	रवि	सत्व	अग्नि	उत्क्षेपण	पुरुष
२	द्वितीय	वृषभ	चन्द्र	राजस तम	जल	आकुंचन	प्रकृति
३	तृतीय	मिथुन	मंगल	सत्व, रज	वायु	गमन	पुरुष
४	चतुर्थ	कर्क	पृथ्वी	राजस्	आकाश	प्रसारण	प्रकृति
५	पंचम	सिंह	गुरु	सत्व	अग्नि	उत्क्षेपण	पुरुष
६	षष्ट	कन्या	राहु	तामस	पार्थिव	अपक्षेपण	प्रकृति
७	सप्तम	तुला	बुध	सत्व+रज	वायु	गमन	पुरुष
८	अष्टम	वृश्चिक	शनि	तामस	पार्थिव	अपक्षेपण	प्रकृति
९	नवम	धनुः	इन्द्र	सत्व	अग्नि	उत्क्षेपण	पुरुष
१०	दशम	मकर	शुक्र	राजस	आकाश	प्रसारण	प्रकृति
११	एकादश	कुम्भ	वरुण	सत्व+रज	वायु	गमन	पुषष
१२	द्वादश	मीन	यम	रज+तम	जल	आकुंचन	प्रकृति

सूत्र—"चक्रे पंचप्रवृत्तयः ॥९॥
चन्द्रिका—सभी चक्रमें पांच प्रवृत्तियां होती हैं।

"सूत्र—उदयास्तात्त्रिकोणद्वयम् ॥१०॥
चन्द्रिका—उदय (प्रथम भाग) अस्त (सप्तम भाग) से आरम्भ दो त्रिकोण वृत्ति चक्र सिद्ध होते हैं।

सूत्र—"दक्षिणोत्तरा केन्द्र वृत्तिः ॥११॥
चन्द्रिका—दक्षिण (दशम भाग) उत्तर (चतुर्थ भाग) केन्द्र वृत्ति स्वरूपमें हैं।

सूत्र—"पूर्वापराविवृत्तिः ॥१२॥
चन्द्रिका—केन्द्र रेखासे पूर्व (द्वितीय, द्वादश भाग)

(षष्ठ अष्टम भाग) विवृत्ति रेखा रूप हैं।

सूत्र—पूर्वस्या परा निकृष्टा ॥१३॥

चन्द्रिका—पूर्व (प्रथम) वृत्ति (त्रिकोण-केन्द्र रूप) से पर इसी प्रकार पूर्व वृत्ति-विवृत्तिसे पर विवृत्ति-निकृष्ट (बलहीन) है।

उपपत्ति—सूत्रकारने भैरवीचक्रका वर्णन करते हुए चक्रके प्रथम सूत्रमें प्रवृत्ति शब्दका उच्चारण किया है। इस हेतु इस चक्र-व्याख्या चक्र-विभाजनको प्रवृत्ति चक्रके नामसे भी पुकारा जा सकता है। यहां प्रवृत्ति शब्द क्रियात्मक अर्थोंका वाचक माना जायगा।

चक्र वर्णनमें—त्रिकोण-केन्द्र वृत्ति विवृत्ति संज्ञायें मानी हैं। यहां सूत्रकारका आशय त्रिगुणात्मक सत्व-राजस् तामस् प्रकृति स्वरूपसे आभासित होता है। तथा दो त्रिकोण वृत्ति, एक केन्द्र वृत्ति, दो विवृत्तियां क्रियोत्पादक पंचमहाभूत द्रव्य पिण्डोंके अर्थको स्पष्ट-सा करती हैं।

यहां, सूत्रकारका आशय प्रथम त्रिकोणको पूर्ण एवं परा विवृत्तिको शून्य बली मानना है। अतएव "पूर्वस्यापरा निकृष्टा" सूत्रकी रचना करनी पड़ी।

सूत्रकारने पूर्वाचार्योंके अनुसार ही एक चक्रके द्वादश विभागको स्वीकार है, उसी प्रकार एकत्वादि भागोंको प्रथमादि भावात्मक अर्थोंसे सम्बद्ध माना है। यहां प्रवृत्ति चक्रका विशेष विवेचन जिसे "सुख साध्य" न्यायसे ग्रहण किया जाय, इस अवस्था में—

(क) प्रथम त्रिकोण—सत्व प्रकृति रूप, अग्नि संयोजक, उत्क्षेपणीय क्रियावान् है।

(ख) द्वितीय त्रिकोण—सत्व+रजस् प्रकृति रूप, वायु संयोजक, गतिमति क्रियाका उत्पादक है।

(ग) केन्द्रवृत्ति—राजस् प्रकृति रूप, आकाश-शून्यार्थ-संयोजक, प्रसारण क्रियाकी उद्‌बोधक है।

(घ) प्रथम विवृत्ति—राजस्+तामस प्रकृति रूप, जल (रसादि द्रव्य) संयोजक, आकर्षण (आकुञ्चन) क्रियाके अर्थ में है।

(ङ) द्वितीय विवृत्ति—तमो रूपा, पार्थिव योजिका, अपक्षेपण (निःसारण) क्रियावती है।

विशेष—प्रस्तुत व्याख्यामें दोनों त्रिकोणवृत्त पुरुष तथा केन्द्र वृत्ति, विवृत्तियां स्त्री संज्ञाके बोधक हैं।

सूत्र—तच्च सर्वत्र द्वादशांशे ॥१३॥

चन्द्रिका—वह चक्र और उसका प्रवृत्ति स्वरूप जहां भी द्वादशांश विभाजन हो—में सर्वत्र समान माना जायगा।

उपपत्ति—इस सूत्रकी रचना रव्यादि क्रमबद्ध ग्रहों एवं मेषादि राशियोंके प्रति राशि द्वादशीय भागों आदिमें प्रवृत्तिचक्रकी व्यवस्था दिखानेके हेतु की गई है।

इस अंकके सम्बन्धमें

श्रीस्वाध्यायका प्रत्येक साधारण अंक भी कभी ७ फार्म (५६ पृष्ठ) से कमका नहीं निकला कई बार ६४ और ७२ पृष्ठ भी दिये हैं। इस बार दिल्लीमें इन्फ्लूएञ्जा रोगसे प्रेस कर्मचारी भी अभी तक ग्रस्त हैं, अतः कम्पोज और छपाई यथापूर्व शीघ्र न हो सकी। इस कारण यह अंक ६ फार्म (४८ पृष्ठ) में ही येनकेन प्रकारेण पूर्ण करके ठीक समय पर आषाढ़ शु० दशमी ता० ६ जुलाईको पाठकोंकी सेवामें पहुँचाया जा रहा है। आठ पृष्ठ और छपनेमें अधिक विलम्ब होता और ग्राहक रुष्ट होते अत: समय पर भेजना ही उचित समझा। —व्यवस्थापक

लाभका अपूर्व अवसर

चांदी सोना रुई जूट पाट बारदाना रेशम सरसों अलसी अरंडी मूंगफली बिनौला अरहर मटर गेहूं चना कठोल तेवड़ा खेसारी चावल गुड़, घी, वैजीटेबल घी उड़द मुंग मक्कामें तूफानी डबल फेरका स्पष्ट चांस पूरा कोर्स दो मास ५१।।=) मासिक २५।।=) पाक्षिक १२।।=) साप्ताहिक बतोर नमूना ७।।=) मासिक पत्र 'भविष्यदर्पण' वार्षिक मूल्य ५) एक अंकका १) मनिआर्डर करके मंगाएं। वी० पी० किसी भी वस्तुकी नहीं की जाती। पत्रोत्तर भी जबाबी कार्डको पाकर ही दिया जायगा। अतः व्यर्थ लिखा पढ़ी न करें। फीचरके स्पेशल चांसकी फीस ५।।=) मनि-आर्डर करें।

पता:—

राजाराम जैन ज्योतिषी
मैनपुरी (यू० पी०)

* तीन मासकी अनुभूत तेजीमन्दी *

[श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

गुड़

१६ जौलाई से २३ जौलाई तक मार्केट तेज रहेगी
२४ " " ३१ " " " मंदी "
१ अगस्त " ६ अगस्त " " तेज "
७ " " २० " " " घटबढ़ "
२१ " " २ सितम्बर " " नर्म "
३ सितम्बर " ८ " " " तेज "
९ " " १७ " " " मंदी "
१८ " " २८ " " " तेज "
२९ " " १४ अक्तूबर " " मंदी "

सरसों

१६ जौलाई से २४ जौलाई तक मार्केट तेज ॥) रहेगी
२५ " " १४ अगस्त " " मंदी २) "
१६ " " २३ " " " घटबढ़ "
२४ " " ८ सितम्बर " " तेज २) "
९ सितम्बर " ४ अक्तूबर " " मंदी ॥) "
५ अक्तुबर " २० " " " तेज ।॥) "

अलसी

१६ जौलाई को मार्केट मंदी में चलेगी।
१७ जौलाई से २२ जौलाई तक मार्केट तेज होगी
२३ " " २५ अगस्त " " मंदी "
२६ " " ३ सितम्बर " " तेज "
४ सितम्बर " ८ " " " विशेष तेज "
९ " " २ अक्तूबर " " दोरंगी "
३ अक्तूबर " ९ " " " मंदी "
१० " " १६ " " " तेज "

रुई

१६ जौलाई से २३ जौलाई तक मार्केट तेज रहेगी
२४ " " २५ अगस्त " " विशेष मंदी "
२६ अगस्त " ८ सितम्बर " " तेज "
९ सितम्बर " २३ " " " घटबढ़ "
२४ " " १५ अक्तूबर " " मंदी "

स्वर्ण

१६ जौलाई से २४ जौलाई तक मार्केट तेज रहेगी
२५ " " २७ " " " मंदी "
२८ " " ८ अगस्त " " घटबढ़ "
९ अगस्त " ८ सितम्बर " " तेज "
९ सितम्बर " १३ " " " घटबढ़ "
१४ " " २२ " " " तेज "
२३ " " १५ अक्तूबर " " विशेष मंदी "

चाँदी

१६ जौलाई को मार्केट मंदी रहेगी।
१७ जौलाई से २४ जौलाई तक तेज होगी
२५ " " ८ अगस्त " मंदी "
९ अगस्त " ११ " " तेज "
१२ " " २२ " " मंदी "
२३ " " २ सितम्बर " तेज "
३ सितम्बर " १५ अक्तूबर " मंदी होगी।

'श्रीसनातनधर्मालोकका पंचम पुष्प'

चिर प्रतीक्षित पञ्चम पुष्प प्रकाशित हो गया। इसमें १६ संस्कारों तथा हिन्दु धर्मके आचारों तथा पर्वोंके वैज्ञानिक रहस्य बताये गये हैं। इसमें 'गणानां त्वा' मन्त्रके महीधरभाष्य पर भी विचार किया गया है। मूल्य ८॥) डाक व्यय १॥) कुल १०) की वी० पी० है। धड़ाधड़ बिक रहा है। पता—

श्री पं० दीनानाथ शास्त्री सारस्वत

रामदल, दरीबाकलां, दिल्ली—६

ज्योतिषकी दृष्टिसे त्रैमासिक तेजी मंदी विचार

आषाढ़ शु० १० ता० ६ जुलाईसे आश्विन शु० ६ ता० २ अक्तूबर तक

[श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिर्विभूषण]

ज्योतिष गणित शस्त्रानुसार इन तीन महीनोंमें प्रारंभ में सुपीरियर लाइन ता० ४ जौलाईसे ही चालू होकर ता० ६ सितम्बर तक चलेगी, यह लाइन सामूहिक रूपसे मंदी कारक होती है, तदनन्तर ६ सितम्बरसे ता० २४ अक्तूबर तक इन्फीरियर लाइन चलेगी यह लाइन तेजी कारक ज्योतिष शास्त्रके नियमसे मानी जाती है, पर इस उपरोक्त इतने लम्बे समयके अन्दर तेजीमें मंदी कारक ग्रह और मन्दीकी लाइनमें तेजी कारक ग्रह भिन्न-भिन्न वस्तुओंमें सम्पन्न होते रहेंगे, उनमेंसे कुछ एकका संक्षिप्त वर्णन हम यहां लिख रहे हैं।

यहां ता० १२ जौलाईको ग्रह गणितके हिसाबसे कर्क राशिमें शुक्र और भौम ग्रहका अंशात्मक योग होनेसे वस्तुओंके मंदे भाव फिर और भी एक बार अचानक ही मंदे होकर स्टेडी हो सकेंगे, इसलिये ता० ६ जौलाईसे १५ जुलाईमें जनरल पीरियड मन्देका रहनेसे गुड़, खांड, चीनी, सूत, रुई, अरंडा, तिलहनों तथा किराना और इंडस्ट्रियल मैटीरियलमें मंदी आयेगी, परन्तु इसी पीरियड में चना, मटर, गेहूं, जौ, जुवार, गुवारके स्थिर भाव रहेंगे, चांदी, सोना, मूंग, उड़द, मूंगफली और वनास्पतीमें मंदीका कुछ रियक्शन आकर ता० ११ जुलाईके बाद तेजीकी प्रतिक्रिया होगी। यहां मंगल ग्रह नीच राशिका होने के कारण योगकालमें दबा रहकर तत्काल ही बलवान् बन जायेगा। नैसर्गिक नियमसे भौम ग्रह सेनानायकोंको विजेता बनाता है अतः पूर्वोत्तरीय सेना नायकोंकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

श्रावण सं० २०१४ वि०

श्रावणमें पांच शुक्रवार, उत्तरमें नीर वर्षा कारक तथा चांदी, सोना, रुई और बारदानामें मंदी करेगा और इसी महीनेमें पांच शनिवार होनेसे घी, गुड़, सरसों, खांड, अरण्डा, सींगदाना, तोरिया मन्दे होकर तेज होंगे। इस मासमें सिंह पर शुक्रका आना और संक्रान्ति तथा चांद दर्शन १५ मुहूर्ती होनेसे जोरदार मंदीमें तेजीका बोल बाला (इन ग्रहोंके दीप्तांशकोंसे बाहर होने पर) उड़द, मूंग मजीठ, गेहूं, चना, जौ, तुवर आदिमें होगा और खंड वृष्टि राजस्थान, बंगाल, मारवाड़ और पश्चिमी पेप्सू, हिमाचल-प्रदेशमें होगी क्योंकि सूर्यसे भौमका आगे होना वृष्टिका अवरोध करता रहेगा। जैसे एक ज्योतिषीकी कहावत है कि—

आगे मंगल पीछे भान, वर्षा होवे ओस समान ॥

भविष्यमें ध्यान रखिये कि वर्षाकी खेंच और भी आगे होगी इसलिये अनाज तथा तिलहन और रस गुड़ आदि पदार्थोंमें तेजी बार-बार भड़केगी, पर इसी योगका असर चांदी, सोने, लोह पदार्थोंमें भारी मंदेका पड़ जायेगा, यह ध्यान रखना। एक अन्य योगसे श्रावण वदी १ ता० १२ जुलाई से १६ जुलाई तक चांदी, सोना, रूई, अरण्डा, सींगदाना, तोरिया, आयरन, सूत, सरसों तथा बारदाना घी में तेजी होकर मंदी होगी, बाजारमें दुतर्फा घटाबढ़ी होगी पर सारांश मंदेमें जायेगा। ता० १३ को १॥ बजे हाईयेस्ट भाव दुबारा बनें तो गुड़, चांदी, मटर, ग्वार बेचकर १६ जुलाई तक लाभ उठाना। ता० १६ को कर्कैः होनेसे नेपच्यून जो मार्गी ११ जुलाई पर हुआ था दस कलासे आगे बढ़नेके फलस्वरूप जोरदार मंदी यहां हो या स्थिर भाव आपको मिलें तो यहां अन्तिम आज कलमें जानकर खरीद करके हफ्तेमें ही हाथों-हाथ लाभ लें, यह एक इस महीनेका खास चांस है। सूर्य नेपच्यून बुधसे सम्बन्धित वस्तु यहां एक तर्फा लाइन पर जावेंगी। यहां इण्डस्ट्रियल शेयरों में तेजी ज्यादा चमकेगी। इसी जुलाईमें ही सायन-ज्योतिष सिद्धान्तसे पंचग्रह एक राशि पर भिन्न-भिन्न तारीखोंमें सिंह राशिमें परिभ्रमण करके ता० २६ जुलाईके

बाद सिंह राशिको छोड़ने लगेंगे, उसी समय धमाकेकी मंदियां आने लगेंगी, यहां हर उछालेमें खाद्य विक्रेता अवश्य लाभ उठायेंगे, शेयरों तथा इंडस्ट्रियल वस्तुओंके अलावा धातुओंमें जोरदार मंदियां आयेंगी।

भविष्यवाणी धारणा जुलाई १९५७

१९५७ में १≡)॥ या १॥−)॥ की घटबढ़ गुड़ और मटर ॥=)॥ से १।)॥ रु० लाहा में १॥) से २) तककी चांदीमें ७) से ११) रु० तककी होगी। रूई में ११) से १८) तक घटाबढ़ी हो जानेकी धारणा है। विशेष रूपसे गुड़में १≡) या १॥=) का मार्केट चल जाने पर ऊंचे भाव लेकर फंस नहीं जाना बल्कि तारूणी करना १ से ३१ जुलाई तक भाव लौट फेर होकर मंदे आयेंगे और १ से ३१ तकके भावोंमें प्रथम मंदी फिर ऊंची नीची आकर ।−) या ॥−) के रियक्शन तेजीके बेचानको लाभ देंगे।

श्रावण शुदिमें ५ बुधवार भौम अस्त तेजी कारक और आज ही पूफायां भृगु मंदी कारक अतः कल की लाइन ५ दिन एक तर्फा चलेगी। श्रावण शुदि एकादशी भौमवार उत्तरा का गुरु मन्दा कारक रहेगा।

भाद्रपद सं० २०१४ वि०

भाद्रपद मास ता० ११ अगस्तको शुरू होगा और ९ सितम्बरको समाप्त होगा। इस मासमें पांच रविवार तथा पांच सोमवार हैं अतः स्वर्ण, चांदी, अरण्डा, तोरिया, पीतल, शेयर तथा लौंग, मैथी, हैशियन, सूत, रूई, कपड़ा, जूट, चावल, पाट, शक्कर, गुड़ तेज होकर मन्दा होगा और चना, गुवार, मटर, गेहूँ, धान्य सब मंदे होंगे, और मालवेकी अफीम कुछ तेजी पर जायेगी। इस मासमें भादों कृष्णा १ ता० ११ अगस्तको शनि मार्गी होनेसे गुड़, ग्वार, मटर, चांदीकी मंदीमें एक दम तेजी होगी। १३ अगस्तसे १६ अगस्त तक हर वस्तु तेज होकर मंदी होगी। ता० १७ अगस्तको यदि मंदी चली तो २० तक गुड़, ग्वार, चांदी, पीतल, लोहा, मेथी, लौंग, चना आदि सभी वस्तुओंमें मंदी चलेगी। (विपरीत लाइन चले तो सावधान अपोजिट लाइनमें रहें) २० अगस्तको मंगलवार और शनिके केन्द्र योगसे वस्तुओंके विशेष मन्दे भावोंमें तेजीकी झलक दिखाई देने लगेगी, खास कर धातु पदार्थोंमें विशेष तेजी होगी। २२ अगस्तको गुरु शुक्रका योग भी इसी फलकी पुष्टि करने वाला समझना चाहिये। २१ अगस्तको बुध ग्रह दक्षिण क्रान्तिवृत्तके दक्षिण विक्षेपमें परिभ्रमण करना आरम्भ करेगा, बुध ग्रहके इस परिभ्रमणका पीरियड ७ सितम्बर तक रहेगा। ७ सितम्बरको फिर उत्तर क्रान्तिवृत्तके उत्तर विक्षेपमें चलना आरम्भ करके ९ अक्तूबर तक सामान्य घट बढ़में तेजियोंको पुष्ट करता रहेगा। भादों शुदि ३ से ता० २८ अगस्तसे २९ तक चांदी शेयर आयरन तथा गुड़, मटर, ग्वार, चना तेज होगा, भादों शुदि ६ ता० ३० से ९ सितम्बर तक हर वस्तु मंदी होगी। गुड़, गुवार, मटर, तोरिया, सूत, लोहा शेयर तेजीमें बेचान वाले लाभ उठायेंगे।

धारणा—अगस्त १९५७ ई० में ४ से ९ या विशेष चालमें १६ टके और मटरमें ॥॥=) से १≡)॥ लाहामें १=) से १॥) अरण्डा तेलमें ३) गुड़में १।=)॥ से १॥=)॥ मन तक बाजारमें घटा बढ़ी होगी इतनी ऊंची या नीची तेजी या मंदी आने पर ले या बेच कर फंसना नहीं क्योंकि वायदा मार्केट इतना चल जाने पर लौट अवश्य लेगा धारणा तेजीमें एक दम मन्दीकी है।

असौज सं २०१४ वि०

इस मासमें पांच भौमवार हैं और कृष्ण पक्षकी त्रयोदशी तिथि घटी है, गुरुदेव अस्त तथा बुध ग्रह उदय होंगे अतः इस मासमें मन्दीका निचोड़ अवश्य ही होगा। किसी वस्तुमें रुपयेकी धैली रहकर तेजी आयेगी। ता० १० सितम्बरको यह मास आरम्भ होगा और ता० ८ अक्तूबरको समाप्त होगा, इस मासके आरम्भमें आसौज बदी १ ता० १० सितम्बरको बुध इनफीरियर होकर चलेगा अतः तमाम जनरल वस्तुओंके स्टेडी भाव नीचे उतरे हुये होंगे, गुड़ मटर ग्वार चांदी शेयर लोहपदार्थ हैशियन जूट पाट लाख चमड़ा मंदा होने पर यहां खरीदो अर्थात् ता० ११ सितम्बर बदी २ से ता० १३ तक तेजी आयेगी, बीच-बीच में रियक्शन आयेंगे, चांदी बदी ५ पर लेकर ३ दिनमें मोटा लाभ उठाना। ता० १४ सितम्बर तक जो वस्तु मन्दी होंगी उन्हींमें ता० १८ सितम्बरसे तेजी आने लगेगी और तैयारी लाहा ऊँची रहेगी सट्टा नीचा रहेगा

आसोज बदी दशमी ता० १६ सितम्बरसे गुड़ मटर ग्वार तेल लोहा चांदी आदि तथा खाद्य मूल वस्तुओंमें जोरदार तेजी चलेगी। यहां रियक्शन पर व्यापार नहीं करें वरना भाव हाथ नहीं आयेंगे। नोट—विपरीत चले तो सौदा डबल करना आसौज सुदि द्वितीयाको चांद दर्शन तेजी कारक रहेगा। २३ सितम्बरकी रातसे २२ दिसम्बरके सवेरे तक दक्षिण अयनमें चलता हुआ सूर्य दक्षिण क्रांतिवान् रहेगा, क्रांतिवृत्तके नियमसे ग्रीन्विचके समस्त पश्चिमी देश दक्षिण अमेरिका अफ्रीका टापुओंमें भाव फल प्रकाशमें आयेगा। सर्व साधारण प्रजागणोंकी भी आर्थिक परिस्थिति निर्बल बनी रहेगी, अर्थाभावके कारण कई एक सरकारी और व्यापारियोंके नवीनतम उद्योग अधूरे पड़े रहेंगे। बुध सहित पीरियडके आरम्भमें चन्द्रमाके बारहवें स्थानमें रहनेसे इस पीरियडमें भी व्यापारिक वस्तुओंके अधिकतर महर्घके पीरियड आयेंगे जिससे व्यापारियोंके धनकी वृद्धि होनेके सुयोग बनेंगे और व्यापारी समाजमें सर्वत्र हर्षोल्लास दिखाई देगा। आसोज शुदि ४ ता० २७ से गुड़ चांदी सोना सूत सरसों तोरिया मूंगफलीमें मंदी यहां पर बारदाना पंसारट जीरा मिर्च मेथी इसी प्रकार ज्यादा तेज होंगे। ता० १ अक्तूबरसे ता० ३ अक्तूबर आसौज शुदि १० तक गुड़ ग्वार मटर तोरिया सरसों अभरक जूट पाट रुई चांदी मंदी होगी। ता० ४ से ८ अक्तूबरमें तेजी आयेगी, अगर ५ अक्तूबरके नीचे भावसे)॥ पैसा भी मार्केट डाऊन जाये तो अभी मंदीका ही ऐलान समझें वरना तेजीका १६ आने जानें। यहां ३ दिनमें गुड़में ।=)। से ॥−)। मन चांदीमें २॥) रु०की मटरमें ≡)। आनेसे ≡)॥ की लाइन निकल पड़ेगी। आसौज शुदि १३ ता० ६ अक्तूबर तक जो वस्तु मन्दी रहे उन्हें ही खरीदना पूर्णमासी तक तेजी उन्हीं वस्तुओंमें जोरदार आयेगी विपरीतमें विपरीत चाल जानें।

धारणा—सितम्बर १९५७ में विशेष रूपसे १=) से १॥।) तकको घटबढ़ होगी और लाइनका जोर ही ज्यादा रहेगा पर ये धारणा है कि इतनी तेजी मंदी आने पर पलट का व्यापार भी करते रहें, क्योंकि घटाबढ़ी होगी, भाव दोनों ओरके मिलते रहेंगे, तेजी मंदी चलनेके तीन या चार ही चांस आयेंगे, रोजाना तेजी मंदी न फलेगी। मंदीका निचोड़ इस मासमें होगा नीचे भावमें नहीं बेचना मटर गुवार चनामें ॥≡) से १=) तक लाइन चलेगी लाहा अरडामें १॥=) से २॥) तक चलेगी।

वायदा-बाजार-भविष्य

६ जुलाई से ३ अक्तूबर १९५७ तक

[श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिषाचार्य]

इस समयमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रहयोग इस प्रकार है—"पहले तो यह कि इस समयमें २१ सितम्बरकी रात्रिके ८ बजे तक मंगलका रथ सूर्यके रथसे आगे आगे चलता है"। इससे वर्षा कहीं अति अधिक होगी और कहीं कहीं बून्द भी नहीं पड़ेगी।—

आगल मंगल रथ रहे, पाछे रथ हुई भानु।
उन मिर्यों यों हरि हत, रसै जलै कौं धान॥
जब लग पाछे न मुरत, रवि ते मंगल रास।
तो लौं परत न बिंदुघन, मुरे तो घन हि बिलास॥

मंगल २८ जुलाईसे अस्त हो रहा है, बुध २७ अगस्तसे १६ सितम्बर तक वक्री रहता है, नैपच्यून ११ जुलाईकी रात्रिमें मार्गी हो रहा है और शनि १२ अगस्तको प्रातः मार्गी हो रहा है, इस प्रकार १२ अगस्तके पश्चात् नवम्बर तक बुधके अतिरिक्त कोई भी ग्रह वक्री नहीं रहता।

६ जुलाईसे ही वायदा बाज़ारमें घटाबढ़ी चलेगी, और सरसों, अलसी, मूंगफली, रुई तथा चांदीके भावमें तेजीका प्रभाव पड़ेगा। गुड़, अरहर तथा मूंगके भाव मन्देके प्रभावमें रहेंगे। उसके पश्चात् कर्क संक्रान्ति १६ जुलाईको

मंगलवारी ३० मुहूर्ती है जो वास्तवमें ३० मुहूर्तीका फल न करके लगभग प्रत्येक वस्तुमें ही तेजीका प्रभाव करेगी, इस तेजीका अधिक प्रभाव धान पर होगा। इस समयमें शुक्र १४ अगस्त तक शत्रु राशिमें रहता है, इस समयमें गुड़की लम्बी लाईन अवश्य ही मन्देकी रहेगी और भरपूर तेजीके पश्चात् बिकवाली करने वाले ही अच्छा लाभ उठावेंगे।

बृहस्पति इस समयमें कन्या राशिमें रहता है, चने तथा मटरा आदि में तेजीका प्रभाव करता है, इससे जो ऊंचे भाव चनेके इस वर्ष बनेंगे वह अगले वर्ष कदापि नहीं आवेंगे। इन तीन मासोंमें चने तथा मटरामें लिवालीमें ही रहना उचित होगा, परन्तु १६ सितम्बरसे इसमें भी मन्देकी लाइन बनेगी।

इस त्रैमासिक अवधिमें कुछ ऐसे दिन भी हैं जिनमें लग भग सभी वस्तुओंके भाव अकस्मात् ही काफी चलेंगे और इन दिनोंमें नज़राने वाले भी अच्छे रहेंगे, इनका तेजी तथा मन्देका रहना उस समयकी लम्बी लाईन पर ही आधारित है। १५, १८ तथा २५ जुलाई, ६, १२ तथा १६ अगस्त, ३,४,७,१४ और ३० सितम्बरको भाव काफी घटा बढ़ीमें खुलेंगे।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे दिन भी हैं जिनमें भाव अधिक नहीं चलेंगे और थोड़े थोड़े दोनों ओर ही चलेंगे, ११ से १४ जुलाई, ४ से ८ अगस्त, २८ अगस्त से २ सितम्बर और २५ से २८ सितम्बर।

६ सितम्बरसे गुड़के भावमें अकस्मात् ही तेजीकी लाईन चलेगी और इस दिन भाव काफी बढ़ कर खुलेंगे जो १७ सितम्बर तक अच्छी तेजी रहकर ३ अक्टूबर तक यह लाईन चालू रहेगी। इस प्रकार जो भाव ६ सितम्बर तक होंगे वह भाव ३ अक्टूबर तक बननेकी आशा नहीं।

बाजार सराफामें प्रतिक्रिया आने पर भी तेजीकी ही लाईन बनी रहेगी और बिकवालीमें रहने वाले किसी भी समय काफी हानि उठा सकते हैं, और लिवाली वालोंको रियेक्शन आने पर भी वह भाव मिलते ही रहेंगे। १२ सितम्बरको खरीद करके ३ अक्टूबरके पश्चात् किसी समय बेचनेसे अच्छा लाभ होगा।

रूईके वायदामें १५ जुलाईसे किसी भी समय अच्छी तेजी चलेगी जो ३६ दिनकी दृढ़ लाईन बनायेगी, फिर पूर्ण पक्ष (१५) मन्दा या दोतरफा रह कर ६ सितम्बर से फिर तेजीकी ही लाईन बनेगी।

तेल मूंगफली तथा तेलके बीज (सरसों अलसी तथा बिनौलाके अतिरिक्त) शनिके मार्गी होने पर भाद्रोंमें मन्देकी लाईन बनेगी और मन्दा काफी होगा। इसके अतिरिक्त मन्देकी भारी आशा नहीं।

इस सम्वत्में भाद्रोंसे पौष तकका समय वायदा बाजार के लिये महत्त्वपूर्ण है और इस समयमें यदि यह कहें कि मार्केट काफी दीवानी रहेगी तो अनुचित न होगा, इसलिये लाभ तथा हानिका भार अपने ऊपर ही जान कर व्यापार करना चाहिए।

तीन मासका व्यापार भविष्य

[श्री प्रोफेसर बी० सी० महता एम० आर० एस०]

यह लेख पाठकोंके सम्मुख जुलाईके दूसरे सप्ताहमें अवश्य पहुंच जायेगा। इस समय मंगल अपनी नीच राशिसे प्रसार हो रहा है इसलिये विशेष बड़ी तेजीकी सम्भावना कम है फिर भी हर मन्दीमें खरीदकर बेचने वाले को फायदा जरूर होगा। ता० १३ जुलाईको गुरु तथा शनि ग्रहका "क्लिनिक्स" योग बन रहा है। यहांसे ता० १६ जुलाई तक फोर्सकी तेजी तमाम बाजारोंमें आ सकती है। गुड़, गुवार मटरा, तेलवाना, सोना, चांदी सबमें तेजीका बोलवाला रहेगा। ता० १६ के बाद धीरे धीरे तेजीका फोर्स कम हो जावेगा तथा महीनेके आखिरी सप्ताहमें झटकेकी मन्दी आ जावेगी। तमाम बाजार नाज तेलवाला आदि मन्दा रह जावेगा।

अगस्त १९५७ ई०

अगस्त मासके प्रारम्भमें तीन चार दिन मन्दीका बोलवाला रहेगा और फिर बाजारका रुख तेजीकी तरफ फिरेगा। ता० ९ से १२-१३ अगस्त तक अच्छी तेजी सब बाजारोंमें आ सकती है। फिर शनि ग्रह मार्गी होता है तथा मंगल ग्रह अस्त सो बहुत सावधानी पूर्वक व्यापार करना चाहिये। कई बार इस प्रकारके योगोंमें फोर्सकी मन्दी देखनेमें आई है। ता० २१ अगस्तको मं० स्क्वायर शनि होता है जो मन्दी समाप्त करके तेजीकी तरफ रुख करता है जो जिन जिन जिन्सोंके बाजार ता० २१ तक घट जावे उनमें तेजीका व्यापार करने वालोंको विशेष लाभकी आशा हैं। ता० २२ से ३१ के बीच बाजारोंका रुख घटाबढ़ीके साथ तेजीकी तरफ ही रहेगा, चांदी, सोना भी बढ़ेगा :

सितम्बर १९५७ ई०

सितम्बरमासके प्रारम्भमें सूर्य सिंहराशिमें प्रसार कर रहे हैं। तथा शुक्र राहु तुलामें इन योगगोंसे दुतरफी घटाबढ़ी होगी। ता० १२ सितम्बरसे १९ सितम्बरके बीच एक मन्दीका झटका जनरल बाजारोंमें आ सकता है और यहांसे फिर सू० गु० मं० तीनों ग्रह कन्या राशिमें इकट्ठे होते हैं, तथा गुरु ग्रह अस्त होता है, सो बड़ी भारी घटाबढ़ी इस पीरियडमें हो सकती है। प्रत्येक बाजारमें सुर्खी आवेगी। चांदी, सोना, शेयर, तेलवाना, नाज, रुई, कपास, गुड़, गुवार, मटरा आदि सब बाजारोंमें तेजीका फोर्स बढ़ता जावेगा।

अनुभव सिद्ध व्यापारिक निर्णय

[ज्योतिषरत्न श्री पं० राजाराम जैन सामुद्रिक वेत्ता, सम्पादक—'भविष्यदर्पण']

सभी वस्तुयें आज ६ जुलाईको दिनभर तेज रह कर सायं ५ बजेसे मन्दी होने लगेगी। ७ जुलाई सार्पे भौम: से शनिका वेध ६ दिनमें रुई बारदान तेज, अन्य सभी ही वस्तुयें मन्दी होती रहेंगी। ८ जुलाईको शीघ्रगामी बुधका गुरुसे चरण वेध रुई बारदाना कल तक तेज अन्य वस्तुयें मन्दी होंगी। ९ जुलाई सूर्य राहु त्रिकोणसे बम्बई वायदे तेज, सायं शीघ्रगामी कर्के बुधः चांदी सोना अन्नादि तेज, रात्रि को ७-३० बजे अश्लेषायां सितः से शनिका वेध अन्न तेलके बीज गुड़में तेजी, रुई बारदाना सोना मन्दा होगा। १० जुलाई को तेज वस्तुएं बेचना ही उचित है। ११ जुलाई प्रातः पुष्ये बुधः वस्तु मात्र मंदी करेगा। पौने दो बजे विशाखायां [illegible]हुका शनि[illegible] चरणवेध आगे धीरे धीरे तेजीकी [illegible]च्छी लायन बना सकेगा।

गुरुवारी आषाढ़ी [illegible]र्णिमाको दिन रात बादल रहे, सूर्य चन्द्रमा न दीखे, साथ ही उत्तर पूर्व पश्चिमका पवन सूर्यास्त कालमें व प्रायः हर समय चले, तो हाईड्रोजन बमके अब तकके उत्पातोंका नाश होगा। कारण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र भी आज है। पूर्वसे दक्षिण पश्चिमोत्तर वायुका घुमाव श्रेष्ठ, विपरीत नेष्ट, वायु शान्त रहना श्रेष्ठ, साथ ही आजका दिन व रात सुखकर प्रतीत हों तो आगे अन्न इसी वर्षमें इतना अधिक उत्पन्न होगा कि गत दो वर्षकी कमीकी भी पूर्ति हो सकेगी, ऐसी पूर्ण आशा है। आग्नेय नैऋत्य वायव्यकी वायु चलना महानेष्ट होता है। ईशानकी वायु चलना अन्नके कोठे भर देगी। नोट करें अब हाईड्रोजन बमके उत्पात होनेकी भी कोई आशा नहीं है। तेलके बीज ११ जुलाई तक प्रायः पड़े भावमें या तेज से रहेंगे। चांदी यदि ९ जुलाईको तेज रही तो ६ जुलाई तक तेज, मन्दी रही तो मन्दी होगी। अन्नादि १ से ३ तक तेज, ४ से ११ तक मन्दे होंगे। रातको ८ बजे मार्गी नेपच्यून बाजारकी रंगतको एकदम ही बदल देगा चतुर व्यापारी तेजीकी गली लगावें। १२ जुलाईको वस्तु मात्र [illegible] [illegible]दाना सायं ७ बजे [illegible] मन्दी करता रहेगा। कानपुर बारदाना आषाढ़ बन्द या तो ५) ६) मन्दा होगा अन्यथा आगे ९८॥) तक बन जाना सम्भव है। १३ जुलाईको तिथिकी वृद्धि वस्तु मात्रमें ही तेजीका भड़का लावेगी, १४ जुलाईको रविवार धनिष्ठा नक्षत्रमें तेजी बनी रहेगी। १५ जुलाईको शुक्र-राहुका केन्द्र

इस वर्षमें धन उपार्जनका मार्ग बनेगा। चैत्रमें व्यापारिक यात्रा, व्यय अधिक हो। वैशाखमें व्यापार उद्योग मन्दा, मित्र शत्रु बनें। ज्येष्ठमें शरीर पीड़ा, अधिक व्यय, आर्थिक चिन्ता। आषाढ़में स्त्री चिन्ता, मित्रोंसे विरोध तथा लाभ खर्च समान, श्रावणमें यात्रा, लाभ न्यून, व्यय अधिक, भाद्रपदमें व्यापार बढ़े, नौकरीमें बदली, अधिकारियोंसे वैर। आश्विन मासमें व्यय अधिक, आर्थिक तंगी और व्यापारमें हानि। कार्तिकमें उद्योग द्वारा नूतन व्यापारसे लाभ हो। मार्गशीर्षमें उत्तम लाभ, व्यवसाय बढ़े। पौषमें आर्थिक प्रापंचिक चिन्ता, प्रवास। माघमें लाभखर्च समान, कौटुम्बिक चिन्ता तथा शत्रु कष्ट। फाल्गुन और चैत्रमें प्रकृतिमें खराबी, श्रम अधिक करना पड़े, लाभ श्रेष्ठ।

वृश्चिक—वर्षारम्भसे ही आपको शनि बारहवें साढ़े सातीमें चल रहे हैं। वैशाख कृष्णपक्षसे गुरु अष्टममें प्रवेश करेंगे। यह वर्ष आपको बहुत ही अशांतिकारक व्यतीत होगा, अनेक बाधाएं तथा चिन्ताएँ उपस्थित होंगी, इसलिए सावधानी तथा धैर्यसे समय व्यतीत करना लाभ प्रद होगा। चैत्र मासमें आर्थिक चिन्ता अधिक, मित्रोंसे कटुता बढ़े। वैशाखमें व्यय अधिक प्रमाणमें बढ़े। ज्येष्ठ में राज्यसे चिन्ता, शुभ कार्योंमें बाधाएँ उत्पन्न हों। आषाढ़ में प्रवाससे हानि वा व्यय अधिक, व्यापार में परिवर्तन। श्रावणमें धार्मिक व्यय और व्यापारसे लाभ हो। भाद्रपदमें बन्धुओं व मित्रोंसे क्लेश, राजकीय व्यय आश्विन और कार्तिकमें नये कारोबारसे लाभ हो। मार्गशीर्ष और पौषमें व्यापारिक चिन्ताएँ तथा मानसिक कष्ट व कौटुम्बिक क्लेश। माघ फाल्गुनमें व्यापार श्रेष्ठ तथा राज्यपक्षसे लाभ, स्त्री पुत्र चिन्ता। चैत्रमें उद्योगमें वृद्धि और लाभ उत्तम, धार्मिक यात्राओंमें व्यय होगा।

धनुः—वर्षारम्भसे वैशाख कृष्णके आरम्भमें गुरु सप्तम आ रहे हैं और शनिदेव ग्यारहवें चल रहे हैं। यह वर्ष आपको भाग्योन्नतिकारक रहेगा, वर्षके उत्तरार्धमें उत्तम लाभके योग बन रहे हैं। चैत्रसे नया व्यापार कार्यारम्भ होगा, प्रथम दो मास चैत्र और वैशाख मध्यम रहेंगे। ज्येष्ठ में उत्तम लाभ, उद्योग, व्यापारकी बढ़ती हो। आषाढ़में लाभ श्रेष्ठ, कौटुम्बिक खर्च बढ़े। श्रावणमें लाभ श्रेष्ठ किंतु शरीरको कष्टकारक है। भाद्रपदमें मन्दीके व्यापारसे लाभ आय-व्यय बराबर। आश्विन कार्तिक लाभकी दृष्टिसे श्रेष्ठ हैं। मार्गशीर्षमें यात्रा और व्यापारसे लाभ, मार्गशीर्षमें चोरसे हानि, सावधान रहें। पौष और माघ मास लाभके लिए श्रेष्ठ हैं। फाल्गुनमें उन्नति, लाभ श्रेष्ठ, राज्यसे मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो, चैत्र कृष्णमें व्यय अधिक हो, यात्रा में कष्ट होवे। इस समयमें व्यावसायिक विषयों पर ध्यानपूर्ण रूपसे देना चाहिए। यह वर्ष व्यापारसे लाभके लिए उत्तम है।

मकर—इस वर्षमें वर्षारम्भ के बैसाख कृष्णपक्षसे गुरु छठे मानसिक चिन्ताकारक और शनि दसवें नये व्यापार में उन्नतिकारक रहेंगे। किन्तु राहु बारहवें आपको अति. नेष्ट है, इसके द्वारा अधिक व्यय अपमान, स्त्री पुत्रादिकों से कष्ट, मनको सन्ताप, अनेक कारणोंसे धनका व्यय होगा। और अधिक क्रोध उत्पन्न होनेसे आर्थिक हानि होना सम्भव है, इसलिए आप वर्षारम्भके समयसे ही राहुकी शान्ति करें और गोमेद रत्न धारण करें। चैत्र बैसाख मासमें व्यय अधिक होकर राजकीय चिन्ता उत्पन्न होगी। ज्येष्ठ, आषाढ़ में उद्योग द्वारा लाभ तथा उत्साहकी वृद्धि हो। श्रावण, भाद्रपदमें लाभ व्यय बराबर तथा शत्रुओंकी बढ़ती हो। आश्विन और कार्तिक मास अधिक व्ययकारक और स्वास्थ्यके लिए मध्यम है। मार्गशीर्षमें मानप्रतिष्ठा व नये व्यापारसे लाभ हो। पौष माघ मासमें लाभ श्रेष्ठ, व्यापार में तरक्की तथा शत्रुओंसे विजय। फाल्गुन और चैत्र कृष्ण पक्षमें मित्रोंसे हानि, व्यापारकी वृद्धि, यात्रामें कष्ट, स्वजनोंसे मानभंग एवं हानि होना सम्भव है, सावधान कटु वाक्य (वाणी) का प्रयोग न करें।

कुम्भ—वर्षारम्भ के बैशाख कृष्णपक्षसे गुरु पांचवें अतिश्रेष्ठ आ रहे हैं। इनके द्वारा विद्या उन्नति एवं नवीन व्यापार संचालनसे विशेष लाभ होगा। वर्षारम्भसे ही नौवें शनि चालू रहेंगे, इसके द्वारा ईर्षा, द्वेष निकट सम्बन्धियों से कलह हो, और आर्थिक संकट विशेष रूपसे उत्पन्न होगा। मनके विचारोंको सदैव परिवर्तन करता रहेगा। इससे आपका चला हुआ व्यापार बिगड़नेकी सम्भावना है। शनिका दान, पूजन करना लाभदायक होगा। विशेष शुभ फलकारक राहु आपको ग्यारहवें अतिश्रेष्ठ हैं। यह वर्ष के उत्तरार्धमें आपकी आर्थिक समस्याओंकी पूर्ति कर देगा,

अगस्त १९५७ ई०

अगस्त मासके प्रारम्भमें तीन चार दिन मन्दीका बोलवाला रहेगा और फिर बाजारका रुख तेजीकी तरफ फिरेगा। ता० ६ से १२-१३ अगस्त तक अच्छी तेजी सब बाजारोंमें आ सकती है। फिर शनि ग्रह मार्गी होता है तथा मंगल ग्रह अस्त सो बहुत सावधानी पूर्वक व्यापार करना चाहिये। कई बार इस प्रकारके योगोंमें फोर्सकी मन्दी देखनेमें आई है। ता० २१ अगस्तको मं० स्क्वायर शनि होता है जो मन्दी समाप्त करके तेजीकी तरफ रुख करता है जो जिन जिन जिन्सोंके बाजार ता० २१ तक घट जावे उनमें तेजीका व्यापार करने वालोंको विशेष लाभकी आशा हैं। ता० २२ से ३१ के बीच बाजारोंका रुख घटाबढ़ीके साथ तेजीकी तरफ ही रहेगा, चांदी, सोना भी बढ़ेगा :

सितम्बर १९५७ ई०

सितम्बरमासके प्रारम्भमें सूर्य सिंहराशिमें प्रसार कर रहे हैं। तथा शुक्र राहु तुलामें इन योगगोंसे दुतरफी घटाबढ़ी होगी। ता० १२ सितम्बरसे १६ सितम्बरके बीच एक मन्दीका झटका जनरल बाजारोंमें आ सकता है और यहांसे फिर सू० गु० मं० तीनों ग्रह कन्या राशिमें इकट्ठे होते हैं, तथा गुरु ग्रह अस्त होता है, सो बड़ी भारी घटाबढ़ी इस पीरियडमें हो सकती है। प्रत्येक बाजारमें सुर्खी आवेगी। चांदी, सोना, शेयर, तेलवाना, नाज, रुई, कपास, गुड़, गुवार, मटरा आदि सब बाजारोंमें तेजीका फोर्स बढ़ता जावेगा।

अनुभव सिद्ध व्यापारिक निर्णय

[ज्योतिषरत्न श्री पं० राजाराम जैन सामुद्रिक वेत्ता, सम्पादक—'भविष्यदर्पण']

सभी वस्तुयें आज ६ जुलाईको दिनभर तेज रह कर सायं ५ बजेसे मन्दी होने लगेगी। ७ जुलाई सार्प्पे भोम: से शनिका वेध ६ दिनमें रुई वारदान तेज, अन्य सभी ही वस्तुयें मन्दी होती रहेंगी। ८ जुलाईको शीघ्रगामी बुधका गुरुसे चरण वेध रुई बारदाना कल तक तेज अन्य वस्तुयें मन्दी होंगी। ९ जुलाई सूर्य राहु त्रिकोणसे बम्बई वायदे तेज, सायं शीघ्रगामी कर्के बुधः चांदी सोना अन्नादि तेज, रात्रि को ७-३० बजे अश्लेषायां सितः से शनिका वेध अन्न तेलके बीज गुड़में तेजी, रुई बारदाना सोना मन्दा होगा। १० जुलाई को तेज वस्तुएं बेचना ही उचित है। ११ जुलाई प्रातः पुष्ये बुधः वस्तु मात्र मंदी करेगा। पौने दो बजे विशाखायां राहुका शनिसे चरणवेध आगे धीरे धीरे तेजीकी अच्छी लायन बना सकेगा।

गुरुवारी आषाढ़ी गुरु पूर्णिमाको दिन रात बादल रहे, सूर्य चन्द्रमा न दीखे, साथ ही उत्तर पूर्व पश्चिमका पवन सूर्यास्त कालमें व प्रायः हर समय चले, तो हाईड्रोजन बमके अब तकके उत्पातोंका नाश होगा। कारण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र भी आज है। पूर्वसे दक्षिण पश्चिमोत्तर वायुका घुमाव श्रेष्ठ, विपरीत नेष्ट, वायु शान्त रहना श्रेष्ठ, साथ ही आजका दिन व रात सुखकर प्रतीत हों तो आगे अन्न इसी वर्षमें इतना अधिक उत्पन्न होगा कि गत दो वर्षकी कमीकी भी पूर्ति हो सकेगी, ऐसी पूर्ण आशा है। आग्नेय नैऋत्य वायव्यकी वायु चलना महानेष्ट होता है। ईशानकी वायु चलना अन्नके कोठे भर देगी। नोट करें अब हाईड्रोजन बमके उत्पात होनेकी भी कोई आशा नहीं है। तेलके बीज ११ जुलाई तक प्रायः पड़े भावमें या तेज से रहेंगे। चांदी यदि १ जुलाईको तेज रही तो ६ जुलाई तक तेज, मन्दी रही तो मन्दी होगी। अन्नादि १ से ३ तक तेज, ४ से ११ तक मन्दे होंगे। रातको ८ बजे मार्गी नेपच्यून बाजारकी रंगतको एकदम ही बदल देगा चतुर व्यापारी तेजीकी गली लगावें। १२ जुलाईको वस्तु मात्र तेज, रुई बारदाना सायं ७ बजे सूर्य गुरुका चरणात्मक वेध मन्दी करता रहेगा। कानपुर बारदाना आषाढ़ बन्द या तो ५) ६) मन्दा होगा अन्यथा आगे ९८।।) तक बन जाना सम्भव है। १३ जुलाईको तिथिकी वृद्धि वस्तु मात्रमें ही तेजीका भड़का लावेगी, १४ जुलाईको रविवार धनिष्ठा नक्षत्रमें तेजी बनी रहेगी। १५ जुलाईको शुक्र-राहुका केन्द्र

खुरजा। प्रथम संस्करण-सं० २०१३। मूल्य—पांच रुपये।

'श्रीस्वाध्याय' के चिर-परिचित सुलेखक एवं हमारे सम्मान्य यशस्वी सहयोगी पण्डितप्रवर श्री विशुद्धानन्दजी गौड़ द्वारा लिखित सरल संस्कृतमें निर्मित, राष्ट्रभाषानुवाद भूषित इस ग्रंथको देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ। श्री गौड़ जी पिछले अनेक वर्षोंसे 'विज्ञान-ज्योति' के सम्पादन द्वारा व्यापारी वर्गमें विशेष प्रिय हो रहे हैं। आप शास्त्रीय पाण्डित्यके साथ अनुपम व्यवहार-कुशलता सम्पन्न भी हैं, जो वर्तमान कालके साम्वत्सरिकोंमें विरल ही मिलती है, यही आपकी सफलताका मूल रहस्य भी है। प्रस्तुत ग्रन्थमें आपने शनिके उदयसे आरम्भ कर, सूर्यादि ग्रहोंके उदयास्त युति तथा बलाबल प्रक्रमके अनुसार विश्वा बल एवं वर्षाधिकारी भेदसे तेजी मंदी विषयक अच्छा विवेचन किया है। व्यापारकी सामान्य पारिभाषिक चर्चासे लेकर गहन शास्त्रीय विषय तकका निर्वाह सुन्दर ढंगसे किया है। यद्यपि तेजी मंदी विषयक छोटी बड़ी अनेक पुस्तकें प्रचलित हैं, तथापि इस पुस्तकमें उन सबका समुचित समन्वय हो गया है। पुस्तक छपाई आदिकी दृष्टिसे साधारण है। मूल्य भी कुछ २५० पृष्ठोंकी पुस्तकका पांच रुपये अधिक प्रतीत होता है। यदि ग्रंथ निर्माणकी प्राचीन पण्डितशैलीका मोह कम करके आधुनिक दृष्टिसे कुछ उपयोगी चार्ट्स भी संगृहीत होते तो निस्सन्देह पुस्तककी उपयोगिता बढ़ जाती। इसी प्रकार पुस्तकमें अध्याय या प्रकरणोंके वर्गीकरणका अभाव एवं प्रकरणानुक्रमणिका न होना अत्यन्त खटकने वाली बात है। आशा है, इसके अग्रिम संस्करण एवं द्वितीय खण्डमें श्री पण्डितजी इस ओर ध्यान रखेंगे। प्रूफकी यत्र तत्र कुछ अशुद्धियां भी आगे सम्भवतः दूर हो जायेगी। हमारी कामना है कि श्री गौड़जी अपनी इष्ट सिद्धि वाञ्छित सफलता प्राप्त करें।

'भारतीय कुण्डली विज्ञान'

लेखक—श्री पं० मीठा लाल हिम्मतलाल ओझा, परमहंस संस्कृत पाठशाला ३/४५ लाहौरी टोला, बनारस। प्रकाशक भी लेखक स्वयम्। प्रथम संस्करण—सं० २०११। मूल्य—साढ़े चार रुपया।

इस पुस्तकमें विद्वान् लेखकने कुण्डली-निर्माणके सभी प्रकारोंकी उपयोगी सामग्रीका संकलन किया है। देश विदेशके देशान्तर साधन, पंचाङ्ग भेदसे तत्तत्स्थानीय उदय, अस्त साधन प्रकार, लग्न शोधन, इष्ट शोधन, वर्ष साधन एवं वर्ष सम्बन्धी समस्त गणित प्रक्रियाओंके साधनकी सरल रीतियां इस ग्रंथमें हिन्दी भाषामें सुन्दर ढंगसे दी गई हैं। लिखनेका ढंग भी एकदम आधुनिक एवं पाठकोंके मनको मोहने वाला है। इस अकेली पुस्तकसे साधारण विद्यार्थीसे लेकर चोटीके विद्वानों तकको पर्याप्त उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है। ज्यौतिष विषयकी ऐसी सरल आधुनिक पुस्तकोंकी इस समय बहुत आवश्यकता है। आशा है ओझाजी अपने पाण्डित्यके अनुरूप अगली बार कोई प्रौढ़ कृति हिन्दी संसार को भेंट करेंगे।

त्रैमासिक स्पेशल व्यापार रुख

[श्री पं० गंगाप्रसाद ज्यौतिषाचार्य]

[विद्वान् लेखकका यह लेख हमें बहुत विलम्ब से दिल्लीमें ३ जुलाईको मिला इस कारण तीन मास की दैनिक रुख रुई चांदी सोना अरण्डी मूंगफली आदि पर जो लम्बे लेखके रूपमें थी वह नहीं दी जा सकी केवल सारांश मात्र दे रहे हैं। —सम्पादक]

ता० ११ जुलाईको वायु-परीक्षा, एवं चन्द्र सूर्यके प्रतियोगसे २४ घंटेकी मंदी चांदी, सोना, रुई, अलसी, सरसों, मूंगफली, अरंडामें आवेगी, यह मंदी व्यापारियों को खरीदनेका स्वर्ण अवसर है। इसी दिन विशाखा पर राहुके योगसे ७ दिनमें तेजी आनेका योग है। ता० १२ को खरीद करके ता० १६ को लाभ लेकर बेवान करें और ता० २२ को डबल खरीदें, ता० २८ तक लाभ सामने होगा। ता० २६, ३० की ४८ घंटेकी तेजी हवा बांध देगी, नजराना लगाकर व्यापार करने वाले लाभ उठा सकेंगे, बाकी देखते रह जायेंगे।

अगस्तमें दोतरफा घटबढ़ चलेगी। ता० १ से ५ तक तेजी, ता० ६ से १० तक मंदी, ता० १२ से १६ तक तेजी, ता० १७ से २४ तक मंदी, ता० २६ से ३१ तक तेजीकी लाइनें बनेगी। बराबर ऊँचे भावोंमें बेचो नीचे भावोंमें खरीदो लाभ हो जावेगा। सितम्बरमें इकतरफा मंदी ता०

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

सूर्यका भावस्थफल

[श्री पं० दुर्गादत्त शर्मा B. A. साहित्यरत्न]

यदि सूर्य जन्म कालमें लग्नस्थ हो तो मनुष्य विकल नेत्र वाला, यदि सूर्य मेषराशिमें स्थित होकर लग्नस्थ हो तो तामसिक, सूर्य सिंह राशिका लग्नस्थ हो तो सुन्दर नेत्र वाला किंतु रात्रिमें अंध दृष्टि, सूर्य कर्क राशि गत लग्नस्थ हो तो बुद्बुद् दृष्टि तथा यदि सूर्य वा चन्द्रमा व्ययस्थ हो तो जातक काणां हो। सूर्य प्रायः दक्षिण नेत्रमें विकार उत्पन्न करता है।

जिसके जन्म समय सूर्य लग्नस्थ हो वह विकल, स्वल्प भोजन करने वाला, युद्धमें विजय पाने वाला, नेत्र रोगसे दुखी, भ्रमणशील, स्त्री पुत्र आदिकी ओरसे दुखी आत्मा वाला, अथवा दारहीन एवं कन्याप्रज, पित्त रोगसे पीड़ित शरीर वाला, ईर्ष्यालु, तथा क्रोधी होता है। भौम द्वारा वीक्षित लग्नस्थ निर्बल सूर्य श्वास रोग कारक भी होता है। यदि सूर्य सिंह अथवा मेषका होकर लग्नस्थ हो तो यशस्वी, ज्ञानवान्, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, साहित्य, कविता, चित्रकारी आदि कलाओंका प्रेमी एवं बलवान् होता है, तथा अपनेको प्रसिद्ध करनेकी लालसा वाला यशोभिलाषी होता है। बाल्यावस्थामें पीड़ा, सिरमें चोटकी संभावना, १५वें वर्षकी अवस्थामें अंगपीड़ा, तृतीय वर्षमें ज्वर भय, कर्कका सूर्य नेत्रमें फूलीकी आशंका करता है।

यदि सूर्य धन भावमें स्थित हो तो वह मनुष्य दुर्बल, त्यागी, भाग्यशाली, चतुष्पद जीवोंका सुख पाने वाला कुमित्रों के संसर्गमें रहने वाला, रक्त नेत्र वाला, धातु विशेषके क्रय विक्रयसे धनी, कुटुम्बसे स्त्री निमित्त कलह करने वाला, तथा कृतघ्नी एवं दुखी मनुष्य होता है। १६ वें अथवा २५ वें वर्षमें धन हानि।

जिसके सूर्य तृतीय भावमें हो तो वह मनुष्य प्रतापी सहोदर भाइयोंकी ओरसे दुःखी, तीर्थाटन प्रेमी, मित्रोंका वास्तविक शुभाकांक्षी, धैर्यवान, साहसी, सहनशील पराक्रमी निरोगी, परोपकारी, विख्यात एवं विवेकी होता है। पाप दृष्ट वा युक्त होने पर विष, अग्नि, चर्मरोग, हड्डी टूटने का भय होता है एवं बहिनके वियोगमें दुखी, ५ वें वर्षमें पशु भय, तथा २० वें वर्षमें अर्थ लाभका सूचक है।

जब किसी मनुष्यके चतुर्थभावमें सूर्य स्थित हो तो वह क्रूर स्वभाव वाला हृदय रोगसे पीड़ित, कृतघ्नी, ईर्ष्यालु, दूसरोंकी हानि करने वाला झगड़ालू, मिथ्या भाषण करने वाला, चिन्तित, उद्धत स्वभाव, स्त्रीके वशीभूत रहने वाला होता है। यदि मेष अथवा सिंह राशिका सूर्य चतुर्थ स्थानमें हो तो जातक धनवान्, विजेता, समर प्रधान, राजप्रिय एवं शोभावान् तथा स्वतः सिद्ध अधिकारी होता है। १४ वें वर्षमें विरोध और २२ वें वर्ष में विशेष उन्नतिका द्योतक है। ३२ वें वर्षमें जातक सर्व कार्य योग्य होता है।

सूर्य यदि पंचम भावस्थ हो तो वह चंचल किन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला, प्रवासी, संतानसे संतप्त, एक पुत्र वाला, प्रमादी, बुरे चित्त वाला, दुष्ट कर्म करने वाला, विलासी, ठगी, व्यसनी, अल्प संतान वाला होवे। वक्षस्थलमें यदा-कदा पीड़ा, सट्टा या लाटरी आदिसे लाभकारक, एकान्त प्रेमी, एवं धनवान् मित्रों वाला होता है। स्थिर राशि गत होनेसे प्रथम संतानकी मृत्यु अथवा उस ओरसे दुखी, ७ वें तथा ९ वें वर्षमें पिताको कष्ट।

षष्ठस्थ सूर्य जातकको कामी, शत्रुजित, योगशील, निर्बलपत्नी वाला, यात्रामें क्लेशके भोगने वाला, राजपूज्य, शत्रुरहित, भाई बंधुओंका हित करने वाला, कीर्तिमान् तथा कुछ अभिमानी होता है।

जन्मकालीन सप्तम भावस्थ सूर्य मनुष्यको पीड़ित शरीर वाला, व्यापारमें हानि, अतिप्रकोपी, दुष्ट एवं कर्कशा स्त्री वाला, अनेक शत्रु वाला, एवं कामातुर होता है तथा अच्छे मित्रोंसे धन प्राप्त करने वाला भी होता है।

(क्रमशः)

इस वर्षमें धन उपार्जनका मार्ग बनेगा। चैत्रमें व्यापारिक यात्रा, व्यय अधिक हो। वैशाखमें व्यापार उद्योग मन्दा, मित्र शत्रु बनें। ज्येष्ठमें शरीर पीड़ा, अधिक व्यय, आर्थिक चिन्ता। आषाढ़में स्त्री चिन्ता, मित्रोंसे विरोध तथा लाभ खर्च समान, श्रावणमें यात्रा, लाभ न्यून, व्यय अधिक, भाद्रपदमें व्यापार बढ़े, नौकरीमें बदली, अधिकारियोंसे बैर। आश्विन मासमें व्यय अधिक, आर्थिक तंगी और व्यापारमें हानि। कार्तिकमें उद्योग द्वारा नूतन व्यापारसे लाभ हो। मार्गशीर्षमें उत्तम लाभ, व्यवसाय बढ़े। पौषमें आर्थिक प्रापंचिक चिन्ता, प्रवास। माघमें लाभखर्च समान, कौटुम्बिक चिन्ता तथा शत्रु कष्ट। फाल्गुन और चैत्रमें प्रकृतिमें खराबी, श्रम अधिक करना पड़े, लाभ श्रेष्ठ।

वृश्चिक—वर्षारम्भसे ही आपको शनि बारहवें साढ़े सातीमें चल रहे हैं। वैशाख कृष्णपक्षसे गुरु अष्टममें प्रवेश करेंगे। यह वर्ष आपको बहुत ही अशांतिकारक व्यतीत होगा, अनेक बाधाएं तथा चिन्ताएँ उपस्थित होंगी, इसलिए सावधानी तथा धैर्यसे समय व्यतीत करना लाभ प्रद होगा। चैत्र मासमें आर्थिक चिन्ता अधिक, मित्रोंसे कटुता बढ़े। वैशाखमें व्यय अधिक प्रमाणमें बढ़े। ज्येष्ठ में राज्यसे चिन्ता, शुभ कार्योंमें बाधाएँ उत्पन्न हों। आषाढ़ में प्रवाससे हानि वा व्यय अधिक, व्यापार में परिवर्तन। श्रावणमें धार्मिक व्यय और व्यापारसे लाभ हो। भाद्रपदमें बन्धुओं व मित्रोंसे क्लेश, राजकीय व्यय आश्विन और कार्तिकमें नये कारोबारसे लाभ हो। मार्गशीर्ष और पौषमें व्यापारिक चिन्ताएँ तथा मानसिक कष्ट व कौटुम्बिक क्लेश। माघ फाल्गुनमें व्यापार श्रेष्ठ तथा राज्यपक्षसे लाभ, स्त्री पुत्र चिन्ता। चैत्रमें उद्योगमें वृद्धि और लाभ उत्तम, धार्मिक यात्राओंमें व्यय होगा।

धनुः—वर्षारम्भसे वैशाख कृष्णके आरम्भमें गुरु सप्तम आ रहे हैं और शनिदेव ग्यारहवें चल रहे हैं। यह वर्ष आपको भाग्योन्नतिकारक रहेगा, वर्षके उत्तरार्धमें उत्तम लाभके योग बन रहे हैं। चैत्रसे नया व्यापार कार्यारम्भ होगा, प्रथम दो मास चैत्र और वैशाख मध्यम रहेंगे। ज्येष्ठ में उत्तम लाभ, उद्योग, व्यापारकी बढ़ती हो। आषाढ़में लाभ श्रेष्ठ, कौटुम्बिक खर्च बढ़े। श्रावणमें लाभ श्रेष्ठ किंतु शरीरको कष्टकारक है। भाद्रपदमें मन्दीके व्यापारसे लाभ आय-व्यय बराबर। आश्विन कार्तिक लाभकी दृष्टिसे श्रेष्ठ हैं। मार्गशीर्षमें यात्रा और व्यापारसे लाभ, मार्गशीर्षमें चोरसे हानि, सावधान रहें। पौष और माघ मास लाभके लिए श्रेष्ठ हैं। फाल्गुनमें उन्नति, लाभ श्रेष्ठ, राज्यसे मान प्रतिष्ठा प्राप्त हो, चैत्र कृष्णमें व्यय अधिक हो, यात्रा में कष्ट होवे। इस समयमें व्यावसायिक विषयों पर ध्यान-पूर्ण रूपसे देना चाहिए। यह वर्ष व्यापारसे लाभके लिए उत्तम है।

मकर—इस वर्षमें वर्षारम्भ के वैसाख कृष्णपक्षसे गुरु छठे मानसिक चिन्ताकारक और शनि दसवें नये व्यापार में उन्नतिकारक रहेंगे। किन्तु राहु बारहवें आपको अति-नेष्ट है, इसके द्वारा अधिक व्यय अपमान, स्त्री पुत्रादिकों से कष्ट, मनको सन्ताप, अनेक कारणोंसे धनका व्यय होगा। और अधिक क्रोध उत्पन्न होनेसे आर्थिक हानि होना सम्भव है, इसलिए आप वर्षारम्भके समयसे ही राहुकी शान्ति करें और गोमेद रत्न धारण करें। चैत्र वैसाख मासमें व्यय अधिक होकर राजकीय चिन्ता उत्पन्न होगी। ज्येष्ठ, आषाढ़ में उद्योग द्वारा लाभ तथा उत्साहकी वृद्धि हो। श्रावण, भाद्रपदमें लाभ व्यय बराबर तथा शत्रुओंकी बढ़ती हो। आश्विन और कार्तिक मास अधिक व्ययकारक और स्वास्थ्यके लिए मध्यम है। मार्गशीर्षमें मानप्रतिष्ठा व नये व्यापारसे लाभ हो। पौष माघ मासमें लाभ श्रेष्ठ, व्यापार में तरक्की तथा शत्रुओंसे विजय। फाल्गुन और चैत्र कृष्ण पक्षमें मित्रोंसे हानि, व्यापारकी वृद्धि, यात्रामें कष्ट, स्वजनोंसे मानभंग एवं हानि होना सम्भव है, सावधान कटु वाक्य (वाणी) का प्रयोग न करें।

कुम्भ—वर्षारम्भ के वैशाख कृष्णपक्षसे गुरु पांचवें अतिश्रेष्ठ आ रहे हैं। इनके द्वारा विद्या उन्नति एवं नवीन व्यापार संचालनसे विशेष लाभ होगा। वर्षारम्भसे ही नौवें शनि चालू रहेंगे, इसके द्वारा ईर्षा, द्वेष निकट सम्बन्धियों से कलह हो, और आर्थिक संकट विशेष रूपसे उत्पन्न होगा। मनके विचारोंको सदैव परिवर्तन करता रहेगा। इससे आपका चला हुआ व्यापार बिगड़नेकी सम्भावना है। शनिका दान, पूजन करना लाभदायक होगा। विशेष शुभ फलकारक राहु आपको ग्यारहवें अतिश्रेष्ठ हैं। यह वर्ष के उत्तरार्धमें आपकी आर्थिक समस्याओंकी पूर्ति कर देगा,

यह ग्रह मशीनरी एजेन्सियां, चमड़ेके कारोबारसे विशेष लाभ कराता है, इसलिए इन उद्योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चैत्र और बैसाखमें मित्रोंकी सहायता प्राप्त होकर नयें व्यापारमें सहायता प्राप्त होगी। ज्येष्ठ और आषाढ़में व्यापार यात्रासे लाभ संग्रह किए हुए मालमें लाभ, स्त्री चिन्ता, व्यय अधिक। श्रावण और भाद्रपदमें स्वास्थ्य की सम्भालें और धैर्य टूटने न दें। आश्विन और कार्तिक मास व्यापारसे उत्तम लाभकारी हैं, बराबरके कार्यकर्त्ताओं से सावधान रहें। मार्गशीर्षमें मानप्रतिष्ठा व पद बढे। पौष माघमें लाभ श्रेष्ठ, व्यापारमें उन्नति, राजकार्य और शत्रुओंसे विजय होवे। फाल्गुन और चैत्र कृष्णपक्षमें नये व्यापारसे लाभ,मित्रोंसे भेंट, स्त्री सन्तानका सुख मिले।

मीन—वर्षारम्भसे बैशाख कृष्णपक्षसे ही चतुर्थ गुरु आ रहे हैं यह आपकी आर्थिक समस्याको बढ़ादेंगे। धार्मिक भावनाओंको छुटावेंगे। व्यापार व नौकरीमें शत्रु हानि पहुंचानेकी चेष्टा करेंगे। इसलिए आपको वर्षारम्भसे ही गुरुवार का व्रत प्रारम्भ कर देना चाहिए। वर्षारम्भसे ही शनिदेव आठवीं ढय्यामें चल रहे हैं। यह आपके चित्तमें चिन्ता और आर्थिक कष्ट, उद्योग कार्योंमें हानिकारक रहेंगे, और घरेलू विषयोंसे तंग आकर आपके चित्तको दूर ले जानेका प्रयत्न करेंगे, किन्तु स्मरण रखना इस वर्ष स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही साध्य होंगे। चैत्र और बैशाखमें मान प्रतिष्ठा और कीर्ति बढ़ेगी। ज्येष्ठ और आषाढ़में कौटुम्बिक चिंताएं दुःखित करेंगी, किन्तु स्वल्प। श्रावण और भाद्रपदमें स्वास्थ्यकी खराबी रहेगी और स्त्री संतान कष्ट भी होगा, किंतु स्वल्प रहे। आश्विन और कार्तिक मासमें लाभ उत्तम होते हुए भी व्यय अधिक रहे, सावधानी। यात्रामें हानिका योग है। मार्गशीर्षमें स्वास्थ्यमें श्लेष्मा जुकाम आदि होवे, और व्यापार मन्दा चले। पौष और माघमें व्यापारमें क्रय-विक्रय बढ़े, नौकरोंसे धोखा होना सम्भव है, सावधान रहें। फाल्गुन और चैत्र कृष्णपक्षमें लाभ श्रेष्ठ, कौटुम्बिक व धार्मिक व्यय बढ़े। मित्रों व भागीदारोंमें वैमनस्य उत्पन्न होवे। यात्रामें विशेष बाधा उत्पन्न होगी। सावधान समय देखकर यात्रा करें और मनका भेद किसीको न देवें।

['श्रीविश्वविजय-पंचाँग' से]

सं० २०११ विक्रमी सन् १९५४-५५ ई० का

"श्रीविश्वविजय-पञ्चांग"

[सम्पादक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

इस पञ्चाङ्गमें सदाकी भांति अन्यान्य अनेक विशेषतायें तो हैं ही, साथ ही देशमें कांग्रेस, साम्यवादी, समाजवादी और संघ, सभा आदि की प्रगति कैसी रहेगी ? तीसरा विश्वयुद्ध कब होगा ? पाकिस्तान नेपाल तिब्बतका भविष्य कैसा है ? भारतमें व्यापार और वर्षाकी स्थिति कैसी रहेगी ? सब प्रान्तोंमें फसल कैसी होगी ? आर्थिक राजनैतिक स्थिति कैसी रहेगी ? राष्ट्रके कर्णधार नेताओंका भविष्य कैसा है ? रूस अमेरिका इंगलैण्ड और एशियाके अन्य छोटे बड़े राष्ट्रोंमें कैसा घटनाचक्र घूमेगा ? इत्यादि प्रश्नोंका शास्त्रीय आधार पर विवेचनात्मक उत्तर लिखा गया है। काश्मीरका भविष्य, बारह राशियोंका वार्षिक राशिफल, दैनिक स्पष्टग्रह, संसार भरमें होने वाले ग्रहणोंका विवेचन तथा सभी राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक और व्यापारिक हलचलोंके सम्बन्धमें इतना शुद्ध प्रामाणिक भविष्य आपको अन्य किसी पचांग में नहीं मिलेगा। अबकी बार विशेषता यह है कि इसमें दुःख दरिद्रता निवृत्ति, लक्ष्मी प्राप्ति, पत्निप्राप्ति, कन्याको योग्यवर प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, जीविका प्राप्ति, विद्याप्राप्ति, और रोगनिवृत्ति के लिए अनुभूत सिद्ध मंत्र और उनकी प्रयोग विधि भी दी गई है। १०४ पृष्ठ के इस विशाल पंचांगका मूल्य ॥।=) चौदह आना। डाक रजिस्ट्री खर्च ॥≡) अलग। थोक व्यापारियों और बुकसेलरोंको एक सौ या अधिक पंचांग मंगवाने पर भरपूर कमीशन मिलेगा। वी० पी० से एक पंचांग १॥=) में पड़ेगा।

प्रकाशक—**गोयल ब्रादर्स थोक पुस्तकालय, दरीबा कलां, दिल्ली।**

❋ अनुभव सिद्ध जनरल चांस ❋

[लेखकः—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन सामुद्रिकवेत्ता]

'श्रीस्वाध्यायका' वसन्ताङ्क चैत्र शुक्ला १० से प्रारम्भ होगा, पाठकोंको इस बार कुछ अधिक परिश्रमपूर्वक लिखा जा रहा है, आशा है अवश्य ही सन्तुष्ट होंगे। आने वाले तीन मासमें चांदी १७५) या १८१) तक, सोना ६६॥) सरसों २७) मटर १३) या १५) अरहर १५) ग्वार ११) गुड़ २१) तक अनुमानतः हो सकेंगे। पीछे भयानकतम मन्दा अगले अंकमें छापा जायेगा। कमसे कम रुपयेमें दश आने ही निश्चित रूपसे रह जावेंगे। चैत्रमें नवदुर्गा तक मन्दी रहकर बाजारमें तेजीका नया जोश आवेगा। कारण मेष संक्रान्ति मंगलवार और अग्निमंडलके नक्षत्र मघा में लगेगी। सूर्य शनिसे संदृष्ट (प्रतियोग) शनि वक्री और गुरु शीघ्रगामी गतवर्ष वाला ही योग है, तथा मिथुने गुरु १६ अप्रैलको १२।५५ दोपहरको बादल वर्षाके साथ वस्तुमात्रमें तेजीका जोश लावेगा। सम्वत २०१० भाद्रपद कृष्ण ६।७ रविवार तदनुसार ३० अगस्त सन् १९५३ के भरोसे बिलकुल न रहें,, यहां अवश्य ही तेजी ही आवेगी। मेष संक्रान्ति गत संक्रान्तिसे तीसरे वार चौथे नक्षत्र और रात्रिमें लगी है, इसका फल यह है—

तुर्येधिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके।
संक्रांतिर्निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्॥

अर्थात् अन्न, तिलहन, गुड़में श्रेष्ठ मन्दा लावेगी, किन्तु इसका फल उत्तरार्ध अर्थात् पिछले १५ दिनमें होगा। अग्निमण्डलके नक्षत्र मघा और मंगलवारमें लगनेसे सर्व धातु चांदी सोना तांबा जस्ता (अलौह धातु) में श्रेष्ठ तेजी होगी। शास्त्रोक्त फल निम्न है—

अग्निमण्डल नक्षत्रे यदा संक्रमते रविः।
सहितां भौमवारेण सस्पृहा धातुजातयः॥

पौषी पूर्णिमाको ग्रहण था अतः ग्रहणके कारण चौथे मास अर्थात् वैशाख मासमें चांदी जस्तामें भी श्रेष्ठ तेजी आवेगी।

मंगलवारको मेष संक्रांति साथ ही मंगल राहुसे युक्त शनिसे संदृष्ट (मेष संक्रान्ति जिस वार की हो वही वर्षका मन्त्री होता है) अतः भारतवर्षके मन्त्री (सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, दिल्ली) लोगोंको महानेष्ट सिद्ध होगा। मंगल १० अक्टूबर सन ५४ तक इसी राशिमें राहुके साथ रहेगा, ५ मईको एक नक्षत्र पर तथा १६ सितम्बर तक सर्पाकार राहुके मुखकी और बढ़कर १६-९-५४ को राहुका ग्रास ही बन जायेगा। अतः मन्त्री महोदय सावधान रहें। साथ ही धनुः मिथुन कन्या मकर कर्क वृष राशि वाले व्यापारी व्यक्ति, विशेषकर सभी मनुष्यों को १० अक्टूबर तक समय नेष्ट रहेगा। वैशाख शुदी ४ गुरुवारी रुई रेशम कपड़ा बारदाना नारियल की जटा रस्सीमें अच्छी तेजी आषाढ़ मास तक निश्चित रूप से लावेगी। परीक्षित प्राचीन योग है, सदुपयोग करें। वैशाख शुदि १३ शनिवारी पीपल शक्कर गुड़ खांड सेंधानमक या नमक क्षार पदार्थ पान लालचन्दन लालमिर्चमें श्रेष्ठ तेजी आयेगा। रवि राजा मंगल मंत्री सभी वस्तुओंको तेजीमें ही रखेंगे। यह छोटे योग उपर्युक्त फलको बढ़ाते ही रहेंगे।

वैशाख मासके प्रथम सप्ताहमें वर्षा होगी, किन्तु इस समयकी बूंदाबांदीको अशुभ नहीं समझा जाता। २५ अप्रैलको बढ़ी हुई वस्तुयें एकदम मन्दी होंगी। २७ अप्रैलको सूर्य शनिकी प्रतियुति १३ अप्रैलसे विपरीत बाजार चला देगी। वैशाख वदी चतुर्दशीका क्षय रुई रेशम बारदाना शेयर्समें श्रेष्ठ मन्दा कर देगी, किन्तु अन्य सभी वस्तुयें तेज भी रह सकेंगी। अमावस रविवारी तेजीकारक। शुक्ल १ को सभी वस्तुयें बेचना, कारण शुक्ला २ ता० ४ मईको प्लूटो मार्गी और ४५ मुहूर्त्ता चन्द्रदर्शन मन्दा वस्तु मात्रमें लायेगा। गुड़ एकदम मन्दा होगा, इससे पहले २९ अप्रैलको भी मन्दा होगा। अक्षय तीज शुभवारी बुधवारी एक पाद रोहिणी (ओछी बड़ी थी) युक्त होनेसे साधारण मन्दी लावेगी। १० मईको ऐसा योग लगा है जो कि १४ मई तक सरसों गेहूं जौमें श्रेष्ठ मन्दी लावेगा, किन्तु ग्वार दाल अन्न तेज होंगे। १४ मईको प्रत्येक वस्तुमें भयानक परिवर्तन होगा, चांदी सोना लुढ़कने लगेंगे। १७ मईको भौम वक्री अतः एक दिन पहलेसे ही नजराना लगायें, यहां बढ़ी

(शेष पृष्ठ ६३-६४पर)

तीन मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

[लेखक श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

ता० १० अप्रेल से १८ अप्रेल तक

बाजारमें गिरावट आयगी। सोना २) ३), चांदी ४) ५), रुई २५) ३०), काली मिर्च ३०) ४०), लाल रंग हेंड्रो १), सरसों, तेलहन, जूट, ५) ६), बम्बई १०) १२) आयरनमें ३) ४), की मंदी आयेगी। खाद्य पदार्थों, सोना, चांदी, कपासका इस सप्ताहमें संग्रह लाभ दायक रहेगा।

ता० १९ अप्रेल से ३० अप्रेल तक

इस सप्ताह भाव कुछ ऊंचे चढ़ेंगे। सोनाका भाव चढ़ेगा ६) ७), चांदी १०) १२), रेड़ी ८) १०), कालीमिर्च ७०) ८०), हेंड्रो १), तेलहन ३) ४), बम्बई २५) ३०), आयरन ४) ५), खनिज ५) ७), तेजीसे लाभ उठाने के लिए सोना, चांदी, रुई, चना, मसूर, अरहर में पन्द्रह दिनकी तेजी की 'गली' लगानी चाहिए।

ता० १ मई से ७ मई तक

ता० १ और २ को मंदा और ३ से ७ तक तेजी रहेगी। सोना ३) ४) तेजी, चांदी ६) ७), रुई १०) १५) कालीमिर्च १८) २०), लालरंग हेड्रो ॥।), बम्बई २०) २५), आयरन ३) ४), तेलहन, ३) ४), सरसों २) ३), मूंग, तिल, अरहर, मसूर मटर १) तेज होगा।

ता० ८ मई से १७ मई तक

ता० ८ से १५ मई तक मंदी रहेगी और १६ तथा १७ को तेजी रहेगी। गिरावट सोनामें २) ३), चांदी ५) ६), रुई १५) २०), तेलहन १), मटर, ग्वार ॥।), बम्बई ८) १०), आयरन १) १॥), ता० १० और १४ मई से सावधान रहो। ये तेजी के दिन हैं। भाव चढ़ने पर गली का प्रयोग करो। १३ से १७ तक बाजारमें उतार चढ़ाव आयगा।

ता० १८ मई से ३१ मई तक

भावोंमें एक तरफा तेजी आयगी। तेजी – सोना ५) ६), चांदी १०) १२), कपास २५) ३०), कालीमिर्च १५) २०), मटर, ग्वार १) २), तेलहन २) ३), चना २) ३), बम्बई २०) २५) आयरन ३) ४), ता० २४ और २७ को खरीदना न भूलिए। क्योंकि ये दिन भावमें उतार आनेके हैं। ता० १२ और १९ को १५ दिनोंके वास्ते गली लगाइये। मटर और ग्वारमें खास चांस है। मटरमें २) ३), और ग्वार में १) १॥) वृद्धिका मोका है। ता० १८ को बाजार खुलते खरीदो या गली लगाओ लाभ पक्का है।

जून

ता० १ जून से ८ जून तक

बाजारमें उतार-चढ़ाव रहेगा, ता० १, ३, ४ और ८ जून को तेजी रहेगी और शेष दिनोंमें मन्दी। प्रत्येक चीज में १) का चढ़ाव-उतार रहेगा।

ता० ९ जून से १६ जून तक

बाजारमें मन्दी रहेगी। सोना अब उतरेगा, ३) ४), चांदी ८) १०), रुई २०) २५), कालीमिर्च २५) ३०), रेंडी ४) ५) तेलहन १) २), लालरंग हेड्रो ॥) ॥।), बम्बई १५) १६), आयरन २) ३), खनिज १) २), यह मंदी ज्यादा दिन न रहेगी इसलिए स्टाक रोके रखो। बादमें अच्छा लाभ होगा।

ता० १७ जून से ३० जून तक

बाजारमें एकतरफा तेजी रहेगी। भाव तेज सोना ४) ५) चांदी ८) १०), रुई १०) १५), तेलहन २) ३) कालीमिर्च १०) १५), जूट ५) ६), बम्बई ८) १०), आयरन २) ३), ता० १९, २१, २४, और २६ जून को गली लगाकर काम करिये या खरीद कीजिये, क्योंकि ये दिन भाव गिरनेके हैं।

जुलाई

ता० १ जुलाई से १५ जुलाई तक

एक तरफा मन्दी रहेगी। गिरावट सोना ३) ४), चांदी ७) ८), रुई १५) २०), तेलहन २) २॥), कालीमिर्च २०) २५), लाल रंग हेड्रो ॥=), बम्बई १३) १५) आयरन ३) ४), ता० २ को २ बजे बेचो और ८ जुलाई को बाजार बन्द होने के समय मुनाफा ले लो। ता० ९ से १२ तक तेजी की प्रतिक्रिया रहेगी। ऊंचे रेट पर दुगनेमें बेच दो। ता० १५ तक इसका लाभ आपको मिलेगा। २ और ३ जुलाईको १५ दिनके लिए गली लगाकर व्यापार करें।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'से]

जुलाई १९५७ ई०

ता० ६ शनिवार—श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस।
७ रविवार—देवशयनी एकादशीव्रत, चातुर्मास [प्रारम्भ।
९ मंगलवार—भौम प्रदोष व्रत, बकरीद।
११ गुरुवार—श्री गुरु पूर्णिमा, सत्यव्रत, वायुपरीक्षा।
१५ सोमवार—श्रीगणेश चौथव्रत चंद्रोदय २१।११।
१६ मंगलवार—कर्क संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल स्टे० टा० १२।५८ पर्यन्त।
२३ मंगलवार—कामिका एकादशी व्रत।
२४ बुधवार—प्रदोषव्रत।
२७ शनिवार—हरियाली अमा. शनैश्चरी ३०।
२८ रविवार—चन्द्रदर्शन, नक्तव्रतारम्भ।
२९ सोमवार—संधारा श्रावणी हीज, हिजरी सन् [१३७७ प्रारम्भ।
३१ बुधवार—नागपंचमी।

अगस्त १९५७ ई०

ता० २ शुक्रवार—श्री गो० तुलसीदास निर्वाण दिन।
३ शनिवार—मेला श्रीनयनादेवी, चिन्त्यपूर्णी।
६ मंगलवार—पुत्रदा एकादशीव्रत।
७ बुधवार—प्रदोषव्रत, ताजिया।
९ शुक्रवार—सत्यव्रत।
१० शनिवार—रक्षाबन्धन, ऋषितर्पण श्रावणी १५ श्रीअमरनाथ (काश्मीर) यात्रा।
१३ मंगलवार—कज्जलीतीज।
१४ बुधवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चं० उ० २०।५९।
१५ गुरुवार—भारतस्वातन्त्र्योत्सव (वर्ष ११ प्रा०)।
१६ शुक्रवार—सिंह संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकला स्टे० टा० १५।२२ उ० चन्द्र ६ हल ६।
१८ रविवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत चन्द्रोदय २३।३५
१९ सोमवार—गोकुलाष्टमी, गुग्गानवमी।
२२ गुरुवार—अजा एकादशीव्रत जैन पर्यूषणारम्भ।
२३ शुक्रवार—प्रदोषव्रत।
२५ रविवार—पिठोरीअमा कुशोत्पाटिनी ३० सतीपूजन
२७ मंगलवार—चन्द्रदर्शन, हरितालिका ३ व्र०
२८ बुधवार—श्रीगणेश (पत्थर) चौथ चन्द्रदर्शन-निषिद्ध, चन्द्रास्त स्टे० टा० २०।५९।
२९ गुरुवार—ऋषि ५ अगस्त्युदय, जैन संवत्सरी।
३१ शनिवार—सूतड़ा ७ मुक्ताभरणसप्तमी।

सितम्बर १९५७ ई०

ता० १ रविवार—श्री दधीचि जयन्ती।
२ सोमवार—श्रीचन्द्रनवमी (उदासीनसम्प्रदाय)
४ बुधवार—पद्मा (जलझूलनी) एकाशीव्रत।
५ गुरुवार—वामन १२ जयन्ती मेला अम्बाला [पटियाला।
६ शुक्रवार—प्रदोषव्रत।
७ शनिवार—अनन्त चतुर्दशीव्रत।
८ रविवार—प्रौष्ठपदीश्राद्ध, सत्यव्रत।
९ सोमवार—महालयश्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारम्भ।
१२ गुरुवार—श्रीगणेश चौथव्रत चन्द्रोदय २०।७
१६ सोमवार—कन्या संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल [१५।१४ उ०।
२० शुक्रवार—इन्दिरा एकादशीव्रत।
२१ शनिवार—शनिप्रदोषव्रत।
२३ सोमवार—सोमवती अमा० महालय (श्राद्धपक्ष) समाप्ति, मेला फल्गु।
२४ मंगलवार—नवरात्रारम्भ, घटस्थापन।
२५ बुधवार—चन्द्रदर्शन।
२७ शुक्रवार—ललितापंचमी।
३० सोमवार—श्री सरस्वती-आवाहन, जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ।

अक्टूबर १९५७ ई०

ता० १ मंगलवार—श्रीदुर्गाष्टमी, सरस्वती पूजन, मेला श्रीज्वालामुखी।
२ बुधवार—महा ९, नवरात्र-समाप्ति, सरस्वती बलिदान, श्रीमहात्मा गांधी जयन्ती।
३ गुरुवार—विजया १० मेला दशहरा, श्रीसरस्वती विसर्जन राजचिन्ह पूजा, श्रीमध्वाचार्य जयन्ती।